Machine Translated by Google

50TH ANNIVERSARY EDITION

The Art of Loving

Erich Fromm

FOREWORD BY PETER D. KRAMER

HARPERPERENNIAL MODERNCLASSICS

P.S. INSIGHTS, INTERVIEWS & MORE...

Machine Translated by Google

अंतर्वस्तु

विश्व परिप्रेक्ष्य

प्रस्तावना

I. क्या प्रेम एक कला है?

II. प्रेम का सिद्धांत

1. प्रेम, मानव अस्तित्व की समस्या का उत्तर माता-पिता और बच्चे के बीच प्रेम प्रेम की वस्तुएँ a. भाईचारे
2. का प्रेम b. मातृ प्रेम c. कामुक प्रेम d. आत्म-प्रेम e. ईश्वर का
3. प्रेम

III. समकालीन पश्चिमी समाज में प्रेम और उसका विघटन IV. प्रेम का अभ्यास

Machine Translated by Google

विश्व परिप्रेक्ष्य

वर्ल्ड पर्सपेक्टिव्स, वास्तविकता की एक नई दृष्टि से देखे गए ब्रह्मांड से उत्पन्न मनुष्य की अवधारणा को समर्पित है। इसका उद्देश्य आज के सबसे जागरूक और ज़िम्मेदार दिमागों द्वारा लिखी गई छोटी किताबें प्रस्तुत करना है।

प्रत्येक खंड प्रत्येक लेखक के विचार और विश्वास का प्रतिनिधित्व करता है और मनुष्य के समग्र अनुभव पर बदलते धार्मिक, वैज्ञानिक, कलात्मक, राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक प्रभावों के अंतर्संबंध को प्रस्तुत करता है।

यह श्रृंखला मानव प्रयास के उन सभी पहलुओं की पुनः जाँच के लिए प्रतिबद्ध है जिनके बारे में विशेषज्ञ को यह विश्वास दिलाया गया था कि वह उन्हें सुरक्षित रूप से छोड़ सकता है। यह हमारे बढ़ते हुए विश्व युग में मानव जीवन पर प्रभाव डालने वाली वर्तमान और भूतकालीन घटनाओं की व्याख्या करती है और यह परिकल्पना करती है कि जब मनुष्य अपनी अदम्य आंतरिक आवश्यकता के कारण अपने भीतर सबसे श्रेष्ठ की खोज के लिए प्रेरित होता है, तो वह क्या प्राप्त कर सकता है। इसका उद्देश्य विश्व और मानव विकास के संदर्भ में नए दृष्टिकोण प्रस्तुत करना है, साथ ही सार्वभौमिकता और व्यक्तित्व, गतिशीलता और रूप, स्वतंत्रता और नियति के बीच घनिष्ठ संबंध को उजागर करने से इनकार करना है। प्रत्येक लेखक अपने विषय को विश्व समुदाय के व्यापक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करता है, न कि केवल यहूदी-ईसाई, पश्चिमी या पूर्वी दृष्टिकोण से।

इन पुस्तकों में कुछ ऐसे मूलभूत प्रश्नों पर विचार किया गया है जिन पर हमारे समय के आध्यात्मिक, नैतिक और राजनीतिक विश्व संकट के संदर्भ में, और लोगों की रचनात्मक ऊर्जा को उन्मुक्त करने वाली तकनीक के आलोक में, बहुत कम विचार किया गया है। हमारे लेखक इस बढ़ते हुए बोध पर विचार करते हैं कि आत्मा और प्रकृति अलग-अलग नहीं हैं; आंतरिक सत्ता को बाहरी वास्तविकता के साथ समझने और एकाकार करने के साधन के रूप में अंतर्ज्ञान और तर्क को अपना महत्व पुनः प्राप्त करना होगा।

विश्व परिप्रेक्ष्य यह दर्शाने का प्रयास करता है कि संपूर्णता, एकता और जीव की अवधारणा, पदार्थ और ऊर्जा की अवधारणा से कहीं अधिक उच्चतर और ठोस है। इस प्रकार, ऐसा प्रतीत होता है कि विज्ञान को अंततः पदार्थ और ऊर्जा के भौतिक जगत की व्याख्या जीव की जैविक अवधारणा के संदर्भ में करने का लक्ष्य रखना चाहिए। एक विस्तृत

Machine Translated by Google

इस श्रृंखला में जीवन, जीव विज्ञान के अर्थ को उस रूप में नहीं, जैसा कि प्रयोगशाला की परखनली में प्रकट होता है, बल्कि उस रूप में, जैसा कि जीवन के जीव के भीतर अनुभव किया जाता है, समझाने का प्रयास किया गया है। क्योंकि जीवन का सिद्धांत उस तनाव में निहित है जो आत्मा को पदार्थ के क्षेत्र से जोड़ता है। जीवन का तत्व प्रकृति की बनावट में ही प्रमुख है, इस प्रकार जीवन, जीव विज्ञान, को एक पारलौकिक विज्ञान बनाता है। जीवन के नियमों की उत्पत्ति उनके मात्र भौतिक अभिव्यक्तियों से परे है और हमें उनके आध्यात्मिक स्रोत पर विचार करने के लिए बाध्य करती है। वास्तव में, वैचारिक ढाँचे के विस्तार ने न केवल ज्ञान की संबंधित शाखाओं के भीतर व्यवस्था को बहाल करने का काम किया है, बल्कि ज्ञान के स्पष्टतः पृथक क्षेत्रों में अनुभव के विश्लेषण और संश्लेषण के संबंध में मनुष्य की स्थिति में समानताओं को भी उजागर किया है, जो जीवन के अर्थ के एक और भी व्यापक वस्तुनिष्ठ विवरण की संभावना का सुझाव देते हैं।

इन पुस्तकों में दिखाया गया है कि ज्ञान अब मनुष्य और प्रकृति को विपरीत शक्तियों के रूप में हेरफेर करने या आँकड़ों को मात्र सांख्यिकीय क्रम में सीमित करने में नहीं है, बल्कि यह मानवजाति को भय की विनाशकारी शक्ति से मुक्त करने का एक साधन है, जो मानव इच्छाशक्ति के पुनर्वास और मानव व्यक्तित्व में आस्था और विश्वास के पुनर्जन्म के लक्ष्य की ओर मार्ग दिखाता है। प्रकाशित कृतियाँ यह भी प्रकट करने का प्रयास करती हैं कि जैसे-जैसे पूर्व और पश्चिम, दोनों में गरिमा, अखंडता और आत्म-साक्षात्कार की पुनः प्राप्ति की इच्छा प्रबल होती जा रही है, प्रतिमानों, प्रणालियों और प्राधिकारों की माँग कम होती जा रही है, जो मनुष्य के अविभाज्य अधिकार हैं और जो अब तर्कसंगत अनुभव के प्रकाश में सचेत उद्देश्य के माध्यम से परिवर्तन का मार्गदर्शन कर सकते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों की पड़ताल अंतर्राष्ट्रीय समझ की समस्याओं के साथ-साथ पूर्वाग्रहों और उसके परिणामस्वरूप उत्पन्न तनावों और विरोधों से जुड़ी समस्याओं से भी संबंधित है। हमारे विश्व युग की बढ़ती हुई धारणा और ज़िम्मेदारी इस नई वास्तविकता की ओर इशारा करती है कि व्यक्ति और सामूहिक व्यक्ति एक-दूसरे के पूरक और एकीकृत हैं; सत्य और मानवीय समग्रता के अधिकार को पुनः प्राप्त करने की सार्वभौमिक इच्छा ने दक्षिणपंथी और वामपंथी, दोनों ही अधिनायकवाद की जकड़न को हिला दिया है।

अंततः मानवजाति अपना भरोसा सर्वहारा अधिनायकवाद में नहीं, धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद में नहीं, क्योंकि दोनों ने ही इतिहास के आध्यात्मिक संपदा अधिकार के साथ विश्वासघात किया है, बल्कि संस्कारात्मक भाईचारे और ज्ञान की एकता में रख सकती है। इस नई चेतना ने मानव का विस्तार किया है।

Machine Translated by Google

हर संकीर्णतावाद से परे क्षितिज, और मानव विचार में एक क्रांति जो प्राचीन यूनानियों के बीच तर्क की संप्रभुता की मूल धारणा के बराबर है; हिब्रू पैगम्बरों द्वारा व्यक्त नैतिक विवेक की महान चमक के अनुरूप; ईसाई धर्म के मौलिक कथनों के अनुरूप; या एक नए वैज्ञानिक युग की शुरुआत, गतिकी के विज्ञान का युग, जिसकी प्रयोगात्मक नींव पुनर्जागरण में गैलीलियो द्वारा रखी गई थी।

इस श्रृंखला का एक महत्वपूर्ण प्रयास लोकतंत्र, स्वतंत्रता, न्याय, प्रेम, शांति, भाईचारा और ईश्वर जैसे शब्दों के आज दिए जाने वाले विरोधाभासी अर्थों और अनुप्रयोगों की पुनः जाँच करना है। इस तरह के अन्वेषणों का उद्देश्य राष्ट्र, जाति या संस्कृति के संदर्भ में नहीं, बल्कि ईश्वर, स्वयं, अपने साथी मनुष्यों और ब्रह्मांड के साथ मनुष्य के संबंध के संदर्भ में एक वास्तविक विश्व इतिहास की नींव रखने का मार्ग प्रशस्त करना है, जो तात्कालिक स्वार्थ से परे है। क्योंकि विश्व युग का अर्थ मनुष्य की आशाओं और सपनों का सम्मान करना है जो सभी लोगों के मूल मूल्यों की गहरी समझ की ओर ले जाते हैं।

आज पूर्व और पश्चिम में मनुष्य यह अनुभव कर रहे हैं कि वे किसी भी विभेदीकरण से परे, विचारों और सिद्धांतों में किसी भी मात्र सहमति से कहीं अधिक मौलिक एकता से बंधे हुए हैं। वे यह जानने लगे हैं कि सभी मनुष्यों की मूल इच्छाएँ और प्रवृत्तियाँ एक जैसी होती हैं; कि मनुष्य का मनुष्य पर प्रभुत्व अब ईश्वर या प्रकृति की किसी भी अपील से उचित नहीं ठहराया जा सकता; और ऐसी चेतना आध्यात्मिक और नैतिक क्रांति, उस महान भूकम्पीय उथल-पुथल का फल है, जिससे मानवता अभी गुज़र रही है।

विश्व परिप्रेक्ष्य की योजना मनुष्य के अर्थ में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए बनाई गई है, जो न केवल इतिहास द्वारा निर्धारित होता है, बल्कि इतिहास को निर्धारित भी करता है।

इतिहास को न केवल इस ग्रह पर मानव जीवन से संबंधित समझा जाना चाहिए, बल्कि इसमें ऐसे ब्रह्मांडीय प्रभाव भी शामिल होने चाहिए जो हमारे मानव संसार में व्याप्त हैं।

यह पीढ़ी यह जान रही है कि इतिहास आधुनिक सभ्यता के सामाजिक आशावाद के अनुरूप नहीं है और मानव समुदायों का संगठन तथा न्याय, स्वतंत्रता और शांति की स्थापना केवल बौद्धिक उपलब्धियां ही नहीं हैं, बल्कि आध्यात्मिक और नैतिक उपलब्धियां भी हैं, जो मानव व्यक्तित्व की संपूर्णता को संजोने की मांग करती हैं।

Machine Translated by Google

यह मनुष्य के लिए एक अंतहीन चुनौती है, जो अर्थहीनता और पीड़ा के रसातल से निकलकर, अपने जीवन की समग्रता में नवीनीकृत और भरपूर होने की चुनौती है। "क्योंकि जैसी सोच होती है, वैसा ही व्यक्ति बन जाता है, और इसीलिए सोच को शुद्ध और रूपांतरित किया जाना चाहिए, क्योंकि अगर वह सत्य पर केंद्रित होती, जैसा कि अब इंद्रियों द्वारा बोधगम्य वस्तुओं पर केंद्रित है, तो कौन अपने बंधन से मुक्त नहीं होगा।" *

* मदित्री उपनिषद 6.34.4.6,

आज मानवजाति में मात्रात्मक, अनाम जन संस्कृति की बाँझपन और खतरे के प्रति एक प्रतिरोध शक्ति है, एक नई, यद्यपि कभी-कभी अगोचर, आध्यात्मिक भावना है जो प्रत्येक मानव व्यक्ति की पवित्रता और संस्कृतियों की बहुलता के प्रति सम्मान के आधार पर विश्व एकता की ओर अभिसरण करती है।

इस बात के प्रति जागरूकता बढ़ रही है कि समानता और न्याय का मूल्यांकन केवल संख्यात्मक दृष्टि से नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि वास्तविकता में वे आनुपातिक और अनुरूप हैं।

हम उस युग के कगार पर खड़े हैं जिसमें मानव जीवन नए रूपों को साकार करने के लिए आगे बढ़ रहा है। मनुष्य और प्रकृति, समय और स्थान, स्वतंत्रता और सुरक्षा के झूठे पृथक्करण को स्वीकार किया जा रहा है और हम मनुष्य की जैविक एकता और इतिहास के एक नए दृष्टिकोण के सामने हैं जो गुणवत्ता की समृद्धि और विविधता तथा अब तक अभूतपूर्व दायरे की भव्यता प्रदान करता है। मानव आत्मा के संचित ज्ञान को विश्व युग की नई वास्तविकता से जोड़ते हुए, उसके विचार और विश्वास को अभिव्यक्त करते हुए, विश्व परिप्रेक्ष्य समाज में आशा के पुनर्जागरण और मनुष्य के अपने भाग्य के निर्णय पर गर्व को प्रोत्साहित करने का प्रयास करता है।

ज्ञान के विशाल विस्तार ने चेतना के ह्रास को जन्म दिया है, जिसका कारण विज्ञान की कुछ आधुनिक व्याख्याओं के कारण, सत्य के सीमित विवरणों को ही पूर्ण सत्य मान लेने की प्रवृत्ति है। विज्ञान की विजयी प्रगति, जो उप-परमाणु जगत से संबंधित नई वास्तविकताओं में परिणत हुई और कार्य-कारण तथा एकरूपता की पारंपरिक मान्यताओं को ध्वस्त कर दिया, मनुष्य के अपने आध्यात्मिक और नैतिक मूल्य तथा ब्रह्मांडीय योजना में उसके अपने महत्व में विश्वास को लगभग क्षीण करने में सफल रही है। भय का अनुभव, जिसमें समकालीन मनुष्य अपनी अस्तित्वगत सीमाओं से परे जाने में अपनी असफलता के कारण डूबा हुआ है, इस समस्या का अनुभव है कि क्या वह स्वयं के ज्ञान के माध्यम से अस्तित्व को प्राप्त कर पाएगा या नहीं, क्या वह

Machine Translated by Google

शून्यता को मिटा दो या शून्यता उसे मिटा देगी। क्योंकि अर्थ के क्षीण होने के कारण उसे अपने मूल की ओर वापस लौटने के लिए मजबूर होना पड़ा है, और उसकी रहस्यमय महानता के माध्यम से उसका एनाबैसिस एक बार फिर से उसके जीवन का पुनर्निर्माण शुरू कर सकता है।

इस सदी के दुख और आशा का उद्गम उस आंतरिक नाटक में है जिसमें आत्मा अपने भीतर के विभाजन के परिणामस्वरूप प्रवृत्त होती है, और उन अदृश्य शक्तियों में जो मनुष्य के हृदय और मन में जन्म लेती हैं। यह दुख और यह आशा भौतिक समस्याओं, आर्थिक, राजनीतिक, तकनीकी, से भी उत्पन्न होती है। इतिहास अपने आप में घटनाओं का मात्र यांत्रिक प्रकटीकरण नहीं है जिसके केंद्र में मनुष्य स्वयं को एक विदेशी भूमि में एक अजनबी के रूप में पाता है। इतिहास को प्रगतिशील मानने पर विशिष्ट आधुनिक ज़ोर, इतिहास के माध्यम से ईश्वर के कार्य करने पर विशिष्ट भविष्यसूचक ज़ोर, और रहस्योद्घाटन की ऐतिहासिक प्रकृति पर विशिष्ट ईसाई ज़ोर अब नए ब्रह्मांड विज्ञान को समाहित करने वाले नए इतिहास के आगे झुकना चाहिए—एक गहन घटना जो उस अदृश्य ब्रह्मांड के गर्भ में जन्म ले रही है जो मनुष्य का मन और हृदय है। क्योंकि हमारा विश्व युग वास्तव में मानव जाति द्वारा अब तक के इतिहास में सामना किया गया सबसे भयावह और सर्वनाशकारी युग है, और विश्व परिप्रेक्ष्य का प्रयास ब्रह्मांड में कार्यरत उस परम नैतिक शक्ति की ओर संकेत करना है, उसी शक्ति की ओर जिस पर अंततः सभी मानवीय प्रयास निर्भर होंगे।

यह चेतना का संकट है जो विज्ञान के संकट के माध्यम से स्पष्ट होता है। यह एक लंबे इतिहास के बाद नई जागृति है, जिसकी उत्पत्ति एक ओर देकार्त के इस इनकार से हुई थी कि धर्मशास्त्र एक विज्ञान के रूप में अस्तित्व में हो सकता है, और दूसरी ओर, कांट के इस इनकार से कि तत्वमीमांसा एक विज्ञान के रूप में अस्तित्व में हो सकती है। इस तरह के प्रत्यक्षवादी चिंतन के कुछ जीवाश्म रूप अभी भी बचे हुए हैं, जो एक अर्ध-समाजशास्त्रीय पौराणिक कथाओं में प्रकट होते हैं, जिसने वैज्ञानिक अवधारणाओं के आवरण में एक नए जीववाद को जन्म दिया है, जिसके परिणामस्वरूप उन पारंपरिक विश्वासों की तुलना में एक अधिक आदिम धर्म का निर्माण हुआ है जिन्हें यह प्रतिस्थापित करने का प्रयास करता है। हालाँकि, अब व्हाइटहेड, बर्गसन और कुछ घटनाविज्ञानियों के प्रभाव से यह स्वीकार किया जाता है कि मात्रात्मक मूल्यों को अलग-थलग करने की प्रवृत्ति वाले प्राकृतिक विज्ञान के अलावा, ज्ञान की एक और श्रेणी मौजूद है जिसमें दर्शन, अपने स्वयं के उपकरणों का उपयोग करके, निरपेक्ष, वास्तविकता के सार और अंतरतम स्वरूप को समझने में सक्षम है। रहस्यमय ब्रह्मांड अब दर्शन और विज्ञान के साथ-साथ प्रकृति और मनुष्य के एक विस्तृत अर्थ को उजागर कर रहा है, जो संवेदी घटनाओं के गणितीय और प्रायोगिक विश्लेषण से भी आगे तक फैला हुआ है।

Machine Translated by Google

अर्थ: केवल भावनात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त पौराणिक कथाओं का खंडन। दूसरे शब्दों में, दर्शनशास्त्र की मूलभूत समस्याएँ, वे समस्याएँ जो जीवन के केंद्र में हैं, एक बार फिर विज्ञान और दर्शनशास्त्र के सामने खड़ी हैं। हमारी समस्या विभेदीकरण और साथ ही संबंध के एक ऐसे सिद्धांत की खोज करना है जो इतना स्पष्ट हो कि वैज्ञानिक और दार्शनिक ज्ञान, दोनों की परस्पर निर्भरता को स्वीकार करके उन्हें उचित और शुद्ध बना सके।

न्याय स्वयं, जो "तीर्थयात्रा और सूली पर चढ़ने की स्थिति" में रहा है और अब धीरे-धीरे पूर्व और पश्चिम दोनों में सामाजिक और राजनीतिक दानवों की पकड़ से मुक्त हो रहा है, अपने ही आधारों पर प्रश्नचिह्न लगाने लगा है। वे आधुनिक क्रांतिकारी आंदोलन जिन्होंने सामाजिक न्याय के नाम पर सामाजिक अन्याय का संरक्षण करके समाज की पवित्र संस्थाओं को चुनौती दी है, विश्व परिप्रेक्ष्य में उनका भी परीक्षण और पुनर्मूल्यांकन किया जा रहा है।

जब हम तीसरी सहस्राब्दी में मनुष्य की प्रारंभिक ब्रह्मांडीय स्थिति पर अपनी दृष्टि डालते हैं, तो हम देखते हैं कि न्याय की अवधारणा, जिस पर मनुष्य का अविभाज्य अधिकार है, धीरे-धीरे आकार लेने लगी और दूसरी सहस्राब्दी में हम्मुराबी के समय तक, न्याय, मनुष्य के स्वभाव का एक स्वाभाविक अंग, न कि एक दान-पुण्य, समाज की चेतना का हिस्सा बन गया। मानवाधिकारों की यह अवधारणा ब्रह्मांड में न्याय की माँग में निहित थी, एक ऐसी माँग जो बीसवीं सदी में भी एक विचित्र सादृश्य के माध्यम से मौजूद है। प्राचीन दृष्टिकोण के अनुसार, मनुष्य स्वयं एक देवता बन सकता था, अपने चारों ओर व्याप्त ब्रह्मांड की महान ब्रह्मांडीय शक्तियों की पहचान ग्रहण कर सकता था।

वह इस ब्रह्मांड को प्रार्थना से नहीं, बल्कि कर्म से प्रभावित कर सकता था। और अब फिर से ब्रह्मांड, समाज और अपने साथियों के साथ मनुष्य के सामंजस्यपूर्ण संबंध की यह चेतना, प्रार्थना से नहीं, बल्कि कर्म से साकार हो सकती है।

भौतिक और तकनीकी रूप से इतना शक्तिशाली होने के बावजूद, पश्चिमी लोकतंत्र, मानव व्यक्ति की पवित्रता के प्रति अपनी चिंता से भटककर, नैतिक और आध्यात्मिक रूप से पहले कभी इतना गंभीर रूप से खतरे में नहीं पड़ा। राष्ट्रीय सुरक्षा और व्यक्तिगत स्वतंत्रता एक भयावह संघर्ष में हैं। एक सार्वभौमिक समुदाय की संभावना और पतन की तकनीक साथ-साथ मौजूद हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि एकता की तीव्र इच्छा में मनुष्यों के बीच बुराई जमा हो रही है। और फिर भी,

Machine Translated by Google

यह बुराई जिसने जीवित वास्तविकता को विभाजित, अलग-थलग और मार डाला था, मृत्यु का सामना करते हुए, मनुष्य अपनी आत्मा की गहराई से "भावना और विचार की अविच्छिन्न समग्रता" और टुकड़ों को फिर से जोड़ने, न्याय के माध्यम से एकता बहाल करने की संभावना के लिए पुकारता है। इतिहास में ईसाई धर्म बुराई के विरुद्ध इस विरोध का उत्तर केवल राज्य की घोषणा द्वारा, अनन्त जीवन के वादे द्वारा दे सकता था—जिसके लिए विश्वास की आवश्यकता थी। लेकिन मनुष्य की आध्यात्मिक और नैतिक पीड़ा ने उसके विश्वास और उसकी आशा को समाप्त कर दिया था। वह अकेला रह गया था। उसकी पीड़ा अव्याख्येय रह गई।

हालाँकि, मनुष्य अब अपमान की अंतिम सीमा पर पहुँच गया है। वह स्वयं को समर्पित करना चाहता है। और इस प्रकार, पश्चिम और पूर्व के आध्यात्मिक और नैतिक खंडहरों के बीच, शून्यवाद, अंधकार और निराशा की सीमाओं से परे एक पुनर्जागरण तैयार है। पश्चिमी और पूर्वी आध्यात्मिक रात्रि की गहराइयों में, अपने स्रोत की ओर मुड़ते हुए, सभ्यता एक आसन्न नए भोर में अपना प्रकाश पुनः प्रज्वलित कर सकती है—जैसा कि प्रकाशितवाक्य की अंतिम पुस्तक में है जो एक नए स्वर्ग, एक नई पृथ्वी और एक नए धार्मिक जीवन स्तर के साथ दूसरे आगमन की बात करती है।

और मैंने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और
पहले पृथ्वी बीत गई थी..*

मनुष्यों के असीम दायित्व और उनकी सीमित शक्ति के बावजूद, राष्ट्रवाद की हठधर्मिता के बावजूद, तथा आध्यात्मिक शोक और नैतिक विस्मृति के बावजूद, वर्तमान की स्पष्ट उथल-पुथल और उथल-पुथल के नीचे, तथा विश्व-चेतना के प्रकट होने के साथ इस गतिशील काल के परिवर्तनों के बीच, विश्व परिप्रेक्ष्य का उद्देश्य "पूर्ण सत्य के अविचल हृदय" को जागृत करने में सहायता करना और विश्व युग के महत्वपूर्ण तत्वों की व्याख्या करना है, जो अब सृजनात्मक प्रक्रिया की उस अविचल निरंतरता के मूल से आकार ले रहे हैं, जो मनुष्य को मानवजाति में पुनर्स्थापित करता है, तथा साथ ही ब्रह्मांड के साथ उसके संवाद को गहन और उन्नत करता है।

न्यूयॉर्क, 1956 रूथ नंदा अंशेन

*प्रकाशितवाक्य, 21:1.

Machine Translated by Google

प्रस्तावना

इस पुस्तक को पढ़ना उन सभी के लिए एक निराशाजनक अनुभव होगा जो प्रेम करने की कला में आसान शिक्षा की अपेक्षा रखते हैं। इसके विपरीत, यह पुस्तक यह दर्शाना चाहती है कि प्रेम कोई ऐसी भावना नहीं है जिसमें कोई भी आसानी से लिप्त हो जाए, चाहे उसकी परिपक्वता का स्तर कुछ भी हो। यह पाठक को यह विश्वास दिलाना चाहती है कि प्रेम पाने के उसके सभी प्रयास विफल होने ही वाले हैं, जब तक कि वह अपने संपूर्ण व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए पूरी सक्रियता से प्रयास न करे, ताकि एक उत्पादक दिशा प्राप्त हो सके; व्यक्तिगत प्रेम में संतुष्टि अपने पड़ोसी से प्रेम करने की क्षमता के बिना, सच्ची विनम्रता, साहस, विश्वास और अनुशासन के बिना प्राप्त नहीं की जा सकती। जिस संस्कृति में ये गुण दुर्लभ हैं, वहाँ प्रेम करने की क्षमता की प्राप्ति एक दुर्लभ उपलब्धि ही बनी रहनी चाहिए। या—कोई भी स्वयं से पूछ सकता है कि उसने कितने सच्चे प्रेम करने वाले व्यक्तियों को जाना है।

फिर भी, कार्य की कठिनाई को कठिनाइयों के साथ-साथ उसकी उपलब्धि की शर्तों को जानने के प्रयास से विमुख होने का कारण नहीं होना चाहिए।
अनावश्यक जटिलताओं से बचने के लिए मैंने इस समस्या को यथासंभव गैर-तकनीकी भाषा में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इसी कारण से मैंने प्रेम-साहित्य के संदर्भों का भी कम से कम प्रयोग किया है।

एक और समस्या का मुझे कोई पूरी तरह संतोषजनक समाधान नहीं मिला; वह है, अपनी पिछली किताबों में व्यक्त विचारों की पुनरावृत्ति से बचना। जो पाठक, खासकर " एस्केप फ्रॉम फ्रीडम", "मैन फॉर हिमसेल्फ" और "द सेन सोसाइटी" से परिचित हैं, उन्हें इस किताब में इन पिछली किताबों में व्यक्त कई विचार मिलेंगे। हालाँकि, " द आर्ट ऑफ़ लविंग" किसी भी तरह से मुख्यतः एक पुनरावृत्ति नहीं है। यह पहले व्यक्त विचारों से परे कई विचार प्रस्तुत करती है, और स्वाभाविक रूप से पुराने विचार भी कभी-कभी नए दृष्टिकोण प्राप्त करते हैं क्योंकि वे सभी एक ही विषय, यानी प्रेम करने की कला, पर केंद्रित हैं।

एफई

Machine Translated by Google

जो कुछ नहीं जानता, वह किसी चीज़ से प्रेम नहीं करता। जो कुछ नहीं कर सकता, वह कुछ नहीं समझता। जो कुछ नहीं समझता, वह बेकार है।

लेकिन जो समझता है वह प्रेम भी करता है, ध्यान भी देता है, देखता भी है... किसी वस्तु में जितना अधिक ज्ञान निहित होता है, उतना ही अधिक प्रेम होता है... जो कोई यह कल्पना करता है कि सभी फल स्ट्रॉबेरी के समान ही पकते हैं, वह अंगूर के बारे में कुछ नहीं जानता।

पेरासेलसस

Machine Translated by Google

I. क्या प्रेम एक कला है?

क्या प्रेम एक कला है? तो इसके लिए ज्ञान और प्रयास की आवश्यकता होती है। या प्रेम एक सुखद अनुभूति है, जिसका अनुभव संयोगवश होता है, और जो भाग्यशाली होने पर "मिल" जाती है? यह छोटी सी किताब पहले वाले आधार पर आधारित है, जबकि निस्संदेह आज अधिकांश लोग दूसरे वाले आधार पर विश्वास करते हैं।

ऐसा नहीं है कि लोग सोचते हैं कि प्यार ज़रूरी नहीं है। वे इसके लिए बेताब हैं; वे सुखी और दुखी प्रेम कहानियों वाली अनगिनत फ़िल्में देखते हैं, प्रेम पर सैकड़ों घटिया गाने सुनते हैं—फिर भी शायद ही कोई यह सोचता है कि प्रेम के बारे में कुछ सीखने लायक है।

यह अजीबोगरीब रवैया कई आधारों पर आधारित है जो अकेले या मिलकर इसे पुष्ट करते हैं। ज़्यादातर लोग प्रेम की समस्या को मुख्यतः प्रेम पाने की समस्या के रूप में देखते हैं, न कि प्रेम करने की, प्रेम करने की क्षमता के रूप में। इसलिए उनके लिए समस्या यह है कि कैसे प्रेम किया जाए, कैसे प्रेम करने योग्य बनें।

इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वे कई रास्ते अपनाते हैं। एक, जो विशेष रूप से पुरुषों द्वारा अपनाया जाता है, वह है सफल होना, अपनी सामाजिक स्थिति के अनुसार जितना संभव हो उतना शक्तिशाली और धनी होना। दूसरा, जो विशेष रूप से महिलाओं द्वारा अपनाया जाता है, वह है अपने शरीर, पहनावे आदि को निखारकर खुद को आकर्षक बनाना। खुद को आकर्षक बनाने के अन्य तरीके, जो पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा अपनाए जाते हैं, वे हैं मधुर व्यवहार, रोचक बातचीत, मददगार, विनम्र और निश्चिंत रहना। खुद को आकर्षक बनाने के कई तरीके वही हैं जो खुद को सफल बनाने के लिए अपनाए जाते हैं, "दोस्त बनाना और लोगों को प्रभावित करना।" वास्तव में, हमारी संस्कृति में ज्यादातर लोग आकर्षक होने से लोकप्रिय होने और आकर्षक होने का मिश्रण समझते हैं।

इस दृष्टिकोण के पीछे दूसरा आधार यह धारणा है कि प्रेम की समस्या एक वस्तु की समस्या है, न कि किसी क्षमता की। लोग सोचते हैं कि प्रेम करना आसान है, लेकिन प्रेम करने के लिए या जिससे प्रेम किया जाए, सही वस्तु ढूँढ़ना मुश्किल है। इस दृष्टिकोण के कई कारण हैं जो आधुनिक समाज के विकास में निहित हैं।

इसका एक कारण बीसवीं सदी में हुआ महान परिवर्तन है।

Machine Translated by Google

"प्रेम पात्र" के चुनाव के संबंध में। विक्टोरियन युग में, जैसा कि कई पारंपरिक संस्कृतियों में होता था, प्रेम अधिकांशतः एक सहज व्यक्तिगत अनुभव नहीं था जो विवाह की ओर ले जा सके। इसके विपरीत, विवाह परंपरा से होता था—या तो संबंधित परिवारों द्वारा, या विवाह दलाल द्वारा, या ऐसे किसी मध्यस्थ की सहायता के बिना; यह सामाजिक मान्यताओं के आधार पर संपन्न होता था, और विवाह संपन्न होने के बाद प्रेम का विकास होना माना जाता था। पिछली कुछ पीढ़ियों में पश्चिमी दुनिया में रोमांटिक प्रेम की अवधारणा लगभग सार्वभौमिक हो गई है। संयुक्त राज्य अमेरिका में, जबकि पारंपरिक प्रकृति के विचार पूरी तरह से अनुपस्थित नहीं हैं, एक बड़े पैमाने पर लोग "रोमांटिक प्रेम" की तलाश में हैं, प्रेम के उस व्यक्तिगत अनुभव की जो विवाह की ओर ले जाए। प्रेम में स्वतंत्रता की इस नई अवधारणा ने कार्य के महत्व के बजाय प्रेम पात्र के महत्व को बहुत बढ़ा दिया होगा।

इस कारक से निकटता से जुड़ी समकालीन संस्कृति की एक और विशेषता है। हमारी पूरी संस्कृति खरीदारी की चाहत पर, पारस्परिक रूप से अनुकूल आदान-प्रदान के विचार पर आधारित है। आधुनिक मनुष्य की खुशी दुकानों की खिड़कियों को देखने के रोमांच में, और अपनी क्षमता के अनुसार, नकद या किश्तों में, सब कुछ खरीदने में निहित है। वह (या वह) लोगों को इसी तरह देखता है। पुरुष के लिए एक आकर्षक लड़की— और स्त्री के लिए एक आकर्षक पुरुष— ही वे पुरस्कार हैं जिनकी वे तलाश में हैं।

"आकर्षक" का अर्थ आमतौर पर उन गुणों का एक अच्छा समूह होता है जो व्यक्तित्व बाज़ार में लोकप्रिय और वांछित होते हैं। किसी व्यक्ति को विशेष रूप से क्या आकर्षक बनाता है, यह उस समय के फैशन पर निर्भर करता है, शारीरिक और मानसिक रूप से। बीस के दशक में, शराब पीने और धूम्रपान करने वाली, सख्त और सेक्सी लड़की आकर्षक लगती थी; आज का फैशन ज़्यादा घरेलूपन और शर्मीलेपन की माँग करता है।

उन्नीसवीं सदी के अंत और इस सदी की शुरुआत में, एक आकर्षक "पैकेज" बनने के लिए एक आदमी को आक्रामक और महत्वाकांक्षी होना पड़ता था—आज उसे सामाजिक और सहिष्णु होना पड़ता है। बहरहाल, प्यार में पड़ने का एहसास आमतौर पर केवल उन्हीं मानवीय वस्तुओं के संबंध में विकसित होता है जो विनिमय की अपनी संभावनाओं की पहुँच में हों। मैं सौदेबाजी के लिए निकला हूँ; वस्तु अपने सामाजिक मूल्य की दृष्टि से वांछनीय होनी चाहिए, और साथ ही मेरी प्रकट और छिपी हुई खूबियों और संभावनाओं को देखते हुए मुझे चाहती भी होनी चाहिए। इस प्रकार दो व्यक्ति तब प्यार में पड़ जाते हैं जब उन्हें लगता है कि उन्होंने अपने विनिमय मूल्यों की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए, बाजार में उपलब्ध सर्वोत्तम वस्तु पा ली है। अक्सर, अचल संपत्ति खरीदने की तरह, विकसित की जा सकने वाली छिपी हुई क्षमताएँ इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

Machine Translated by Google

सौदेबाजी। एक ऐसी संस्कृति में जिसमें विपणन अभिविन्यास प्रबल है, और जिसमें भौतिक सफलता ही सर्वोपरि मूल्य है, इस बात पर आश्चर्यचकित होने का कोई कारण नहीं है कि मानवीय प्रेम संबंध विनिमय के उसी पैटर्न का अनुसरण करते हैं जो वस्तु और श्रम बाजार को नियंत्रित करता है।

तीसरी ग़लती जो इस धारणा की ओर ले जाती है कि प्रेम के बारे में कुछ भी सीखने को नहीं है, वह प्रेम में "पड़ने" के शुरुआती अनुभव और प्रेम में स्थायी अवस्था , या यूँ कहें कि प्रेम में "स्थिर" रहने के बीच के भ्रम में है। अगर दो लोग, जो अजनबी रहे हैं, जैसे हम सब हैं, अचानक अपने बीच की दीवार को तोड़ दें और एक-दूसरे के करीब महसूस करें, एक होने का एहसास करें, तो एकता का यह क्षण जीवन के सबसे रोमांचक, सबसे रोमांचक अनुभवों में से एक होता है। यह उन लोगों के लिए और भी अद्भुत और चमत्कारी होता है जो अलग-थलग, अलग-थलग और प्रेमविहीन हो गए हैं। अचानक अंतरंगता का यह चमत्कार अक्सर तब संभव हो जाता है जब यह यौन आकर्षण और संभोग के साथ जुड़ जाए या उसके द्वारा शुरू हो जाए। हालाँकि, इस प्रकार का प्रेम अपने स्वभाव से ही स्थायी नहीं होता। दो व्यक्ति अच्छी तरह से परिचित हो जाते हैं, उनकी अंतरंगता अपना चमत्कारी स्वरूप खोती जाती है, जब तक कि उनका विरोध, उनकी निराशाएँ, उनकी आपसी ऊब, शुरुआती उत्साह के बचे-खुचे हिस्से को खत्म नहीं कर देती। फिर भी, शुरुआत में वे यह सब नहीं जानते हैं: वास्तव में, वे मोह की तीव्रता को, एक-दूसरे के प्रति "पागलपन" को, अपने प्रेम की तीव्रता का प्रमाण मान लेते हैं, जबकि यह केवल उनके पूर्ववर्ती अकेलेपन की डिग्री को ही साबित कर सकता है।

यह दृष्टिकोण—कि प्रेम करने से आसान कुछ भी नहीं है—प्रेम के बारे में प्रचलित विचार बना हुआ है, इसके विपरीत भारी प्रमाणों के बावजूद। शायद ही कोई गतिविधि, कोई उद्यम, जो इतनी ज़बरदस्त आशाओं और अपेक्षाओं के साथ शुरू किया गया हो, और फिर भी, प्रेम की तरह इतनी नियमित रूप से विफल हो। अगर किसी अन्य गतिविधि के साथ ऐसा होता, तो लोग विफलता के कारणों को जानने के लिए उत्सुक होते, और यह जानने के लिए उत्सुक होते कि कोई इसे कैसे बेहतर कर सकता है—या वे उस गतिविधि को छोड़ देते। चूँकि प्रेम के मामले में उत्तरार्द्ध असंभव है, इसलिए प्रेम की विफलता पर काबू पाने का केवल एक ही पर्याप्त तरीका प्रतीत होता है—इस विफलता के कारणों की जाँच करना, और प्रेम के अर्थ का अध्ययन करना।

पहला कदम यह है कि हम इस बात से अवगत हो जाएं कि प्रेम एक कला है, जैसे कि जीवन जीना भी एक कला है; यदि हम प्रेम करना सीखना चाहते हैं तो हमें इस दिशा में आगे बढ़ना होगा।

Machine Translated by Google

उसी तरह हमें आगे बढ़ना होगा यदि हम कोई अन्य कला सीखना चाहते हैं, जैसे संगीत, चित्रकला, बढ़ईगीरी, या चिकित्सा या इंजीनियरिंग की कला।

किसी भी कला को सीखने के लिए आवश्यक कदम क्या हैं?

किसी कला को सीखने की प्रक्रिया को सुविधाजनक रूप से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है: एक, सिद्धांत में निपुणता; दूसरा, अभ्यास में निपुणता।
अगर मैं चिकित्सा कला सीखना चाहता हूँ, तो मुझे पहले मानव शरीर और विभिन्न रोगों के बारे में तथ्यों को जानना होगा। जब मेरे पास इतना सारा सैद्धांतिक ज्ञान है, तो मैं चिकित्सा कला में किसी भी तरह से सक्षम नहीं हूँ। मैं इस कला में तभी निपुण हो पाऊँगा जब मुझे बहुत अभ्यास करना होगा, जब तक कि अंततः मेरे सैद्धांतिक ज्ञान और मेरे अभ्यास के परिणाम एक में मिल न जाएँ—मेरा अंतर्ज्ञान, जो किसी भी कला में निपुणता का सार है। लेकिन, सिद्धांत और व्यवहार सीखने के अलावा, किसी भी कला में निपुण होने के लिए एक तीसरा कारक भी आवश्यक है—कला में निपुणता सर्वोच्च चिंता का विषय होनी चाहिए; दुनिया में कला से बढ़कर और कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं होना चाहिए। यह संगीत, चिकित्सा, पूंजी और प्रेम के लिए भी सत्य है। और, शायद, यहीं इस प्रश्न का उत्तर छिपा है कि हमारी संस्कृति में लोग अपनी स्पष्ट असफलताओं के बावजूद, इस कला को सीखने का इतना कम प्रयास क्यों करते हैं: प्रेम की गहरी लालसा के बावजूद, लगभग हर चीज को प्रेम से अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है: सफलता, प्रतिष्ठा, धन, शक्ति - हमारी लगभग सारी ऊर्जा इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के तरीके सीखने में खर्च होती है, और प्रेम करने की कला सीखने में लगभग कोई ऊर्जा नहीं।

क्या ऐसा हो सकता है कि केवल उन्हीं चीज़ों को सीखने योग्य माना जाता है जिनसे धन या प्रतिष्ठा अर्जित की जा सके, और वह प्रेम, जो "केवल" आत्मा को लाभ पहुँचाता है, लेकिन आधुनिक अर्थों में लाभहीन है, एक ऐसी विलासिता है जिस पर हमें अधिक ऊर्जा खर्च करने का कोई अधिकार नहीं है? हालाँकि, यह जो भी हो, निम्नलिखित चर्चा पूर्वोक्त विभाजनों के अर्थ में प्रेम करने की कला पर विचार करेगी: पहले मैं प्रेम के सिद्धांत पर चर्चा करूँगा—और यह पुस्तक का अधिकांश भाग होगा; और दूसरे, मैं प्रेम के अभ्यास पर चर्चा करूँगा— इसमें अभ्यास के बारे में, किसी भी अन्य क्षेत्र की तरह, बहुत कम कहा जा सकता है।

Machine Translated by Google

II. प्रेम का सिद्धांत

I. प्रेम, मानव अस्तित्व की समस्या का उत्तर

प्रेम का कोई भी सिद्धांत मनुष्य के सिद्धांत से शुरू होना चाहिए,

मानव अस्तित्व का। हालाँकि हम पशुओं में प्रेम, या यूँ कहें कि प्रेम के समतुल्य, पाते हैं, लेकिन उनका लगाव मुख्यतः उनके सहज उपकरण का एक हिस्सा होता है; मनुष्य में इस सहज उपकरण के केवल अवशेष ही दिखाई देते हैं। मनुष्य के अस्तित्व के लिए आवश्यक तथ्य यह है कि वह पशु जगत से, सहज अनुकूलन से, उभरा है।

वह प्रकृति से परे हो गया है—हालाँकि वह उसे कभी नहीं छोड़ता; वह उसका एक अंश है—और फिर भी एक बार प्रकृति से अलग हो जाने पर, वह उसमें वापस नहीं लौट सकता; एक बार स्वर्ग से—प्रकृति के साथ मूल एकता की स्थिति से—बाहर निकाल दिए जाने पर, अगर वह लौटने की कोशिश करे, तो ज्वलंत तलवारों वाले करूब उसका रास्ता रोक देते हैं। मनुष्य केवल अपनी बुद्धि का विकास करके, एक नया सामंजस्य, एक मानवीय सामंजस्य खोजकर ही आगे बढ़ सकता है, न कि उस पूर्व-मानवीय सामंजस्य को, जो पूरी तरह से खो गया है।

जब मनुष्य का जन्म होता है, तो मानव जाति के साथ-साथ व्यक्ति भी,

उसे एक ऐसी स्थिति से बाहर निकाल दिया जाता है जो निश्चित थी, क्योंकि

सहज प्रवृत्ति की तरह निश्चित, एक ऐसी स्थिति में जो अनिश्चित, अनिश्चित और खुली है। केवल अतीत के बारे में ही निश्चितता है—और भविष्य के बारे में भी केवल इस हद तक कि वह मृत्यु है।

मनुष्य को तर्क का वरदान प्राप्त है; वह स्वयं के प्रति जागरूक होकर जीवन है; उसे स्वयं के प्रति, अपने साथियों के प्रति, अपने अतीत के प्रति और अपने भविष्य की संभावनाओं के प्रति जागरूकता है। स्वयं को एक अलग इकाई के रूप में जानने का यह बोध, अपने छोटे से जीवन काल का बोध, इस तथ्य का बोध कि वह अपनी इच्छा के बिना जन्म लेता है और अपनी इच्छा के विरुद्ध मरता है, कि वह उन लोगों से पहले मरेगा जिन्हें वह प्यार करता है, या वे उससे पहले, अपने अकेलेपन और अलगाव का बोध, प्रकृति और समाज की शक्तियों के सामने अपनी लाचारी का बोध, ये सब उसे

Machine Translated by Google

अलग, बिखरा हुआ अस्तित्व एक असहनीय जेल। अगर वह खुद को इस जेल से आज़ाद नहीं कर पाता और किसी न किसी रूप में इंसानों के साथ, बाहरी दुनिया के साथ एकाकार नहीं हो पाता, तो वह पागल हो जाता।

अलगाव का अनुभव चिंता पैदा करता है; यह वास्तव में, सभी चिंताओं का स्रोत है। अलग होने का अर्थ है, अपनी मानवीय शक्तियों का उपयोग करने की क्षमता के बिना, अलग-थलग पड़ जाना। इसलिए अलग होने का अर्थ है असहाय होना, दुनिया को—वस्तुओं और लोगों को—सक्रिय रूप से समझने में असमर्थ होना; इसका अर्थ है कि दुनिया मेरी प्रतिक्रिया करने की क्षमता के बिना मुझ पर आक्रमण कर सकती है। इस प्रकार, अलगाव तीव्र चिंता का स्रोत है। इसके अलावा, यह शर्म और अपराधबोध की भावना पैदा करता है। अलगाव में अपराधबोध और शर्म का यह अनुभव बाइबिल की आदम और हव्वा की कहानी में व्यक्त होता है। आदम और हव्वा द्वारा "भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष" का फल खाने के बाद, उनके अवज्ञा करने के बाद (जब तक अवज्ञा करने की स्वतंत्रता न हो, तब तक कोई अच्छाई और बुराई नहीं होती), प्रकृति के साथ मूल पाशविक सामंजस्य से मुक्त होकर मानव बनने के बाद, अर्थात, मनुष्य के रूप में जन्म लेने के बाद—उन्होंने देखा कि "वे नग्न थे—और वे लज्जित हुए।" क्या हमें यह मान लेना चाहिए कि इतने पुराने और बुनियादी मिथक में उन्नीसवीं सदी के दृष्टिकोण की पाखंडी नैतिकताएँ हैं, और कहानी हमें जो महत्वपूर्ण बात बताना चाहती है वह यह है कि उनके जननांग दिखाई दे रहे थे, यह शर्मिंदगी की बात है? ऐसा बिल्कुल नहीं हो सकता, और कहानी को विक्टोरियन दृष्टिकोण से समझने पर हम मुख्य बात से चूक जाते हैं, जो कुछ इस प्रकार प्रतीत होती है: जब स्त्री और पुरुष स्वयं और एक-दूसरे के प्रति जागरूक हो जाते हैं, तो उन्हें अपनी पृथकता और अपने अंतर का भी एहसास होता है, क्योंकि वे अलग-अलग लिंगों के होते हैं। लेकिन अपनी पृथकता को स्वीकार करते हुए भी वे अजनबी ही रहते हैं, क्योंकि उन्होंने अभी तक एक-दूसरे से प्रेम करना नहीं सीखा है (जैसा कि इस तथ्य से भी स्पष्ट होता है कि आदम, हव्वा का बचाव करने की कोशिश करने के बजाय, उसे दोषी ठहराकर अपना बचाव करता है)। प्रेम द्वारा पुनर्मिलन के बिना, मानव वियोग का बोध शर्म का स्रोत है। साथ ही यह अपराधबोध और चिंता का भी स्रोत है।

तो, मनुष्य की सबसे गहरी ज़रूरत है अपने अलगाव पर विजय पाने की, अपने अकेलेपन की कैद से बाहर निकलने की। इस लक्ष्य को प्राप्त करने में पूर्ण विफलता का अर्थ है पागलपन, क्योंकि पूर्ण अलगाव की घबराहट केवल बाहरी दुनिया से इतनी मौलिक रूप से अलग होकर ही दूर हो सकती है कि अलगाव की भावना गायब हो जाए—क्योंकि बाहरी दुनिया, जिससे व्यक्ति अलग है, गायब हो चुकी है।

Machine Translated by Google

मनुष्य—सभी युगों और संस्कृतियों का—एक ही प्रश्न के समाधान से जूझ रहा है: अलगाव पर कैसे विजय प्राप्त की जाए, एकता कैसे प्राप्त की जाए, अपने व्यक्तिगत जीवन से कैसे ऊपर उठकर प्रायश्चित कैसे किया जाए। गुफाओं में रहने वाले आदिम मनुष्य, अपने झुंडों की देखभाल करने वाले खानाबदोश मनुष्य, और खेत में रहने वाले किसान, सभी के लिए यही प्रश्न एक जैसा है।

मिस्र, फोनीशियन व्यापारी, रोमन सैनिक, मध्ययुगीन भिक्षु, जापानी समुराई, आधुनिक क्लर्क और कारखाना कर्मचारी। प्रश्न एक ही है, क्योंकि यह एक ही आधार से उत्पन्न होता है: मानवीय परिस्थितियाँ, मानव अस्तित्व की परिस्थितियाँ। उत्तर भिन्न-भिन्न हैं। इस प्रश्न का उत्तर पशु पूजा, मानव बलि या सैन्य विजय, विलासिता में लिप्तता, तपस्वी त्याग, जुनूनी कार्य, कलात्मक सृजन, ईश्वर प्रेम और मानव प्रेम से दिया जा सकता है। हालाँकि कई उत्तर हैं —जिनका अभिलेख मानव इतिहास है—फिर भी वे असंख्य नहीं हैं। इसके विपरीत, जैसे ही कोई उन छोटे-छोटे अंतरों को नज़रअंदाज़ करता है जो केंद्र से ज़्यादा परिधि से संबंधित हैं, उसे पता चलता है कि दिए गए उत्तरों की संख्या सीमित है, और केवल मनुष्य द्वारा उन विभिन्न संस्कृतियों में दिए जा सकते थे जिनमें वह रहा है। धर्म और दर्शन का इतिहास इन उत्तरों का, उनकी विविधता का, और साथ ही उनकी संख्या की सीमाओं का इतिहास है।

उत्तर, कुछ हद तक, इस बात पर निर्भर करते हैं कि व्यक्ति किस हद तक व्यक्तित्व-बोध तक पहुँच गया है। शिशु में 'अहं' का भाव अभी विकसित हुआ है, लेकिन बहुत कम; वह अभी भी माँ के साथ एकता का अनुभव करता है, जब तक माँ मौजूद है, उसे अलगाव का कोई एहसास नहीं होता। माँ, उसके स्तनों, उसकी त्वचा की शारीरिक उपस्थिति से उसके अकेलेपन का एहसास कम होता है। जब तक बच्चा अपनी अलगाव और व्यक्तित्व की भावना विकसित कर लेता है, तब तक माँ की शारीरिक उपस्थिति पर्याप्त नहीं रह जाती, और तब अलगाव को अन्य तरीकों से दूर करने की आवश्यकता उत्पन्न होती है।

इसी तरह, अपनी प्रारंभिक अवस्था में भी मानव जाति प्रकृति के साथ एकाकार महसूस करती है। मिट्टी, जानवर, पौधे, ये सब आज भी मनुष्य की दुनिया हैं।

वह खुद को जानवरों के साथ जोड़ता है, और यह जानवरों के मुखौटे पहनकर, किसी कुलदेवता पशु या पशु देवताओं की पूजा करके व्यक्त होता है। लेकिन मानव जाति जितना अधिक इन प्राथमिक बंधनों से मुक्त होती जाती है, उतना ही वह खुद को प्राकृतिक दुनिया से अलग करती जाती है, और अलगाव से बचने के नए तरीके खोजने की आवश्यकता उतनी ही तीव्र होती जाती है।

Machine Translated by Google

इस लक्ष्य को प्राप्त करने का एक तरीका सभी प्रकार की कामुक अवस्थाओं में निहित है।
ये स्वतः प्रेरित समाधि का रूप ले सकते हैं, कभी-कभी औषधियों की सहायता से। आदिम जनजातियों के कई अनुष्ठान इस प्रकार के समाधान का एक विशद चित्रण प्रस्तुत करते हैं। क्षणिक उत्कर्ष की अवस्था में बाहरी दुनिया लुप्त हो जाती है, और उसके साथ ही उससे अलगाव की भावना भी। चूँकि ये अनुष्ठान सामूहिक रूप से किए जाते हैं, इसलिए समूह के साथ एकाकार होने का अनुभव जुड़ जाता है जो इस समाधान को और भी अधिक प्रभावी बनाता है। इस कामोत्तेजक समाधान से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ, और अक्सर इसके साथ मिश्रित, यौन अनुभव है। यौन कामोत्तेजना समाधि या कुछ औषधियों के प्रभाव जैसी अवस्था उत्पन्न कर सकती है। सामूहिक यौन कामोत्तेजना के अनुष्ठान कई आदिम अनुष्ठानों का एक अंग थे। ऐसा प्रतीत होता है कि कामोत्तेजक अनुभव के बाद, मनुष्य कुछ समय तक अपने अलगाव से बहुत अधिक पीड़ित हुए बिना रह सकता है। धीरे-धीरे चिंता का तनाव बढ़ता है, और फिर अनुष्ठान के बार-बार प्रदर्शन से कम हो जाता है।

जब तक ये कामुक अवस्थाएँ किसी जनजाति में आम प्रचलन का विषय हैं, तब तक ये चिंता या अपराधबोध पैदा नहीं करतीं। इस तरह से कार्य करना सही है, और पुण्य भी, क्योंकि यह सभी का साझा तरीका है, ओझाओं या पुजारियों द्वारा अनुमोदित और अपेक्षित है; इसलिए अपराधबोध या शर्मिंदगी महसूस करने का कोई कारण नहीं है। यह बिल्कुल अलग बात है जब यही उपाय किसी ऐसी संस्कृति में किसी व्यक्ति द्वारा चुना जाता है जिसने इन आम प्रथाओं को पीछे छोड़ दिया है।

शराब और नशीली दवाओं की लत ऐसे रूप हैं जिन्हें व्यक्ति गैर-कामुक संस्कृति में चुनता है। सामाजिक रूप से प्रचलित समाधानों में भाग लेने वालों के विपरीत, ऐसे व्यक्ति अपराधबोध और पश्चाताप से ग्रस्त होते हैं।

हालांकि वे शराब या नशीली दवाओं की शरण लेकर अलगाव से बचने की कोशिश करते हैं, लेकिन कामोत्तेजक अनुभव समाप्त होने के बाद वे और भी अलग महसूस करते हैं, और इस प्रकार बढ़ती आवृत्ति और तीव्रता के साथ इसका सहारा लेने के लिए प्रेरित होते हैं। इससे थोड़ा अलग है यौन कामोत्तेजक समाधान का सहारा। कुछ हद तक यह अलगाव पर विजय पाने का एक स्वाभाविक और सामान्य तरीका है, और अलगाव की समस्या का आंशिक समाधान है। लेकिन कई व्यक्तियों में, जिनमें अलगाव अन्य तरीकों से दूर नहीं होता, यौन कामोत्तेजना की खोज एक ऐसा कार्य ग्रहण कर लेती है जो इसे शराब और नशीली दवाओं की लत से बहुत अलग नहीं बनाता। यह अलगाव से उत्पन्न चिंता से बचने का एक हताश प्रयास बन जाता है, और इसके परिणामस्वरूप अलगाव की भावना लगातार बढ़ती जाती है, क्योंकि प्रेम के बिना यौन क्रिया कभी भी दो मनुष्यों के बीच की खाई को पाट नहीं पाती, सिवाय क्षणिक रूप से।

Machine Translated by Google

सभी प्रकार के कामुक मिलन की तीन विशेषताएँ होती हैं: वे तीव्र, यहाँ तक कि हिंसक भी होते हैं; वे संपूर्ण व्यक्तित्व, मन और शरीर में घटित होते हैं; वे क्षणिक और आवधिक होते हैं। ठीक इसके विपरीत, उस मिलन के लिए सत्य है जो अतीत और वर्तमान में मनुष्य द्वारा चुना गया अब तक का सबसे आम समाधान है: समूह, उसके रीति-रिवाजों, प्रथाओं और विश्वासों के अनुरूप मिलन । यहाँ भी हम एक उल्लेखनीय विकास देखते हैं।

आदिम समाज में समूह छोटा होता है; इसमें वे लोग शामिल होते हैं जिनके साथ रक्त और मिट्टी का संबंध होता है। संस्कृति के बढ़ते विकास के साथ, समूह बड़ा होता जाता है; यह

एक पोलिस के नागरिक , एक बड़े राज्य के नागरिक, एक चर्च के सदस्य। यहाँ तक कि एक गरीब रोमन भी गर्व महसूस करता था (क्योंकि वह "सिविस रोमनस सम" कह सकता था; रोम और साम्राज्य उसका परिवार, उसका घर, उसकी दुनिया थे)।
समकालीन पश्चिमी समाज में भी, समूह के साथ एकता अलगाव पर विजय पाने का प्रचलित तरीका है। यह एक ऐसी एकता है जिसमें व्यक्तिगत स्व काफी हद तक लुप्त हो जाता है, और जहाँ उद्देश्य समूह का हिस्सा बनना होता है। अगर मैं बाकी सभी लोगों की तरह हूँ, अगर मुझमें ऐसी कोई भावनाएँ या विचार नहीं हैं जो मुझे अलग बनाते हैं, अगर मैं रीति-रिवाजों, पहनावे, विचारों में समूह के पैटर्न के अनुरूप हूँ, तो मैं बच जाता हूँ; अकेलेपन के भयावह अनुभव से बच जाता हूँ। तानाशाही व्यवस्थाएँ इस अनुरूपता को प्रेरित करने के लिए धमकियों और आतंक का इस्तेमाल करती हैं; लोकतांत्रिक देश, सुझाव और प्रचार का। वास्तव में, दोनों प्रणालियों के बीच एक बड़ा अंतर है। लोकतंत्रों में गैर-अनुरूपता संभव है और वास्तव में, पूरी तरह से अनुपस्थित नहीं है; अधिनायकवादी प्रणालियों में, केवल कुछ असामान्य नायकों और शहीदों से ही आज्ञाकारिता से इनकार करने की उम्मीद की जा सकती है। लेकिन इस अंतर के बावजूद, लोकतांत्रिक समाज अत्यधिक अनुरूपता प्रदर्शित करते हैं। इसका कारण यह है कि एकीकरण की खोज का कोई न कोई उत्तर अवश्य होना चाहिए , और यदि कोई दूसरा या बेहतर रास्ता न हो, तो झुंड के अनुरूप एकीकरण ही प्रमुख विकल्प बन जाता है। अलग होने के भय की शक्ति, झुंड से कुछ ही कदम दूर होने के भय को तभी समझा जा सकता है, जब कोई अलग न होने की आवश्यकता की गहराई को समझे। कभी-कभी गैर-अनुरूपता के इस भय को व्यावहारिक खतरों के भय के रूप में तर्कसंगत ठहराया जाता है जो गैर-अनुरूपतावादियों के लिए खतरा बन सकते हैं। लेकिन वास्तव में, लोग उससे कहीं अधिक हद तक अनुरूप होना चाहते हैं , जितना उन्हें मजबूर किया जाता है , कम से कम पश्चिमी लोकतंत्रों में।

Machine Translated by Google

ज़्यादातर लोगों को अपनी अनुरूपता की ज़रूरत का एहसास ही नहीं होता। वे इस भ्रम में जीते हैं कि वे अपने विचारों और झुकावों का पालन करते हैं, कि वे व्यक्तिवादी हैं, कि वे अपनी सोच के परिणामस्वरूप अपनी राय पर पहुँचे हैं—और यह यूँ ही होता है कि उनके विचार बहुसंख्यकों के विचारों से मिलते-जुलते हैं। सभी की सहमति "उनके" विचारों की सत्यता का प्रमाण है। चूँकि अभी भी कुछ वैयक्तिकता महसूस करने की ज़रूरत है, इसलिए यह ज़रूरत छोटे-मोटे अंतरों से पूरी हो जाती है; हैंडबैग या स्वेटर पर लिखे आद्याक्षर, बैंक कर्मचारी की नेमप्लेट, रिपब्लिकन पार्टी के बजाय डेमोक्रेटिक पार्टी से जुड़े होना, श्राइनर्स के बजाय एल्क्स से जुड़े होना, ये सब व्यक्तिगत अंतरों की अभिव्यक्ति बन जाते हैं।

"यह अलग है" का विज्ञापन नारा इस भिन्नता की दयनीय आवश्यकता को दर्शाता है, जबकि वास्तविकता में ऐसी कोई भिन्नता बची ही नहीं है।

मतभेदों को दूर करने की यह बढ़ती प्रवृत्ति समानता की अवधारणा और अनुभव से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है, जैसा कि यह सबसे उन्नत औद्योगिक समाजों में विकसित हो रही है। धार्मिक संदर्भ में समानता का अर्थ था कि हम सभी ईश्वर की संतान हैं, हम सभी एक ही मानव-दिव्य तत्व में सहभागी हैं, हम सभी एक हैं। इसका अर्थ यह भी था कि व्यक्तियों के बीच के अंतरों का सम्मान किया जाना चाहिए, जबकि यह सत्य है कि हम सभी एक हैं, यह भी सत्य है कि हम में से प्रत्येक एक अद्वितीय इकाई है, अपने आप में एक ब्रह्मांड है। व्यक्ति की विशिष्टता का ऐसा विश्वास, उदाहरण के लिए, तल्मूडिक कथन में व्यक्त किया गया है: "जो कोई एक जीवन बचाता है, वह मानो उसने पूरी दुनिया को बचा लिया है; जो कोई एक जीवन नष्ट करता है, वह मानो उसने पूरी दुनिया को नष्ट कर दिया है।" व्यक्तित्व के विकास के लिए एक शर्त के रूप में समानता, पश्चिमी ज्ञानोदय के दर्शन में भी इस अवधारणा का अर्थ था। इसका अर्थ था (जिसे कांट ने सबसे स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया) कि किसी भी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति के उद्देश्यों का साधन नहीं बनना चाहिए। सभी मनुष्य समान हैं क्योंकि वे साध्य हैं, और केवल साध्य हैं, और एक-दूसरे के लिए कभी साधन नहीं हैं। ज्ञानोदय के विचारों का अनुसरण करते हुए, विभिन्न विचारधाराओं के समाजवादी विचारकों ने समानता को शोषण के उन्मूलन, मनुष्य द्वारा मनुष्य के उपयोग के रूप में परिभाषित किया, चाहे वह उपयोग क्रूर हो या "मानवीय"।

समकालीन पूँजीवादी समाज में समानता का अर्थ बदल गया है। समानता से तात्पर्य स्वचालित मशीनों की समानता से है; उन मनुष्यों की समानता से है जिन्होंने अपना व्यक्तित्व खो दिया है। आज समानता का अर्थ "एकरूपता" नहीं, बल्कि "समानता" है। यह अमूर्तताओं की समानता है, उन मनुष्यों की समानता है जो एक ही दिशा में काम करते हैं।

Machine Translated by Google

वही नौकरियाँ, वही मनोरंजन, वही अखबार पढ़ना, वही भावनाएँ और वही विचार। इस संदर्भ में, कुछ उपलब्धियों को भी संदेह की दृष्टि से देखना चाहिए, जिन्हें आमतौर पर हमारी प्रगति के संकेत के रूप में सराहा जाता है, जैसे कि महिलाओं की समानता।

कहने की ज़रूरत नहीं कि मैं महिलाओं की समानता के ख़िलाफ़ नहीं बोल रहा हूँ; लेकिन समानता की इस प्रवृत्ति के सकारात्मक पहलुओं से किसी को धोखा नहीं खाना चाहिए। यह भिन्नताओं को दूर करने की प्रवृत्ति का हिस्सा है। समानता इसी क़ीमत पर ख़रीदी जाती है: महिलाएँ समान हैं क्योंकि अब वे अलग नहीं हैं। ज्ञानोदय दर्शन का सिद्धांत, " मैं हूँ न पास दे सेक्से", यानी आत्मा का कोई लिंग नहीं है, आम चलन बन गया है। लिंगों का ध्रुवीकरण लुप्त हो रहा है, और इसके साथ ही कामुक प्रेम भी, जो इसी ध्रुवीकरण पर आधारित है। स्त्री-पुरुष एक जैसे हो जाते हैं, विपरीत ध्रुवों के रूप में समान नहीं । समकालीन समाज अवैयक्तिक समानता के इस आदर्श का प्रचार इसलिए करता है क्योंकि उसे मानव परमाणुओं की ज़रूरत होती है, हर एक समान, ताकि वे एक समूह में, सुचारू रूप से, बिना किसी घर्षण के कार्य कर सकें; सभी एक ही आदेश का पालन करें, फिर भी हर कोई यह मानता रहे कि वह अपनी इच्छाओं का पालन कर रहा है। जिस प्रकार आधुनिक बड़े पैमाने पर उत्पादन के लिए वस्तुओं के मानकीकरण की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार सामाजिक प्रक्रिया के लिए मनुष्य के मानकीकरण की आवश्यकता होती है, और इस मानकीकरण को "समानता" कहा जाता है।

अनुरूपता द्वारा एकता तीव्र और हिंसक नहीं होती; यह शांत होती है, दिनचर्या से निर्देशित होती है, और इसी कारण से अलगाव की चिंता को शांत करने के लिए अक्सर अपर्याप्त होती है। समकालीन पश्चिमी समाज में शराबखोरी, नशीली दवाओं की लत, बाध्यकारी यौनवाद और आत्महत्या की घटनाएँ झुंड अनुरूपता की इस सापेक्ष विफलता के लक्षण हैं। इसके अलावा, यह समाधान मुख्य रूप से मन से संबंधित है, शरीर से नहीं, और इसी कारण से यह भी कामुक समाधानों की तुलना में कमज़ोर है। झुंड अनुरूपता का केवल एक ही लाभ है: यह स्थायी है, और अनियमित नहीं होती। व्यक्ति को तीन या चार वर्ष की आयु में अनुरूपता के स्वरूप में ढाला जाता है, और उसके बाद वह झुंड से अपना संपर्क कभी नहीं खोता। यहाँ तक कि उसका अंतिम संस्कार, जिसे वह अपना अंतिम महान सामाजिक समारोह मानता है, भी इस स्वरूप के पूर्णतः अनुरूप होता है।

अलगाव से उत्पन्न चिंता को दूर करने के एक उपाय के रूप में अनुरूपता के अलावा, समकालीन जीवन के एक अन्य पहलू पर भी विचार किया जाना चाहिए: कार्य दिनचर्या और आनंद दिनचर्या की भूमिका। मनुष्य "नौ से पाँच बजे तक काम करने वाला" बन जाता है, वह श्रम शक्ति का हिस्सा होता है, या क्लर्कों और प्रबंधकों की नौकरशाही शक्ति का। उसकी पहल कम होती है, उसके कार्य निर्धारित होते हैं

Machine Translated by Google

काम का संगठन; सीढ़ी पर ऊपर वालों और नीचे वालों के बीच ज़रा भी फ़र्क़ नहीं है। वे सभी संगठन की पूरी संरचना द्वारा निर्धारित कार्य, निर्धारित गति से और निर्धारित तरीके से करते हैं। यहाँ तक कि भावनाएँ भी निर्धारित हैं: प्रसन्नता, सहनशीलता, विश्वसनीयता, महत्वाकांक्षा, और बिना किसी टकराव के सबके साथ मिल-जुलकर रहने की क्षमता। मौज-मस्ती भी इसी तरह, हालाँकि उतने कठोर नहीं, नियमित रूप से होती है। किताबें बुक क्लब चुनते हैं, फ़िल्में फ़िल्म और थिएटर मालिक चुनते हैं, और विज्ञापन नारे उनके द्वारा भुगतान किए जाते हैं; बाकी सब भी एक जैसा है: रविवार को कार में घूमना, टेलीविज़न सत्र, ताश का खेल, सामाजिक पार्टियाँ। जन्म से मृत्यु तक, सोमवार से सोमवार तक, सुबह से शाम तक—सभी गतिविधियाँ नियमित और पूर्व-निर्मित होती हैं। इस नियमितता के जाल में फँसा हुआ व्यक्ति यह कैसे न भूले कि वह एक मनुष्य है, एक अद्वितीय व्यक्ति है, जिसे जीने का बस यही एक मौका दिया गया है, आशाओं और निराशाओं के साथ, दुःख और भय के साथ, प्रेम की लालसा और शून्यता और अलगाव के भय के साथ?

एकता प्राप्त करने का तीसरा तरीका रचनात्मक गतिविधि में निहित है, चाहे वह कलाकार की हो या कारीगर की। किसी भी प्रकार के रचनात्मक कार्य में, सृजनशील व्यक्ति स्वयं को अपनी सामग्री के साथ एकाकार कर लेता है, जो उसके बाहरी संसार का प्रतिनिधित्व करती है। चाहे बढ़ई मेज बनाए, या सुनार आभूषण, चाहे किसान अपना अनाज उगाए या चित्रकार चित्र बनाए, सभी प्रकार के रचनात्मक कार्यों में कार्यकर्ता और उसकी वस्तु एक हो जाते हैं, मनुष्य सृजन की प्रक्रिया में स्वयं को संसार के साथ एकाकार कर लेता है। हालाँकि, यह केवल उत्पादक कार्य के लिए ही सत्य है, उस कार्य के लिए जिसमें मैं योजना बनाता हूँ, उत्पादन करता हूँ, अपने कार्य का परिणाम देखता हूँ। एक क्लर्क, अंतहीन बेल्ट पर काम करने वाले कार्यकर्ता की आधुनिक कार्य प्रक्रिया में, कार्य के इस एकात्मक गुण का बहुत कम हिस्सा बचा है। कार्यकर्ता मशीन या नौकरशाही संगठन का एक परिशिष्ट बन जाता है। वह स्वयं नहीं रह जाता - इसलिए अनुरूपता के अलावा कोई एकता स्थापित नहीं होती।

उत्पादक कार्य में प्राप्त एकता पारस्परिक नहीं होती; आनंदमय विलय में प्राप्त एकता क्षणिक होती है; अनुरूपता से प्राप्त एकता केवल छद्म एकता होती है। इसलिए, ये अस्तित्व की समस्या के केवल आंशिक उत्तर हैं। पूर्ण उत्तर पारस्परिक मिलन, किसी अन्य व्यक्ति के साथ प्रेम में विलय की उपलब्धि में निहित है।

पारस्परिक एकता की यह चाहत मनुष्य में सबसे शक्तिशाली प्रयास है। यह सबसे मौलिक जुनून है, यही वह शक्ति है जो मनुष्य को एक-दूसरे से जोड़े रखती है।

Machine Translated by Google

मानव जाति, कुल, परिवार, समाज, सभी के लिए एक साथ एकता का मार्ग। इसे प्राप्त न कर पाने का अर्थ है पागलपन या विनाश—आत्म-विनाश या दूसरों का विनाश।
प्रेम के बिना, मानवता एक दिन भी अस्तित्व में नहीं रह सकती। फिर भी, अगर हम पारस्परिक मिलन की उपलब्धि को "प्रेम" कहते हैं, तो हम खुद को एक गंभीर कठिनाई में पाते हैं। विलय विभिन्न तरीकों से प्राप्त किया जा सकता है—और ये अंतर प्रेम के विभिन्न रूपों में समानता से कम महत्वपूर्ण नहीं हैं।

क्या इन सभी को प्रेम कहा जाना चाहिए? या क्या हमें "प्रेम" शब्द को केवल एक विशिष्ट प्रकार के मिलन के लिए ही आरक्षित रखना चाहिए, जो पश्चिमी और पूर्वी इतिहास के पिछले चार हज़ार वर्षों के सभी महान मानवतावादी धर्मों और दार्शनिक प्रणालियों में आदर्श गुण रहा है?

सभी अर्थ संबंधी कठिनाइयों की तरह, इसका उत्तर भी मनमाना ही हो सकता है।
महत्वपूर्ण बात यह है कि जब हम प्रेम की बात करते हैं तो हम जानते हैं कि हम किस प्रकार के मिलन की बात कर रहे हैं। क्या हम प्रेम को अस्तित्व की समस्या का परिपक्व समाधान मानते हैं, या हम प्रेम के उन अपरिपक्व रूपों की बात करते हैं जिन्हें सहजीवी मिलन कहा जा सकता है? आगे के पृष्ठों में मैं केवल पहले वाले को ही प्रेम कहूँगा, "प्रेम" की चर्चा मैं दूसरे वाले से शुरू करूँगा।

गर्भवती माँ और भ्रूण के बीच के रिश्ते में सहजीवी मिलन का अपना जैविक स्वरूप होता है। वे दो होते हुए भी एक हैं। वे "एक साथ" रहते हैं (सिम्बायोसिस), उन्हें एक-दूसरे की ज़रूरत होती है। भ्रूण माँ का एक अंग है, उसे अपनी ज़रूरत की हर चीज़ माँ से मिलती है; माँ मानो उसकी दुनिया है; वह उसे पोषण देती है, उसकी रक्षा करती है, और साथ ही उसका अपना जीवन भी इससे समृद्ध होता है। मानसिक सहजीवी मिलन में, दोनों शरीर स्वतंत्र होते हैं, लेकिन मनोवैज्ञानिक रूप से एक ही तरह का लगाव मौजूद होता है।

सहजीवी मिलन का निष्क्रिय रूप समर्पण है , या अगर हम नैदानिक शब्द का प्रयोग करें, तो स्वपीड़न। स्वपीड़नवादी व्यक्ति खुद को किसी ऐसे व्यक्ति का अभिन्न अंग बनाकर, जो उसे निर्देशित करता है, उसका मार्गदर्शन करता है, उसकी रक्षा करता है; जो मानो उसका जीवन और उसकी ऑक्सीजन है, अलगाव और पृथकता की असहनीय भावना से बच निकलता है। जिसके प्रति व्यक्ति समर्पित होता है, उसकी शक्ति बढ़ जाती है, चाहे वह व्यक्ति हो या देवता; वह सब कुछ है, मैं कुछ भी नहीं हूँ, सिवाय इसके कि मैं उसका एक अंश हूँ। एक अंश के रूप में, मैं महानता, शक्ति और निश्चितता का अंश हूँ। स्वपीड़नवादी व्यक्ति को निर्णय लेने की आवश्यकता नहीं होती, उसे कोई जोखिम नहीं उठाना पड़ता; वह कभी अकेला नहीं होता—लेकिन वह स्वतंत्र भी नहीं होता; उसकी कोई अखंडता नहीं होती; वह अभी पूरी तरह से जन्मा भी नहीं होता। धार्मिक संदर्भ में पूजा की वस्तु को मूर्ति कहा जाता है; धर्मनिरपेक्ष संदर्भ में

Machine Translated by Google

एक स्वपीड़क प्रेम संबंध का मूल तंत्र, मूर्तिपूजा, वही है। स्वपीड़क संबंध शारीरिक, यौन इच्छा के साथ मिश्रित हो सकता है; इस मामले में यह केवल एक समर्पण नहीं है जिसमें व्यक्ति का मन, बल्कि उसका पूरा शरीर भी शामिल होता है। भाग्य, बीमारी, लयबद्ध संगीत, नशीली दवाओं या सम्मोहन समाधि से उत्पन्न उन्मादी अवस्था के प्रति स्वपीड़क समर्पण हो सकता है—इन सभी उदाहरणों में व्यक्ति अपनी ईमानदारी का त्याग कर देता है, स्वयं को अपने से बाहर किसी व्यक्ति या वस्तु का साधन बना लेता है; उसे उत्पादक गतिविधि से जीवनयापन की समस्या का समाधान करने की आवश्यकता नहीं होती।

सहजीवी संलयन का सक्रिय रूप प्रभुत्व है , या, स्वपीड़नवाद के अनुरूप मनोवैज्ञानिक शब्द का प्रयोग करें तो, परपीड़न । परपीड़क व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति को अपना अभिन्न अंग बनाकर अपने अकेलेपन और कारावास की भावना से मुक्ति पाना चाहता है। वह किसी अन्य व्यक्ति को, जो उसकी पूजा करता है, अपने में समाहित करके स्वयं को बढ़ाता और उन्नत करता है।

परपीड़क व्यक्ति, आज्ञाकारी व्यक्ति पर उतना ही निर्भर होता है जितना कि आज्ञाकारी व्यक्ति, पहले वाले पर; दोनों में से कोई भी एक-दूसरे के बिना नहीं रह सकता। अंतर केवल इतना है कि परपीड़क व्यक्ति आदेश देता है, शोषण करता है, चोट पहुँचाता है, अपमानित करता है, और यह कि परपीड़क व्यक्ति आदेश देता है, उसका शोषण करता है, चोट पहुँचाता है, अपमानित होता है। यथार्थवादी दृष्टि से यह एक बड़ा अंतर है; एक गहरे भावनात्मक अर्थ में, यह अंतर उतना बड़ा नहीं है जितना कि उन दोनों में एक समानता है: अखंडता के बिना विलय। यदि कोई इसे समझता है, तो यह जानकर भी आश्चर्य नहीं होता कि आमतौर पर एक व्यक्ति परपीड़क और परपीड़क दोनों तरह से प्रतिक्रिया करता है, आमतौर पर अलग-अलग वस्तुओं के प्रति। हिटलर ने मुख्यतः लोगों के प्रति परपीड़क प्रतिक्रिया व्यक्त की, लेकिन भाग्य, इतिहास, प्रकृति की "उच्च शक्ति" के प्रति परपीड़क रूप से। उसका अंत—सामान्य विनाश के बीच आत्महत्या—उतना ही विशिष्ट है जितना कि उसकी सफलता का सपना—पूर्ण प्रभुत्व।

1 ई. फ्रॉम, एस्केप फ्रॉम फ्रीडम, राइनहार्ट एंड कंपनी, न्यूयॉर्क, 1941 में सैडिज्म और मासोकिज्म के अधिक विस्तृत अध्ययन की तुलना करें।

सहजीवी मिलन के विपरीत, परिपक्व प्रेम वह मिलन है जो व्यक्ति की अखंडता, उसके व्यक्तित्व को बनाए रखने की शर्त पर होता है । प्रेम मनुष्य में एक सक्रिय शक्ति है; एक ऐसी शक्ति जो मनुष्य को उसके साथियों से अलग करने वाली दीवारों को तोड़ देती है,

Machine Translated by Google

जो उसे दूसरों के साथ जोड़ता है; प्रेम उसे अलगाव और पृथकता की भावना से मुक्त करता है, फिर भी उसे स्वयं होने, अपनी अखंडता बनाए रखने की अनुमति देता है। प्रेम में विरोधाभास यह होता है कि दो प्राणी एक हो जाते हैं और फिर भी दो ही रहते हैं।

अगर हम कहें कि प्रेम एक क्रिया है, तो हमें एक कठिनाई का सामना करना पड़ता है जो "क्रिया" शब्द के अस्पष्ट अर्थ में निहित है। शब्द के आधुनिक प्रयोग में, "क्रिया" से आमतौर पर ऐसी क्रिया का अर्थ लगाया जाता है जो ऊर्जा के व्यय के माध्यम से किसी मौजूदा स्थिति में बदलाव लाती है। इस प्रकार, एक व्यक्ति को सक्रिय माना जाता है यदि वह व्यवसाय करता है, चिकित्सा का अध्ययन करता है, अंतहीन बेल्ट पर काम करता है, मेज़ बनाता है, या खेलकूद में लगा रहता है। इन सभी क्रियाओं में समानता यह है कि ये किसी बाहरी लक्ष्य की प्राप्ति की ओर निर्देशित होती हैं। जिस बात पर ध्यान नहीं दिया जाता, वह है क्रिया की प्रेरणा । उदाहरण के लिए, एक ऐसे व्यक्ति को लीजिए जो गहरी असुरक्षा और अकेलेपन की भावना से लगातार काम करने के लिए प्रेरित है; या किसी ऐसे व्यक्ति को लीजिए जो महत्वाकांक्षा या धन के लालच से प्रेरित है। इन सभी मामलों में व्यक्ति किसी जुनून का गुलाम होता है, और उसकी क्रिया वास्तव में एक "निष्क्रियता" होती है क्योंकि वह प्रेरित होता है; वह पीड़ित होता है, "कर्ता" नहीं। दूसरी ओर, शांतचित्त होकर चिंतन करते हुए बैठे व्यक्ति को, जिसका कोई उद्देश्य या लक्ष्य नहीं है, केवल स्वयं को और संसार के साथ अपनी एकता को अनुभव करने के लिए, "निष्क्रिय" माना जाता है, क्योंकि वह कुछ भी "कर" नहीं रहा होता। वास्तव में, एकाग्र ध्यान की यह वृत्ति सर्वोच्च क्रिया है, आत्मा की एक क्रिया, जो केवल आंतरिक स्वतंत्रता और स्वाधीनता की स्थिति में ही संभव है। क्रिया की एक आधुनिक अवधारणा, बाह्य लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए ऊर्जा के उपयोग को संदर्भित करती है; क्रिया की दूसरी अवधारणा, मनुष्य की अंतर्निहित शक्तियों के उपयोग को संदर्भित करती है , चाहे कोई भी बाह्य परिवर्तन लाया जाए या नहीं। क्रिया की दूसरी अवधारणा को स्पिनोज़ा ने सबसे स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया है। वह प्रभावों के बीच सक्रिय और निष्क्रिय प्रभावों, "क्रियाओं" और "आवेगों" के बीच अंतर करते हैं। सक्रिय प्रभाव के प्रयोग में, मनुष्य स्वतंत्र होता है, वह अपने प्रभाव का स्वामी होता है; निष्क्रिय प्रभाव के प्रयोग में, मनुष्य प्रेरित होता है, प्रेरणाओं का विषय जिसके बारे में वह स्वयं नहीं जानता। इस प्रकार स्पिनोजा इस कथन पर पहुँचते हैं कि सद्गुण और शक्ति एक ही हैं।2 ईर्ष्या, जलन, महत्वाकांक्षा, किसी भी प्रकार का लालच जुनून हैं; प्रेम एक क्रिया है, मानव शक्ति का अभ्यास है, जिसका अभ्यास केवल स्वतंत्रता में किया जा सकता है और कभी भी किसी मजबूरी के परिणामस्वरूप नहीं किया जा सकता।

2 स्पिनोज़ा, एथिक्स IV, डेफ़. 8.

Machine Translated by Google

प्रेम एक क्रिया है, निष्क्रिय प्रभाव नहीं; यह "अंदर खड़े रहना" है, "प्यार में पड़ना" नहीं। सबसे सामान्य रूप से, प्रेम के सक्रिय चरित्र का वर्णन यह कहकर किया जा सकता है कि प्रेम मुख्यतः देना है, लेना नहीं।

देना क्या है? इस प्रश्न का उत्तर जितना सरल प्रतीत होता है, वास्तव में यह अस्पष्टताओं और जटिलताओं से भरा है। सबसे व्यापक भ्रांति वह है जो यह मान लेती है कि देना किसी चीज़ का "त्याग" करना, किसी चीज़ से वंचित होना, त्याग करना है। जिस व्यक्ति का चरित्र ग्रहणशील, शोषक या संचयी प्रवृत्ति से आगे विकसित नहीं हुआ है, वह देने के कार्य को इसी प्रकार अनुभव करता है। विक्रयशील चरित्र देने को तैयार होता है, लेकिन केवल प्राप्त करने के बदले में; उसके लिए बिना प्राप्त किए देना धोखा है।3 जिन लोगों का मुख्य रुझान अनुत्पादक होता है, वे देने को दरिद्रता मानते हैं।

3
इन चरित्र अभिविन्यासों की विस्तृत चर्चा ई. फ्रॉम, मैन फॉर हिमसेल्फ, राइनहार्ट एंड कंपनी, न्यूयॉर्क, 1947, अध्याय 3, पृ. 54-117 में दी गई है।

इसलिए इस प्रकार के अधिकांश व्यक्ति देने से इनकार करते हैं। कुछ लोग त्याग के अर्थ में देने को एक पुण्य मानते हैं। उन्हें लगता है कि चूँकि देना कष्टदायक है, इसलिए देना चाहिए ; उनके लिए देने का पुण्य त्याग को स्वीकार करने के कार्य में ही निहित है। उनके लिए, यह आदर्श कि लेना से देना बेहतर है, इसका अर्थ है कि आनंद का अनुभव करने की अपेक्षा अभाव सहना बेहतर है। उत्पादक स्वभाव के लिए, देने का एक बिल्कुल अलग अर्थ है। देना सामर्थ्य की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है। देने के कार्य में ही, मैं अपनी शक्ति, अपने धन, अपनी शक्ति का अनुभव करता हूँ। बढ़ी हुई जीवन शक्ति और सामर्थ्य का यह अनुभव मुझे आनंद से भर देता है। मैं स्वयं को उमड़ता हुआ, खर्च करता हुआ, जीवंत, और इसलिए आनंदित अनुभव करता हूँ। देना, लेने से अधिक आनंददायक है, इसलिए नहीं कि यह अभाव है, बल्कि इसलिए कि देने के कार्य में मेरी जीवंतता की अभिव्यक्ति निहित है।

4 स्पिनोज़ा द्वारा दी गई आनंद की परिभाषा की तुलना करें।

इस सिद्धांत की वैधता को विभिन्न विशिष्ट घटनाओं पर लागू करके पहचानना कठिन नहीं है। इसका सबसे प्राथमिक उदाहरण यौन संबंध के क्षेत्र में निहित है। पुरुष यौन क्रिया की पराकाष्ठा देने की क्रिया में निहित है; पुरुष स्वयं को, अपने यौन अंग को, स्त्री को सौंप देता है। चरमोत्कर्ष के क्षण में वह अपना वीर्य उसे दे देता है। यदि वह ऐसा करता है, तो वह इसे देने से खुद को रोक नहीं सकता।

Machine Translated by Google

शक्तिशाली है। अगर वह दे नहीं सकता, तो वह नपुंसक है। स्त्री के लिए यह प्रक्रिया अलग नहीं है, हालाँकि कुछ ज़्यादा जटिल है। वह भी खुद को देती है; वह अपने स्त्री केंद्र के द्वार खोलती है; ग्रहण करने की क्रिया में, वह देती है। अगर वह देने की इस क्रिया में असमर्थ है, अगर वह केवल ग्रहण कर सकती है, तो वह शीतल है।

उसके साथ देने का कार्य फिर से घटित होता है, एक प्रेमी के रूप में नहीं, बल्कि एक माँ के रूप में। वह अपने भीतर पल रहे बच्चे को अपना सब कुछ दे देती है, वह अपना दूध पिलाती है

वह शिशु को अपनी शारीरिक गर्मी देती है। उसे न देना कष्टदायक होगा।

भौतिक वस्तुओं के क्षेत्र में, देने का अर्थ है धनवान होना। जिसके पास बहुत कुछ है वह धनी नहीं है, बल्कि वह है जो बहुत कुछ देता है । जो संग्रहकर्ता किसी चीज़ को खोने के बारे में चिंतित रहता है, वह मनोवैज्ञानिक रूप से, गरीब, दरिद्र व्यक्ति है, चाहे उसके पास कितना भी हो। जो स्वयं को देने में सक्षम है वह धनवान है। वह स्वयं को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में अनुभव करता है जो स्वयं को दूसरों को अर्पित कर सकता है। केवल वही व्यक्ति जो जीवनयापन के लिए न्यूनतम आवश्यकताओं से परे सभी चीज़ों से वंचित है, भौतिक वस्तुएँ देने के कार्य का आनंद लेने में असमर्थ होगा। लेकिन दैनिक अनुभव बताता है कि एक व्यक्ति जिसे न्यूनतम आवश्यकता मानता है वह उसके चरित्र पर उतना ही निर्भर करता है जितना कि उसकी वास्तविक संपत्ति पर। यह सर्वविदित है कि गरीब, अमीरों की तुलना में देने के लिए अधिक इच्छुक होते हैं। फिर भी, एक निश्चित सीमा के बाद गरीबी देना असंभव बना सकती है, और यह इतनी अपमानजनक है, न केवल उस पीड़ा के कारण जो यह सीधे तौर पर देती है, बल्कि इस तथ्य के कारण भी कि यह गरीबों को देने के आनंद से वंचित करती है।

हालाँकि, देने का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र भौतिक वस्तुओं का नहीं, बल्कि विशिष्ट रूप से मानवीय क्षेत्र है। एक व्यक्ति दूसरे को क्या देता है? वह खुद को देता है, अपनी सबसे कीमती चीज़ देता है, वह अपना जीवन देता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि वह दूसरे के लिए अपना जीवन बलिदान कर देता है—बल्कि वह उसे वह देता है जो उसके भीतर जीवित है; वह उसे अपना आनंद, अपनी रुचि, अपनी समझ, अपने ज्ञान, अपने हास्य, अपने दुःख—उसके भीतर जीवित सभी अभिव्यक्तियों और अभिव्यक्तियों को देता है। इस प्रकार अपना जीवन देकर, वह दूसरे व्यक्ति को समृद्ध करता है, वह अपनी जीवंतता को बढ़ाकर दूसरे की जीवंतता को बढ़ाता है। वह पाने के लिए नहीं देता; देना अपने आप में परम आनंद है। लेकिन देने में वह दूसरे व्यक्ति में कुछ न कुछ जीवंतता लाने से खुद को नहीं रोक पाता, और यह जो है

Machine Translated by Google

जीवन में लाया गया दान, उसे वापस देता है; सच्चा दान करते समय, वह उसे वापस पाने से खुद को नहीं रोक पाता। देने का अर्थ है, दूसरे व्यक्ति को भी दाता बनाना और वे दोनों उस आनंद में भागीदार होना जो उन्होंने जीवन में लाया है।

देने के कार्य में कुछ जन्म लेता है, और दोनों व्यक्ति उस जीवन के लिए कृतज्ञ होते हैं जो उनके लिए जन्मा है। विशेष रूप से प्रेम के संबंध में इसका अर्थ है: प्रेम वह शक्ति है जो प्रेम उत्पन्न करती है; नपुंसकता प्रेम उत्पन्न करने में असमर्थता है। इस विचार को मार्क्स ने बहुत खूबसूरती से व्यक्त किया है: "मान लीजिए," वे कहते हैं, "मनुष्य को मनुष्य के रूप में , और दुनिया के साथ उसके संबंध को मानवीय रूप में, और आप प्रेम के बदले प्रेम, विश्वास के बदले विश्वास आदि का आदान-प्रदान कर सकते हैं। यदि आप कला का आनंद लेना चाहते हैं, तो आपको कलात्मक रूप से प्रशिक्षित व्यक्ति होना चाहिए; यदि आप दूसरों पर प्रभाव डालना चाहते हैं, तो आपको ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जिसका दूसरों पर वास्तव में उत्तेजक और प्रेरक प्रभाव हो।"

मनुष्य और प्रकृति के साथ आपका प्रत्येक संबंध आपकी इच्छा के अनुरूप आपके वास्तविक, व्यक्तिगत जीवन की एक निश्चित अभिव्यक्ति होना चाहिए। यदि आप प्रेम को उद्घाटित किए बिना प्रेम करते हैं, अर्थात् यदि आपका प्रेम प्रेम उत्पन्न नहीं करता, यदि एक प्रेममय व्यक्ति के रूप में जीवन की अभिव्यक्ति के माध्यम से आप स्वयं को एक प्रिय व्यक्ति नहीं बनाते , तो आपका प्रेम नपुंसक है, एक दुर्भाग्य है।" 5

[5] "नेशनलोकोनोमी अंड फिलॉसॉफिक," 1844, कार्ल मार्क्स' डाई फ्रिहस्क्रिफटेन, अल्फ्रेड क्रोनर वेरलाग, स्टटगार्ट, 1953, पीपी. 300, 301 में प्रकाशित। (मेरा अनुवाद, ईएफ)

लेकिन प्रेम में केवल देने का अर्थ लेना ही नहीं होता। शिक्षक को उसके छात्र सिखाते हैं, अभिनेता को उसके दर्शक प्रेरित करते हैं, मनोविश्लेषक को उसके रोगी ठीक करते हैं—बशर्ते वे एक-दूसरे के साथ वस्तुओं की तरह व्यवहार न करें, बल्कि एक-दूसरे से सच्चे और उत्पादक रूप से जुड़े रहें।

इस तथ्य पर ज़ोर देना ज़रूरी नहीं है कि देने की क्रिया के रूप में प्रेम करने की क्षमता व्यक्ति के चरित्र विकास पर निर्भर करती है। यह मुख्यतः उत्पादक प्रवृत्ति की प्राप्ति को पूर्वापेक्षित करता है; इस प्रवृत्ति में व्यक्ति निर्भरता, आत्ममुग्ध सर्वशक्तिमानता, दूसरों का शोषण करने या संचय करने की इच्छा पर विजय प्राप्त कर लेता है, और अपनी मानवीय शक्तियों पर विश्वास, अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में अपनी शक्तियों पर निर्भर रहने का साहस प्राप्त कर लेता है। जिस हद तक इन गुणों का अभाव होता है, वह स्वयं को देने से—अर्थात प्रेम करने से —डरता है।

देने के तत्व से परे, प्रेम का सक्रिय चरित्र इस तथ्य से स्पष्ट हो जाता है कि इसमें हमेशा कुछ बुनियादी तत्व निहित होते हैं, जो सभी के लिए समान होते हैं।

Machine Translated by Google

प्रेम के सभी रूप। ये हैं देखभाल, ज़िम्मेदारी, सम्मान और ज्ञान।

प्रेम में देखभाल निहित है, यह बात एक माँ के अपने बच्चे के प्रति प्रेम में सबसे अधिक स्पष्ट होती है।
अगर हम उसे शिशु की देखभाल में कमी करते, उसे खाना खिलाने, नहलाने, उसे शारीरिक आराम देने में लापरवाही करते देखें, तो उसके प्रेम का कोई भी आश्वासन हमें सच्चा नहीं लगेगा; और अगर हम उसे बच्चे की देखभाल करते हुए देखें, तो हम उसके प्रेम से प्रभावित होते हैं। जानवरों या फूलों के प्रति प्रेम के मामले में भी यह अलग नहीं है। अगर कोई स्त्री हमें बताए कि उसे फूल बहुत पसंद हैं, और हम देखें कि वह उन्हें पानी देना भूल गई है, तो हम फूलों के प्रति उसके "प्रेम" पर विश्वास नहीं करेंगे। प्रेम उस चीज़ के जीवन और विकास के लिए सक्रिय चिंता है जिससे हम प्रेम करते हैं। जहाँ इस सक्रिय चिंता का अभाव है, वहाँ प्रेम नहीं है। प्रेम के इस तत्व का योना की पुस्तक में सुंदर वर्णन किया गया है। परमेश्वर ने योना को नीनवे जाकर उसके निवासियों को चेतावनी देने के लिए कहा है कि अगर वे अपने बुरे कर्मों से नहीं सुधरे, तो उन्हें दण्ड दिया जाएगा। योना अपने मिशन से भाग जाता है क्योंकि उसे डर है कि नीनवे के लोग पश्चाताप करेंगे और परमेश्वर उन्हें क्षमा कर देगा। वह एक ऐसा व्यक्ति है जिसके पास व्यवस्था और कानून की गहरी समझ है, लेकिन प्रेम नहीं है। हालाँकि, भागने की कोशिश में, वह खुद को एक व्हेल के पेट में पाता है, जो उस अलगाव और कैद की स्थिति का प्रतीक है जो उसके प्रेम और एकजुटता की कमी ने उस पर ला दी थी। ईश्वर उसे बचाता है, और योना नीनवे जाता है। वह निवासियों को वैसा ही उपदेश देता है जैसा ईश्वर ने उसे बताया था, और वही घटित होता है जिसका उसे डर था। नीनवे के लोग अपने पापों का पश्चाताप करते हैं, अपने आचरण सुधारते हैं, और ईश्वर उन्हें क्षमा कर देते हैं और शहर को नष्ट न करने का निर्णय लेते हैं। योना बेहद क्रोधित और निराश होता है; वह चाहता था कि "न्याय" हो, दया नहीं। अंततः उसे उस पेड़ की छाया में थोड़ा आराम मिलता है जिसे ईश्वर ने उसे धूप से बचाने के लिए उगाया था। लेकिन जब ईश्वर उस पेड़ को सुखा देते हैं, तो योना निराश हो जाता है और गुस्से में ईश्वर से शिकायत करता है। परमेश्वर उत्तर देते हैं: "जिस रेंड़ के पेड़ के लिए तूने न परिश्रम किया, न उसे बढ़ाया, जो एक ही रात में हुआ, और एक ही रात में नाश हो गया, उस पर तूने तरस खाया है। फिर क्या मैं उस बड़े नगर नीनवे को न छोड़ूँ, जिसमें साठ हज़ार से ज़्यादा लोग हैं जो अपने दाहिने बाएँ हाथों का भेद नहीं पहिचानते; और उसमें बहुत से घरेलू पशु भी हैं?" योना को दिए गए परमेश्वर के उत्तर को प्रतीकात्मक रूप से समझा जाना चाहिए।

परमेश्वर योना को समझाते हैं कि प्रेम का सार किसी चीज़ के लिए "परिश्रम" करना और "किसी चीज़ को विकसित करना" है, प्रेम और परिश्रम अविभाज्य हैं। व्यक्ति उसी से प्रेम करता है जिसके लिए वह परिश्रम करता है, और उसी के लिए परिश्रम करता है जिससे वह प्रेम करता है।

देखभाल और चिंता प्रेम का एक और पहलू है; जिम्मेदारी।
आजकल जिम्मेदारी का मतलब अक्सर कर्तव्य से लिया जाता है, जो कि किसी पर थोपा गया कार्य है।

Machine Translated by Google

बाहर से किसी पर। लेकिन ज़िम्मेदारी, अपने वास्तविक अर्थ में, एक पूरी तरह से स्वैच्छिक कार्य है; यह किसी अन्य मनुष्य की व्यक्त या अव्यक्त आवश्यकताओं के प्रति मेरी प्रतिक्रिया है। "ज़िम्मेदार" होने का अर्थ है "प्रतिक्रिया" देने में सक्षम और तत्पर होना। योना नीनवे के निवासियों के प्रति ज़िम्मेदार महसूस नहीं करता था। वह, कैन की तरह, पूछ सकता था: "क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूँ?" प्रेम करने वाला व्यक्ति उत्तर देता है। उसके भाई का जीवन केवल उसके भाई का नहीं, बल्कि उसका अपना मामला है। वह अपने साथियों के लिए ज़िम्मेदार महसूस करता है, जैसे वह ज़िम्मेदार महसूस करता है

अपने लिए। माँ और उसके शिशु के मामले में, यह ज़िम्मेदारी मुख्यतः शारीरिक ज़रूरतों की देखभाल से संबंधित है। वयस्कों के बीच प्रेम में, यह मुख्यतः दूसरे व्यक्ति की मानसिक ज़रूरतों से संबंधित है।

अगर प्रेम का तीसरा तत्व, सम्मान, न होता, तो ज़िम्मेदारी आसानी से प्रभुत्व और अधिकार जमाने की भावना में बदल सकती थी । सम्मान भय और विस्मय नहीं है; यह शब्द के मूल (रेस्पिसेरे = देखना) के अनुसार, किसी व्यक्ति को उसके वास्तविक रूप में देखने, उसके अद्वितीय व्यक्तित्व के प्रति जागरूक होने की क्षमता को दर्शाता है। सम्मान का अर्थ है दूसरे व्यक्ति के प्रति चिंता।

वह जैसा है वैसा ही विकसित और विकसित होना चाहिए। इस प्रकार, सम्मान का तात्पर्य शोषण के अभाव से है। मैं चाहता हूँ कि प्रिय व्यक्ति अपने लिए, और अपने तरीकों से विकसित और विकसित हो, न कि मेरी सेवा करने के उद्देश्य से। अगर मैं दूसरे व्यक्ति से प्रेम करता हूँ, तो मैं उसके साथ एकाकार महसूस करता हूँ, लेकिन उसके साथ वैसे ही जैसा वह है, न कि उस रूप में जैसा मुझे उसे अपने उपयोग की वस्तु के रूप में चाहिए। यह स्पष्ट है कि सम्मान तभी संभव है जब मैंने स्वतंत्रता प्राप्त कर ली हो; अगर मैं बिना बैसाखी के खड़ा और चल सकता हूँ, बिना किसी पर हावी हुए और किसी का शोषण किए। सम्मान केवल स्वतंत्रता के आधार पर मौजूद है: "l'amour est l'enfant de la libert□" जैसा कि एक पुराने फ्रांसीसी गीत में कहा गया है; प्रेम स्वतंत्रता की संतान है, प्रभुत्व की कभी नहीं।

किसी व्यक्ति को जाने बिना उसका सम्मान करना संभव नहीं है; देखभाल और जिम्मेदारी अंधी हो जाएंगी यदि वे ज्ञान द्वारा निर्देशित न हों।
ज्ञान खोखला होगा यदि वह चिंता से प्रेरित न हो। ज्ञान की कई परतें होती हैं; ज्ञान, जो प्रेम का एक पहलू है, वह परिधि पर नहीं रहता, बल्कि मूल तक पहुँचता है। यह तभी संभव है जब मैं अपनी चिंता से ऊपर उठकर दूसरे व्यक्ति को उसकी अपनी दृष्टि से देख सकूँ। उदाहरण के लिए, मैं जान सकता हूँ कि कोई व्यक्ति क्रोधित है, भले ही वह इसे खुलकर न दिखाए; लेकिन मैं उसे उससे कहीं अधिक गहराई से जान सकता हूँ; तब मैं जान सकता हूँ कि वह चिंतित और परेशान है; कि वह अकेलापन महसूस करता है, कि वह

Machine Translated by Google

दोषी। तब मुझे पता चलता है कि उसका गुस्सा किसी गहरी बात का प्रकटीकरण मात्र है, और मैं उसे चिंतित और शर्मिंदा, यानी पीड़ित व्यक्ति के रूप में देखता हूँ, न कि क्रोधित व्यक्ति के रूप में।

ज्ञान का प्रेम की समस्या से एक और, और अधिक मौलिक, संबंध है। अपने अलगाव की कैद से बाहर निकलने के लिए किसी दूसरे व्यक्ति के साथ घुलने-मिलने की मूलभूत आवश्यकता, एक और विशिष्ट मानवीय इच्छा से, यानी "मनुष्य के रहस्य" को जानने की, निकटता से जुड़ी हुई है। जहाँ जीवन अपने मात्र जैविक पहलुओं में एक चमत्कार और रहस्य है, वहीं मनुष्य अपने मानवीय पहलुओं में स्वयं के लिए—और अपने साथी मनुष्यों के लिए—एक अथाह रहस्य है। हम स्वयं को जानते हैं, और फिर भी, चाहे हम कितने भी प्रयास कर लें, हम स्वयं को नहीं जानते। हम अपने साथी मनुष्य को जानते हैं, और फिर भी हम उसे नहीं जानते, क्योंकि हम कोई वस्तु नहीं हैं, और हमारा साथी मनुष्य कोई वस्तु नहीं है। हम अपने अस्तित्व की, या किसी और के अस्तित्व की, जितनी गहराई में पहुँचते हैं, ज्ञान का लक्ष्य उतना ही हमसे दूर होता जाता है। फिर भी, हम मनुष्य की आत्मा के रहस्य में, उसके अंतरतम केंद्र में, जो "वह" है, प्रवेश करने की इच्छा से खुद को रोक नहीं पाते।

रहस्य जानने का एक ही तरीका है, एक हताश करने वाला तरीका: वह है किसी दूसरे व्यक्ति पर पूर्ण शक्ति का होना; वह शक्ति जो उसे वह करने पर मजबूर करती है जो हम चाहते हैं, वह महसूस करने पर मजबूर करती है जो हम चाहते हैं, वह सोचने पर मजबूर करती है जो हम चाहते हैं; जो उसे एक वस्तु, हमारी वस्तु, हमारी संपत्ति में बदल देती है। जानने के इस प्रयास की चरम सीमा परपीड़न की चरम सीमा में निहित है, किसी इंसान को कष्ट देने की इच्छा और क्षमता; उसे यातना देना, उसे उसके दुख में अपना रहस्य प्रकट करने के लिए मजबूर करना। मनुष्य के, उसके और इसलिए हमारे अपने, रहस्य को भेदने की इस लालसा में क्रूरता और विध्वंस की गहराई और तीव्रता की एक अनिवार्य प्रेरणा निहित है। इस विचार को इसहाक बेबेल ने बहुत ही संक्षिप्त रूप में व्यक्त किया है। वह रूसी गृहयुद्ध में एक साथी अधिकारी, जिसने अभी-अभी अपने पूर्व मालिक को मौत के घाट उतार दिया है, को उद्धृत करते हैं: "गोली चलाने से—मैं इसे इस तरह कहूँगा—गोली चलाने से आप केवल एक व्यक्ति से छुटकारा पा सकते हैं... गोली चलाने से आप कभी भी आत्मा तक नहीं पहुँच सकते, यह नहीं जान सकते कि वह किसी व्यक्ति में कहाँ है और वह स्वयं को कैसे प्रकट करती है।"

लेकिन मैं खुद को नहीं छोड़ता, और एक से ज़्यादा बार मैंने एक दुश्मन को एक घंटे से ज़्यादा समय तक रौंदा है। देखिए, मैं जानना चाहता हूँ कि ज़िंदगी असल में क्या है, हमारे रास्ते में ज़िंदगी कैसी होती है।" 6

6 आई. बेबेल, द कलेक्टेड स्टोरीज़, क्राइटेरियन बुक, न्यूयॉर्क, 1955.

बच्चों में हम अक्सर ज्ञान के इस मार्ग को खुलेआम देखते हैं। बच्चा किसी चीज़ को जानने के लिए उसे तोड़ता है, तोड़ता है; या फिर किसी जानवर को

Machine Translated by Google

अलग; एक तितली के पंखों को क्रूरता से नोच लेता है ताकि उसे जान सके, उसका राज़ उजागर कर सके। यह क्रूरता स्वयं किसी गहरी चीज़ से प्रेरित है: चीज़ों और जीवन के राज़ जानने की चाहत।

"रहस्य" जानने का दूसरा रास्ता प्रेम है। प्रेम दूसरे व्यक्ति में सक्रिय रूप से प्रवेश है, जिसमें जानने की मेरी इच्छा एकता द्वारा शांत हो जाती है। इस विलयन में मैं तुम्हें जानता हूँ, मैं स्वयं को जानता हूँ, मैं सबको जानता हूँ—और मैं कुछ भी "नहीं" जानता।

मैं जानता हूँ कि मनुष्य के लिए जीवित वस्तु का ज्ञान केवल एक ही तरीके से संभव है - एकता के अनुभव से - न कि किसी ऐसे ज्ञान से जो हमारा विचार दे सकता है।
परपीड़न रहस्य जानने की इच्छा से प्रेरित है, फिर भी मैं पहले की तरह ही अज्ञानी हूँ। मैंने दूसरे प्राणी के टुकड़े-टुकड़े कर दिए हैं, फिर भी मैंने बस उसे नष्ट ही किया है। प्रेम ही ज्ञान का एकमात्र मार्ग है, जो मिलन की क्रिया में मेरी खोज का उत्तर देता है। प्रेम करने की क्रिया में, स्वयं को समर्पित करने की क्रिया में, दूसरे व्यक्ति में प्रवेश करने की क्रिया में, मैं स्वयं को पाता हूँ, मैं स्वयं को खोजता हूँ, मैं हम दोनों को खोजता हूँ, मैं मनुष्य को खोजता हूँ।

स्वयं को और अपने साथी मनुष्यों को जानने की लालसा डेल्फ़िक आदर्श वाक्य "स्वयं को जानो" में व्यक्त की गई है। यह समस्त मनोविज्ञान का मूल है। लेकिन चूँकि इच्छा मनुष्य के सम्पूर्ण स्वरूप, उसके अंतरतम रहस्य को जानने की है, इसलिए यह इच्छा सामान्य ज्ञान से, केवल विचारों से प्राप्त ज्ञान से कभी पूरी नहीं हो सकती। यदि हम स्वयं को हज़ार गुना अधिक भी जान लें, तो भी हम कभी भी तह तक नहीं पहुँच पाएँगे। हम तब भी अपने लिए एक पहेली बने रहेंगे, जैसे हमारे साथी मनुष्य हमारे लिए एक पहेली बने रहेंगे। पूर्ण होने का एकमात्र तरीका

ज्ञान प्रेम की क्रिया में निहित है : यह क्रिया विचारों से परे है, शब्दों से परे है। यह मिलन के अनुभव में एक साहसिक डुबकी है।
हालाँकि, विचारों में ज्ञान, यानी मनोवैज्ञानिक ज्ञान, प्रेम की क्रिया में पूर्ण ज्ञान के लिए एक आवश्यक शर्त है। मुझे दूसरे व्यक्ति और स्वयं को वस्तुनिष्ठ रूप से जानना होगा, ताकि मैं उसकी वास्तविकता को देख सकूँ, या यूँ कहें कि उसके बारे में मेरे मन में जो भ्रम हैं, जो तर्कहीन रूप से विकृत चित्र है, उन पर विजय पा सकूँ। जब मैं किसी मनुष्य को वस्तुनिष्ठ रूप से जानूँगा, तभी मैं उसे उसके परम सार में, प्रेम की क्रिया में, जान पाऊँगा।7

Machine Translated by Google

उपरोक्त कथन समकालीन पश्चिमी संस्कृति में मनोविज्ञान की भूमिका के लिए एक महत्वपूर्ण निहितार्थ रखता है। हालाँकि मनोविज्ञान की अत्यधिक लोकप्रियता निश्चित रूप से जहाँ एक ओर मनुष्य के ज्ञान में रुचि का संकेत मिलता है, वहीं दूसरी ओर यह आज मानवीय संबंधों में प्रेम के मूलभूत अभाव को भी दर्शाता है। इस प्रकार मनोवैज्ञानिक ज्ञान पूर्ण ज्ञान का विकल्प बन जाता है। प्रेम की ओर एक कदम होने के बजाय, प्रेम के कार्य में ज्ञान का समावेश करें।

मनुष्य को जानने की समस्या, ईश्वर को जानने की धार्मिक समस्या के समानान्तर है। पारंपरिक पश्चिमी धर्मशास्त्र में, ईश्वर को विचार द्वारा जानने का, ईश्वर के बारे में कथन करने का प्रयास किया जाता है । यह मान लिया जाता है कि मैं अपने विचारों से ईश्वर को जान सकता हूँ। रहस्यवाद में, जो एकेश्वरवाद का परिणामी परिणाम है (जैसा कि मैं आगे दिखाने का प्रयास करूँगा), ईश्वर को विचार द्वारा जानने का प्रयास छोड़ दिया जाता है, और इसके स्थान पर ईश्वर के साथ एकता के अनुभव को स्थान दिया जाता है जिसमें ईश्वर के बारे में ज्ञान के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता—और न ही कोई आवश्यकता।

मनुष्य के साथ, या धार्मिक दृष्टि से कहें तो ईश्वर के साथ मिलन का अनुभव किसी भी तरह से तर्कहीन नहीं है। इसके विपरीत, जैसा कि अल्बर्ट श्वित्ज़र ने बताया है, यह बुद्धिवाद का परिणाम है, इसका सबसे साहसिक और क्रांतिकारी परिणाम। यह हमारे ज्ञान की मूलभूत सीमाओं के ज्ञान पर आधारित है, न कि आकस्मिक। यह ज्ञान है कि हम मनुष्य और ब्रह्मांड के रहस्य को कभी "समझ" नहीं पाएँगे, लेकिन फिर भी, प्रेम के द्वारा हम इसे जान सकते हैं।

एक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की अपनी सीमाएँ हैं, और जिस प्रकार धर्मशास्त्र का तार्किक परिणाम रहस्यवाद है, उसी प्रकार मनोविज्ञान का अंतिम परिणाम प्रेम है।

देखभाल, ज़िम्मेदारी, सम्मान और ज्ञान परस्पर एक-दूसरे पर निर्भर हैं। ये उन दृष्टिकोणों का एक सिंड्रोम हैं जो एक परिपक्व व्यक्ति में पाए जाते हैं; यानी उस व्यक्ति में जो अपनी शक्तियों को उत्पादक रूप से विकसित करता है, जो केवल वही पाना चाहता है जिसके लिए उसने मेहनत की है, जिसने सर्वज्ञता और सर्वशक्तिमानता के आत्ममुग्ध स्वप्न त्याग दिए हैं, जिसने उस आंतरिक शक्ति के आधार पर विनम्रता अर्जित की है जो केवल वास्तविक उत्पादक गतिविधि ही दे सकती है।

अब तक मैंने प्रेम को मानवीय अलगाव पर विजय पाने, मिलन की लालसा की पूर्ति के रूप में वर्णित किया है। लेकिन मिलन की सार्वभौमिक, अस्तित्वगत आवश्यकता से ऊपर एक अधिक विशिष्ट, जैविक आवश्यकता उभरती है: पुरुष और स्त्री ध्रुवों के बीच मिलन की इच्छा। इस ध्रुवीकरण का विचार सबसे स्पष्ट रूप से उस मिथक में व्यक्त होता है कि मूल रूप से पुरुष

Machine Translated by Google

और स्त्री एक थीं, यानी वे दो हिस्सों में बँट गईं, और तब से प्रत्येक पुरुष अपने खोए हुए स्त्री अंश को फिर से उसके साथ एकाकार करने के लिए खोज रहा है। (लिंगों की मूल एकता का यही विचार बाइबिल की उस कहानी में भी निहित है जिसमें हव्वा को आदम की पसली से बनाया गया था, हालाँकि इस कहानी में, पितृसत्तात्मकता की भावना में, स्त्री को पुरुष से गौण माना गया है।) इस मिथक का अर्थ बिल्कुल स्पष्ट है। यौन ध्रुवीकरण पुरुष को एक विशिष्ट तरीके से, दूसरे लिंग के साथ, मिलन की तलाश में ले जाता है। पुरुष और स्त्री के बीच का ध्रुवीकरण प्रत्येक पुरुष और प्रत्येक स्त्री के भीतर भी विद्यमान है । जिस प्रकार शारीरिक रूप से पुरुष और स्त्री में विपरीत लिंग के हार्मोन होते हैं, उसी प्रकार वे मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी उभयलिंगी होते हैं। वे अपने भीतर ग्रहण करने और भेदने, पदार्थ और आत्मा के सिद्धांत को धारण करते हैं। पुरुष—और स्त्री—अपने भीतर केवल अपनी स्त्री और पुरुष ध्रुवता के मिलन में ही मिलन पाते हैं। यह ध्रुवता ही समस्त रचनात्मकता का आधार है।

पुरुष-महिला ध्रुवीकरण भी पारस्परिक रचनात्मकता का आधार है।
जैविक रूप से यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि शुक्राणु और अंडाणु का मिलन ही संतान के जन्म का आधार है। लेकिन विशुद्ध रूप से मानसिक क्षेत्र में यह अलग नहीं है; पुरुष और स्त्री के बीच प्रेम में, दोनों का पुनर्जन्म होता है। (समलैंगिक विचलन इस ध्रुवीकृत मिलन को प्राप्त करने में विफलता है, और इस प्रकार समलैंगिक व्यक्ति कभी न सुलझने वाले अलगाव के दर्द से पीड़ित होता है, हालाँकि, यह विफलता उसे उस औसत विषमलैंगिक व्यक्ति के समान ही होती है जो प्रेम नहीं कर सकता।)

प्रकृति में पुरुष और स्त्री तत्त्व की एक ही ध्रुवता विद्यमान है; न केवल, जैसा कि पशुओं और पौधों में स्पष्ट है, बल्कि दो मूलभूत कार्यों, ग्रहण करने और भेदने, की ध्रुवता में भी। यह पृथ्वी और वर्षा, नदी और सागर, रात और दिन, अंधकार और प्रकाश, पदार्थ और आत्मा की ध्रुवता है। इस विचार को महान मुस्लिम कवि और रहस्यवादी रूमी ने बहुत खूबसूरती से व्यक्त किया है:

वास्तव में, प्रेमी कभी भी अपनी प्रेमिका द्वारा खोजे बिना कुछ नहीं खोजता।

जब इस हृदय में प्रेम की बिजली कौंधे , तो समझ लेना कि उस हृदय में प्रेम है ।

जब ईश्वर के प्रति प्रेम तुम्हारे हृदय में उमड़ता है, तो इसमें कोई संदेह नहीं कि ईश्वर ने
तुम्हारे लिए प्यार.

Machine Translated by Google

एक हाथ के बिना दूसरे हाथ से ताली की आवाज नहीं आती।

ईश्वरीय बुद्धि ही भाग्य है और आदेश ने हमें एक दूसरे का प्रेमी बना दिया है।

उस पूर्व-निर्धारण के कारण संसार का प्रत्येक भाग अपने साथी के साथ जोड़ा हुआ है।

बुद्धिमानों की दृष्टि में, स्वर्ग पुरुष है और पृथ्वी स्त्री है: पृथ्वी उस चीज़ को पालती है जिसे स्वर्ग गिरा देता है।

जब पृथ्वी में गर्मी की कमी होती है, तो स्वर्ग उसे भेजता है; जब वह अपनी ताजगी और नमी खो देती है, तो स्वर्ग उसे पुनः स्थापित करता है।

स्वर्ग अपने चक्कर लगाता रहता है, जैसे पति अपनी पत्नी के लिए भोजन खोजता रहता है;

और पृथ्वी गृहकार्य में व्यस्त है: वह जन्मों का ध्यान रखती है और अपने गर्भ में पल रहे शिशु को दूध पिलाती है।

पृथ्वी और स्वर्ग को बुद्धि से संपन्न मानो,

क्योंकि वे बुद्धिमान प्राणियों का काम करते हैं।

जब तक ये दोनों एक दूसरे से सुख का स्वाद नहीं लेते, तब तक वे एक दूसरे से क्यों प्रेम करते हैं?
प्रेमी युगलों की तरह एक साथ रेंगना?

पृथ्वी के बिना फूल और पेड़ कैसे खिलेंगे?

तो फिर, स्वर्ग का पानी और गर्मी क्या पैदा करेगी?

जैसे परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री में यह इच्छा डाली कि संसार
उनके संघ द्वारा संरक्षित किया जाना चाहिए,

अतः उसने अस्तित्व के प्रत्येक भाग में दूसरे भाग की इच्छा को स्थापित कर दिया है।

दिन और रात बाह्य रूप से शत्रु हैं; फिर भी दोनों का उद्देश्य एक ही है,

अपने आपसी काम को बेहतर बनाने के लिए एक दूसरे से प्यार करते हैं,

Machine Translated by Google

रात्रि के बिना, मनुष्य की प्रकृति को कोई आय प्राप्त नहीं होगी, इसलिए
डे के लिए खर्च करने को कुछ भी नहीं होगा.8

[8] आर.ए. निकोलसन, रूरल, जॉर्ज एलन और अनविन, लिमिटेड, लंदन, 1950, पृ. 122-3.

पुरुष-स्त्री ध्रुवीकरण की समस्या प्रेम और यौन संबंधों के विषय पर कुछ और चर्चा की ओर ले जाती है। मैंने पहले भी फ्रायड की इस भूल के बारे में बात की है कि वे प्रेम को केवल यौन संबंधों की अभिव्यक्ति—या उदात्तीकरण—माना करते हैं।

यह समझने के बजाय कि यौन इच्छा प्रेम और मिलन की आवश्यकता का एक प्रकटीकरण है, सहज वृत्ति पर ध्यान केंद्रित करना ज़रूरी है। लेकिन फ्रायड की ग़लती और भी गहरी है।
अपने शारीरिक भौतिकवाद के अनुरूप, वह यौन प्रवृत्ति को शरीर में रासायनिक रूप से उत्पन्न तनाव का परिणाम मानते हैं, जो पीड़ादायक होता है और राहत की तलाश करता है।

यौन इच्छा का उद्देश्य इस कष्टदायक तनाव को दूर करना है; यौन संतुष्टि इसी निष्कासन की सिद्धि में निहित है। यह दृष्टिकोण इस हद तक सत्य है कि यौन इच्छा उसी प्रकार कार्य करती है जैसे शरीर के अल्पपोषण के समय भूख या प्यास कार्य करती है। इस अवधारणा में, यौन इच्छा एक खुजली है, और यौन संतुष्टि खुजली का निवारण है।

वास्तव में, जहाँ तक कामुकता की इस अवधारणा का संबंध है, हस्तमैथुन आदर्श यौन संतुष्टि होगी। विरोधाभासी रूप से, फ्रायड कामुकता के मनो-जैविक पहलू, पुरुष-स्त्री ध्रुवीकरण, और इस ध्रुवीकरण को एकाकार करके पाटने की इच्छा को नज़रअंदाज़ करते हैं। यह विचित्र त्रुटि संभवतः फ्रायड के अति पितृसत्तात्मकतावाद के कारण हुई, जिसने उन्हें यह धारणा बनाने पर मजबूर किया कि कामुकता अपने आप में पुरुषोचित है, और इस प्रकार उन्होंने विशिष्ट स्त्री कामुकता की उपेक्षा की। उन्होंने इस विचार को " यौन सिद्धांत में तीन योगदान" में व्यक्त किया, यह कहते हुए कि कामेच्छा हमेशा "पुरुषोचित प्रकृति" की होती है, चाहे वह पुरुष में हो या स्त्री में। यही विचार फ्रायड के सिद्धांत में तर्कसंगत रूप में भी व्यक्त किया गया है कि छोटा लड़का स्त्री को एक नपुंसक पुरुष के रूप में अनुभव करता है, और वह स्वयं पुरुष जननांग के नुकसान के लिए विभिन्न क्षतिपूर्ति की तलाश करती है।

लेकिन महिला कोई नपुंसक पुरुष नहीं है, और उसकी कामुकता विशेष रूप से स्त्रैण है, न कि "पुरुष प्रकृति" की।

लिंगों के बीच यौन आकर्षण केवल आंशिक रूप से तनाव को दूर करने की आवश्यकता से प्रेरित होता है; यह मुख्य रूप से दूसरे के साथ मिलन की आवश्यकता से प्रेरित होता है।

Machine Translated by Google

यौन ध्रुव। वास्तव में, कामुक आकर्षण केवल यौन आकर्षण में ही व्यक्त नहीं होता। चरित्र में पुरुषत्व और स्त्रीत्व के साथ-साथ यौन क्रिया में भी पुरुषत्व होता है । पुरुषत्व को प्रवेश, मार्गदर्शन, सक्रियता, अनुशासन और साहसिकता के गुणों से परिभाषित किया जा सकता है; जबकि स्त्रीत्व को उत्पादक ग्रहणशीलता, सुरक्षा, यथार्थवाद जैसे गुणों से परिभाषित किया जा सकता है।

सहनशक्ति, मातृत्व। (यह हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति में दोनों गुण मिश्रित होते हैं, लेकिन "उसके" या "उसकी" लिंग से संबंधित गुणों की प्रधानता होती है।) अक्सर, यदि किसी पुरुष के पुरुषोचित गुण भावनात्मक रूप से बच्चा बने रहने के कारण कमज़ोर हो जाते हैं, तो वह यौन संबंधों में अपनी पुरुष भूमिका पर विशेष ज़ोर देकर इस कमी की भरपाई करने की कोशिश करेगा। इसका परिणाम डॉन जुआन होता है, जिसे यौन संबंधों में अपनी पुरुष प्रधानता साबित करनी होती है क्योंकि वह

चरित्रगत दृष्टि से अपनी पुरुषत्व के प्रति अनिश्चित। जब पुरुषत्व का पक्षाघात चरम पर होता है, तो परपीड़न (बल प्रयोग) पुरुषत्व का मुख्य—विकृत—विकल्प बन जाता है। यदि स्त्री कामुकता कमज़ोर या विकृत हो जाती है, तो वह पुरुषपीड़ावाद या अधिकार-बोध में बदल जाती है।

फ्रायड की सेक्स के अति-मूल्यांकन के लिए आलोचना की गई है। यह आलोचना अक्सर फ्रायड की प्रणाली से एक ऐसे तत्व को हटाने की इच्छा से प्रेरित थी जो पारंपरिक विचारधारा वाले लोगों में आलोचना और शत्रुता को जन्म देता था।

फ्रायड ने इस प्रेरणा को गहराई से समझा और इसी कारण से उन्होंने सेक्स के अपने सिद्धांत को बदलने के हर प्रयास का विरोध किया। वास्तव में, अपने समय में, फ्रायड का सिद्धांत एक चुनौतीपूर्ण और क्रांतिकारी चरित्र रखता था।

लेकिन जो बात 1900 के आसपास सच थी, वह पचास साल बाद सच नहीं है।
यौन आचार-विचार इतने बदल गए हैं कि फ्रायड के सिद्धांत अब पश्चिमी मध्य वर्ग को चौंकाते नहीं हैं, और यह एक विचित्र प्रकार का कट्टरवाद है, जबकि आज भी रूढ़िवादी विश्लेषक सोचते हैं कि वे साहसी हैं।

और फ्रायड के यौन सिद्धांत का बचाव करने में क्रांतिकारी। वास्तव में, उनका मनोविश्लेषण का तरीका अनुरूपतावादी है, और ऐसे मनोवैज्ञानिक प्रश्न उठाने की कोशिश नहीं करता जिनसे समकालीन समाज की आलोचना हो।

फ्रायड के सिद्धांत की मेरी आलोचना यह नहीं है कि उन्होंने अतिशयोक्ति पर बल दिया

Machine Translated by Google

सेक्स के बारे में तो नहीं, लेकिन सेक्स को गहराई से समझने में उनकी असफलता के बारे में।

उन्होंने पारस्परिक भावनाओं के महत्व की खोज में पहला कदम उठाया; अपने दार्शनिक आधारों के अनुसार उन्होंने उन्हें शारीरिक रूप से समझाया। मनोविश्लेषण के आगे के विकास में, फ्रायड की अंतर्दृष्टि को शारीरिक से जैविक और अस्तित्वगत आयाम में अनुवादित करके फ्रायड की अवधारणा को सही और गहरा करना आवश्यक है।9

9
फ्रायड ने स्वयं अपने बाद के कार्यों में इस दिशा में पहला कदम उठाया।

जीवन और मृत्यु की वृत्तियों की अवधारणा। संश्लेषण और एकीकरण के सिद्धांत के रूप में पूर्व (इरोस) की उनकी अवधारणा, उनकी कामेच्छा की अवधारणा से बिल्कुल अलग धरातल पर है।

अवधारणा। लेकिन इस तथ्य के बावजूद कि जीवन और मृत्यु की प्रवृत्ति के सिद्धांत को रूढ़िवादी विश्लेषकों द्वारा स्वीकार किया गया था, इस स्वीकृति से कामेच्छा में कोई मौलिक संशोधन नहीं हुआ

अवधारणा, विशेष रूप से जहां तक नैदानिक कार्य का संबंध है।

2. माता-पिता और बच्चे के बीच प्रेम

जन्म के समय शिशु को मृत्यु का भय अवश्य होगा, यदि उसकी दयालु नियति उसे माँ से वियोग और गर्भाश्य के भीतर के अस्तित्व की चिंता से मुक्त न रखे। जन्म के बाद भी, शिशु जन्म से पहले जैसा था, वैसा नहीं होता; वह वस्तुओं को पहचान नहीं पाता, उसे अभी स्वयं का और संसार का अपने से बाहर होने का बोध नहीं होता। उसे केवल ऊष्मा और भोजन की सकारात्मक उत्तेजना का ही अनुभव होता है, और वह अभी ऊष्मा और भोजन में उसके स्रोत, अर्थात् माँ, से भेद नहीं कर पाता। माँ ऊष्मा है , माँ भोजन है , माँ संतुष्टि और सुरक्षा की उल्लासमय अवस्था है । फ्रायड के शब्दों में, यह अवस्था आत्मप्रशंसा की अवस्था है।

बाहरी वास्तविकता, व्यक्ति और वस्तुएँ, केवल शरीर की आंतरिक स्थिति को संतुष्ट या निराश करने के संदर्भ में ही अर्थ रखती हैं। वास्तविक केवल वही है जो भीतर है; जो बाहर है वह केवल मेरी आवश्यकताओं के संदर्भ में ही वास्तविक है—कभी भी अपने गुणों या आवश्यकताओं के संदर्भ में नहीं।

जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है और विकसित होता है, वह चीज़ों को उनके वास्तविक रूप में देखने में सक्षम हो जाता है; दूध पीने की संतुष्टि निप्पल से, और स्तन माँ से अलग हो जाती है। अंततः बच्चा अपनी प्यास, संतुष्टि का अनुभव करता है।

Machine Translated by Google

दूध, स्तन और माँ, अलग-अलग चीज़ों के रूप में। वह कई अन्य चीज़ों को अलग-अलग, अपने अस्तित्व के रूप में देखना सीखता है। इस बिंदु पर वह उन्हें नाम देना सीखता है। साथ ही वह उन्हें संभालना भी सीखता है; सीखता है कि आग गर्म और दर्दनाक होती है, माँ का शरीर गर्म और सुखद होता है, लकड़ी कठोर और भारी होती है, कागज़ हल्का होता है और उसे फाड़ा जा सकता है। वह लोगों को संभालना सीखता है;

कि जब मैं खाऊँगा तो माँ मुस्कुराएगी; कि जब मैं रोऊँगा तो वह मुझे अपनी बाहों में ले लेगी; कि जब मैं मल त्याग करूँगा तो वह मेरी तारीफ़ करेगी। ये सभी अनुभव इस अनुभव में सघन और एकीकृत हो जाते हैं: मुझे प्यार किया जाता है। मुझे प्यार किया जाता है क्योंकि मैं माँ का बच्चा हूँ। मुझे प्यार किया जाता है क्योंकि मैं असहाय हूँ। मुझे प्यार किया जाता है क्योंकि मैं सुंदर हूँ, सराहनीय हूँ। मुझे प्यार किया जाता है क्योंकि माँ को मेरी ज़रूरत है। इसे एक सामान्य सूत्र में कहें तो: मुझे मेरे होने के लिए प्यार किया जाता है, या शायद अधिक सटीक रूप से, मुझे मेरे होने के कारण प्यार किया जाता है। माँ द्वारा प्यार किए जाने का यह अनुभव एक निष्क्रिय अनुभव है। प्यार पाने के लिए मुझे कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है - माँ का प्यार बिना शर्त है।

मुझे बस यही करना है —उसका बच्चा बनना है। माँ का प्यार आनंद है, शांति है, इसे पाने की ज़रूरत नहीं, इसके लायक होने की ज़रूरत नहीं। लेकिन माँ के प्यार के इस निःशर्त गुण का एक नकारात्मक पहलू भी है। न सिर्फ़ इसके लायक होने की ज़रूरत नहीं—इसे हासिल भी नहीं किया जा सकता, पैदा भी नहीं किया जा सकता , नियंत्रित भी नहीं किया जा सकता।

अगर यह है तो यह एक आशीर्वाद की तरह है; अगर यह नहीं है तो यह पूरी तरह से सुंदरता की तरह है।
जीवन से बाहर चला गया था - और मैं इसे बनाने के लिए कुछ भी नहीं कर सकता।

साढ़े आठ से दस साल की उम्र से पहले ज़्यादातर बच्चों के लिए, समस्या लगभग पूरी तरह से प्यार पाने की होती है —जैसे वे हैं वैसे ही प्यार पाने की। इस उम्र तक बच्चा अभी प्यार नहीं करता; वह प्यार किए जाने पर कृतज्ञता और खुशी से प्रतिक्रिया करता है। बच्चे के विकास के इस पड़ाव पर एक नया पहलू सामने आता है: अपनी गतिविधियों से प्यार पैदा करने की एक नई भावना। पहली बार, बच्चा माँ (या पिता) को कुछ देने , कुछ बनाने—एक कविता, एक चित्र, या जो भी हो—के बारे में सोचता है। बच्चे के जीवन में पहली बार प्यार का विचार प्यार पाने से प्यार करने में; प्यार पैदा करने में बदल जाता है।

10
इस विकास के बारे में सुलिवन के विवरण की तुलना द इंटरपर्सनल थ्योरी ऑफ साइकियाट्री, डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन एंड कंपनी, न्यूयॉर्क, 1953 में करें।

Machine Translated by Google

इस प्रथम शुरुआत से लेकर प्रेम के परिपक्व होने तक कई वर्ष लग जाते हैं।
अंततः बच्चा, जो अब किशोर हो सकता है, अपनी अहंकार-केंद्रितता पर विजय प्राप्त कर चुका है; दूसरा व्यक्ति अब मुख्य रूप से उसकी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन नहीं रहा। दूसरे व्यक्ति की ज़रूरतें उसकी अपनी ज़रूरतों जितनी ही महत्वपूर्ण हैं—वास्तव में, वे और भी महत्वपूर्ण हो गई हैं। देना, लेने से ज़्यादा संतोषजनक और आनंददायक हो गया है; प्रेम करना, प्रेम पाने से भी ज़्यादा महत्वपूर्ण हो गया है। प्रेम करके, वह आत्ममुग्धता और आत्म-केंद्रितता से बनी अकेलेपन और अलगाव की कोठरी से बाहर आ गया है। उसे एक नए मिलन, साझा करने और एकता का एहसास होता है।

इससे भी बढ़कर, वह प्रेम करके प्रेम उत्पन्न करने की क्षमता को महसूस करता है—न कि प्रेम पाकर प्रेम पाने की निर्भरता—और इसी कारण छोटा, असहाय, बीमार—या "अच्छा" होना। शिशु प्रेम इस सिद्धांत का पालन करता है: " मैं प्रेम करता हूँ क्योंकि मुझे प्रेम किया जाता है।" परिपक्व प्रेम इस सिद्धांत का पालन करता है: "मुझे प्रेम किया जाता है क्योंकि मैं प्रेम करता हूँ।" अपरिपक्व प्रेम कहता है: " मैं तुमसे प्रेम करता हूँ क्योंकि मुझे तुम्हारी ज़रूरत है।" परिपक्व प्रेम कहता है: "मुझे तुम्हारी ज़रूरत है क्योंकि मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।"

प्रेम की क्षमता के विकास से प्रेम की वस्तु का विकास भी निकटता से जुड़ा है । बच्चे के शुरुआती महीने और साल ऐसे होते हैं जब उसका माँ से सबसे गहरा लगाव होता है। यह लगाव जन्म के क्षण से पहले ही शुरू हो जाता है, जब माँ और बच्चा दो होते हुए भी एक ही होते हैं। जन्म कुछ मायनों में स्थिति को बदल देता है, लेकिन उतना नहीं जितना लगता है। बच्चा, गर्भ से बाहर रहते हुए भी, पूरी तरह से माँ पर निर्भर होता है। लेकिन दिन-प्रतिदिन वह और अधिक स्वतंत्र होता जाता है: वह चलना, बोलना, दुनिया को खुद से तलाशना सीखता है; माँ के साथ उसका रिश्ता अपना कुछ महत्वपूर्ण महत्व खो देता है, और उसकी जगह पिता के साथ उसका रिश्ता और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

माँ से पिता की ओर इस बदलाव को समझने के लिए, हमें मातृ और पितृ प्रेम के बीच की गुणवत्ता में मूलभूत अंतर पर विचार करना होगा। हम पहले ही मातृ प्रेम के बारे में बात कर चुके हैं। मातृ प्रेम अपने स्वभाव से ही बिना किसी शर्त के होता है।

माँ नवजात शिशु से इसलिए प्यार करती है क्योंकि वह उसका बच्चा है, इसलिए नहीं कि बच्चे ने कोई खास शर्त पूरी की है, या किसी खास उम्मीद पर खरा उतरा है। (बेशक, जब मैं यहाँ माँ और पिता के प्यार की बात करता हूँ, तो मैं "आदर्श प्रकारों" की बात करता हूँ—मैक्स वेबर के अर्थ में या जंग के अर्थ में एक आदर्श प्रकार की—और मेरा यह मतलब नहीं है कि हर माँ और पिता उसी तरह प्यार करते हैं।

Machine Translated by Google

(मैं पितृत्व और मातृत्व के सिद्धांत की बात कर रहा हूँ, जो मातृत्व और पितृत्व वाले व्यक्ति में परिलक्षित होता है।) निःशर्त प्रेम न केवल बच्चे की, बल्कि हर इंसान की सबसे गहरी लालसाओं में से एक है; दूसरी ओर, अपनी योग्यता के कारण, क्योंकि आप इसके हकदार हैं, प्यार पाना हमेशा संदेह पैदा करता है; हो सकता है कि मैंने उस व्यक्ति को खुश नहीं किया जिससे मैं प्यार करवाना चाहता हूँ, हो सकता है यह, या वह—हमेशा एक डर बना रहता है कि प्यार गायब हो सकता है। इसके अलावा, "योग्य" प्यार आसानी से एक कड़वी भावना छोड़ जाता है कि किसी को उसके अपने लिए प्यार नहीं मिलता, कि उसे केवल इसलिए प्यार किया जाता है क्योंकि वह खुश है, कि अंततः, उससे प्यार ही नहीं किया जाता, बल्कि उसका इस्तेमाल किया जाता है। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि हम सभी बच्चों और बड़ों दोनों के रूप में मातृ प्रेम की लालसा से चिपके रहते हैं। अधिकांश बच्चे मातृ प्रेम पाने के लिए भाग्यशाली होते हैं (किस हद तक, इस पर बाद में चर्चा की जाएगी)। वयस्कों के रूप में उसी लालसा को पूरा करना कहीं अधिक कठिन होता है।

सबसे संतोषजनक विकास में यह सामान्य कामुक प्रेम का एक घटक बना रहता है; अक्सर यह धार्मिक रूपों में, और अधिक बार विक्षिप्त रूपों में अभिव्यक्ति पाता है।

पिता के साथ रिश्ता बिल्कुल अलग होता है। माँ वह घर है जहाँ से हम आते हैं, वह प्रकृति है, मिट्टी है, सागर है; पिता ऐसे किसी प्राकृतिक घर का प्रतिनिधित्व नहीं करते। उनके पास बहुत कम है

जीवन के शुरुआती वर्षों में बच्चे के साथ उसके जुड़ाव और इस शुरुआती दौर में बच्चे के लिए उसके महत्व की तुलना माँ से नहीं की जा सकती। लेकिन जहाँ पिता प्राकृतिक दुनिया का प्रतिनिधित्व नहीं करता, वहीं वह मानव अस्तित्व के दूसरे ध्रुव का प्रतिनिधित्व करता है; विचारों की दुनिया, मानव निर्मित चीज़ों की दुनिया, कानून और व्यवस्था की दुनिया, अनुशासन की दुनिया, यात्रा और रोमांच की दुनिया। पिता ही वह है जो बच्चे को सिखाता है, जो उसे दुनिया का रास्ता दिखाता है।

इस कार्य से निकटता से जुड़ा एक कार्य सामाजिक-आर्थिक विकास से जुड़ा है। जब निजी संपत्ति अस्तित्व में आई, और जब निजी संपत्ति किसी एक पुत्र को विरासत में मिल सकती थी, तो पिता उस पुत्र की तलाश करने लगे जिसे वह अपनी संपत्ति दे सके। स्वाभाविक रूप से, वह वही था जिसे पिता अपना उत्तराधिकारी बनने के लिए सबसे उपयुक्त मानते थे, वह पुत्र जो उनके सबसे अधिक समान था, और फलस्वरूप जिसे वह सबसे अधिक पसंद करते थे। पितृ प्रेम सशर्त प्रेम है। इसका सिद्धांत है "मैं तुमसे प्रेम करता हूँ क्योंकि तुम मेरी अपेक्षाओं को पूरा करते हो, क्योंकि तुम अपना कर्तव्य निभाते हो, क्योंकि तुम मेरे जैसे हो।" सशर्त पितृ प्रेम में, बिना शर्त मातृ प्रेम की तरह, हम एक नकारात्मक और एक सकारात्मक पहलू पाते हैं। नकारात्मक पहलू यह तथ्य है कि

Machine Translated by Google

पिता के प्रेम के योग्य होना ज़रूरी है, क्योंकि अगर कोई अपेक्षित कार्य नहीं करता है तो वह खो सकता है। पिता के प्रेम की प्रकृति में यह तथ्य निहित है कि आज्ञाकारिता मुख्य गुण बन जाती है, अवज्ञा मुख्य पाप है—और इसकी सज़ा पिता के प्रेम का त्याग है। सकारात्मक पक्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण है। चूँकि उसका प्रेम सशर्त है, मैं उसे पाने के लिए कुछ कर सकती हूँ, मैं उसके लिए काम कर सकती हूँ; उसका प्रेम मेरे नियंत्रण से बाहर नहीं है, जैसे मातृ प्रेम है।

बच्चे के प्रति माँ और पिता का रवैया बच्चे की अपनी ज़रूरतों के अनुरूप होता है। शिशु को शारीरिक और मानसिक रूप से माँ के निःस्वार्थ प्रेम और देखभाल की आवश्यकता होती है। छह साल की उम्र के बाद, बच्चे को पिता के प्रेम, उनके अधिकार और मार्गदर्शन की आवश्यकता होने लगती है। माँ का कार्य उसे जीवन में सुरक्षित बनाना है, पिता का कार्य उसे सिखाना है, उसे उन समस्याओं से निपटने के लिए मार्गदर्शन देना है जिनका सामना उस विशिष्ट समाज में होता है जिसमें बच्चा पैदा हुआ है। आदर्श रूप से, माँ का प्रेम बच्चे को बड़ा होने से नहीं रोकता, उसकी लाचारी को महत्व नहीं देता। माँ को जीवन में विश्वास होना चाहिए, इसलिए उसे अति-चिंतित नहीं होना चाहिए, और इस प्रकार अपनी चिंता से बच्चे को संक्रमित नहीं करना चाहिए। उसके जीवन का एक हिस्सा यह कामना होनी चाहिए कि बच्चा स्वतंत्र हो और अंततः उससे अलग हो जाए।

पिता का प्रेम सिद्धांतों और अपेक्षाओं से निर्देशित होना चाहिए; यह धमकी देने वाला नहीं, बल्कि धैर्यवान और सहनशील होना चाहिए।

और अधिनायकवादी। इससे बढ़ते बच्चे में क्षमता का भाव बढ़ना चाहिए और अंततः उसे अपना अधिकार खुद बनाने और पिता के अधिकार से मुक्त होने की अनुमति मिलनी चाहिए।

अंततः, परिपक्व व्यक्ति उस बिंदु पर पहुँच जाता है जहाँ वह स्वयं अपनी माँ और स्वयं अपना पिता होता है। उसके पास मानो एक मातृ और पितृत्व का विवेक होता है। मातृत्व का विवेक कहता है: "ऐसा कोई कुकर्म, कोई अपराध नहीं है जो तुम्हें मेरे प्रेम से, तुम्हारे जीवन और सुख की मेरी कामना से वंचित कर सके।" पितृत्व का विवेक कहता है: "तुमने गलत किया, तुम अपने गलत कामों के कुछ परिणामों को स्वीकार करने से बच नहीं सकते, और सबसे बढ़कर, अगर मुझे तुम्हें पसंद करना है तो तुम्हें अपने तरीके बदलने होंगे।" परिपक्व व्यक्ति बाहरी मातृ और पितृत्व से मुक्त हो जाता है, और उन्हें अपने भीतर विकसित कर लेता है। हालाँकि, फ्रायड की महा-अहंकार की अवधारणा के विपरीत, उसने उन्हें अपने भीतर निर्मित किया है, माता और पिता को शामिल करके नहीं , बल्कि अपनी प्रेम क्षमता पर एक मातृत्व का विवेक, और अपने तर्क और विवेक पर एक पितृत्व का विवेक निर्मित करके।

Machine Translated by Google

इसके अलावा, परिपक्व व्यक्ति मातृ और पितृ, दोनों ही प्रकार के विवेक से प्रेम करता है, भले ही वे एक-दूसरे के विरोधाभासी प्रतीत होते हों। यदि वह केवल पितृ-विवेक ही बनाए रखे, तो वह कठोर और अमानवीय हो जाएगा। यदि वह केवल मातृ-विवेक ही बनाए रखे, तो वह निर्णय लेने की क्षमता खो देगा और स्वयं तथा दूसरों के विकास में बाधा उत्पन्न करेगा।

मातृ-केंद्रित से पितृ-केंद्रित लगाव की ओर इस विकास और अंततः उनके संश्लेषण में मानसिक स्वास्थ्य और परिपक्वता की प्राप्ति का आधार निहित है। इस विकास की विफलता ही विक्षिप्तता का मूल कारण है। हालाँकि इस विचारधारा को और विस्तार से बताना इस पुस्तक के दायरे से बाहर है, फिर भी कुछ संक्षिप्त टिप्पणियाँ इसे स्पष्ट करने में सहायक हो सकती हैं।

कथन।

विक्षिप्त विकास का एक कारण यह हो सकता है कि लड़के की माँ स्नेही, लेकिन अति-लाड़ली या दबंग हो, और पिता कमज़ोर और उदासीन हो। ऐसी स्थिति में, वह माँ के प्रति प्रारंभिक लगाव में ही उलझा रह सकता है, और एक ऐसे व्यक्ति के रूप में विकसित हो सकता है जो माँ पर निर्भर हो, असहाय महसूस करे, ग्रहणशील व्यक्ति की विशेषताएँ रखता हो, यानी ग्रहण करने, संरक्षित होने, देखभाल करने की चाहत रखता हो, और जिसमें पिता के गुणों का अभाव हो—अनुशासन, स्वतंत्रता, और जीवन को स्वयं नियंत्रित करने की क्षमता। वह हर किसी में, कभी महिलाओं में, तो कभी अधिकार और शक्ति वाले पुरुषों में, "माँ" ढूँढ़ने की कोशिश कर सकता है। दूसरी ओर, यदि माँ उदासीन, अनुत्तरदायी और दबंग हो,

वह या तो मातृ सुरक्षा की आवश्यकता को अपने पिता और बाद के पिता के आंकड़ों में स्थानांतरित कर सकता है - जिस स्थिति में अंतिम परिणाम पहले मामले के समान होता है - या वह एकतरफा पिता-उन्मुख व्यक्ति के रूप में विकसित होगा, जो पूरी तरह से कानून, व्यवस्था और अधिकार के सिद्धांतों के लिए समर्पित होगा, और बिना शर्त प्यार की उम्मीद करने या प्राप्त करने की क्षमता का अभाव होगा। यह विकास और भी तीव्र हो जाता है यदि पिता सत्तावादी है और साथ ही बेटे से बहुत जुड़ा हुआ है। इन सभी विक्षिप्त विकासों की विशेषता यह है कि एक सिद्धांत, पितृत्व या मातृत्व, विकसित होने में विफल रहता है या - और यह अधिक गंभीर विक्षिप्त विकास का मामला है - कि माता और पिता की भूमिकाएं बाहरी व्यक्तियों के संबंध में और व्यक्ति के भीतर इन भूमिकाओं के संबंध में भ्रमित हो जाती हैं। आगे की जांच से पता चल सकता है कि कुछ प्रकार के न्यूरोसिस, जैसे

Machine Translated by Google

जुनूनी न्यूरोसिस, एकतरफा पिता के प्रति लगाव के आधार पर विकसित होते हैं, जबकि अन्य, जैसे हिस्टीरिया, शराबखोरी, खुद को व्यक्त करने में असमर्थता और जीवन का वास्तविक रूप से सामना करने में असमर्थता, और अवसाद, माँ-केंद्रितता के परिणामस्वरूप होते हैं।

3. प्रेम की वस्तुएँ

प्रेम मूलतः किसी विशिष्ट व्यक्ति से संबंध नहीं है; यह एक दृष्टिकोण है, चरित्र का एक अभिविन्यास है जो किसी व्यक्ति का समग्र विश्व से संबंध निर्धारित करता है, न कि प्रेम की किसी एक "वस्तु" से। यदि कोई व्यक्ति केवल एक ही व्यक्ति से प्रेम करता है और अपने बाकी साथियों के प्रति उदासीन है, तो उसका प्रेम प्रेम नहीं, बल्कि एक सहजीवी लगाव, या एक विस्तृत अहंकार है। फिर भी, अधिकांश लोग मानते हैं कि प्रेम वस्तु से बनता है, न कि क्षमता से।

दरअसल, वे यह भी मानते हैं कि जब वे अपने "प्रिय" व्यक्ति के अलावा किसी और से प्रेम नहीं करते, तो यह उनके प्रेम की प्रगाढ़ता का प्रमाण है। यह वही भ्रांति है जिसका हम ऊपर उल्लेख कर चुके हैं। चूँकि व्यक्ति यह नहीं देखता कि प्रेम एक क्रिया है, आत्मा की एक शक्ति है, इसलिए वह यह मान लेता है कि बस सही वस्तु को ढूँढ़ना आवश्यक है —और उसके बाद सब कुछ अपने आप हो जाता है। इस दृष्टिकोण की तुलना उस व्यक्ति से की जा सकती है जो चित्रकारी करना चाहता है, लेकिन कला सीखने के बजाय, यह दावा करता है कि उसे बस सही वस्तु का इंतज़ार करना है, और जब वह उसे पा लेगा, तो वह सुंदर चित्र बनाएगा। अगर मैं किसी एक व्यक्ति से सच्चा प्रेम करता हूँ, तो मैं सभी लोगों से प्रेम करता हूँ, मैं दुनिया से प्रेम करता हूँ, मैं जीवन से प्रेम करता हूँ। अगर मैं किसी और से कह सकता हूँ, "मैं तुमसे प्रेम करता हूँ," तो मुझे यह भी कहना होगा, "मैं तुममें सभी से प्रेम करता हूँ, मैं तुम्हारे माध्यम से दुनिया से प्रेम करता हूँ, मैं तुममें स्वयं से भी प्रेम करता हूँ।"

यह कहना कि प्रेम एक अभिविन्यास है जो सभी को संदर्भित करता है, किसी एक को नहीं, इसका तात्पर्य यह नहीं है कि विभिन्न प्रकार के प्रेम के बीच कोई अंतर नहीं है, जो उस वस्तु के प्रकार पर निर्भर करता है जिससे प्रेम किया जाता है।

क. भाईचारे का प्यार

सबसे बुनियादी प्रेम, जो सभी प्रकार के प्रेम का आधार है, भाईचारे का प्रेम है । इससे मेरा तात्पर्य ज़िम्मेदारी, देखभाल, सम्मान, किसी अन्य मनुष्य के प्रति ज्ञान, उसके जीवन को आगे बढ़ाने की इच्छा की भावना से है। इसी प्रेम की चर्चा बाइबल में भी की गई है जब वह कहती है: अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो।

भाईचारे का प्रेम सभी मनुष्यों के लिए प्रेम है; इसकी विशेषता यह है कि इसमें किसी भी प्रकार की विशिष्टता का अभाव होता है। यदि मुझमें प्रेम करने की क्षमता विकसित हो गई है, तो मैं अपने भाइयों से प्रेम किए बिना नहीं रह सकता। भाईचारे के प्रेम में एक विशेष अनुभूति होती है।

Machine Translated by Google

सभी मनुष्यों के साथ एकता, मानवीय एकजुटता, मानवीय एकता। भाईचारा इस अनुभव पर आधारित है कि हम सब एक हैं। प्रतिभा, बुद्धि, ज्ञान में अंतर सभी मनुष्यों में समान मानवीय मूल की पहचान की तुलना में नगण्य हैं। इस पहचान का अनुभव करने के लिए परिधि से मूल तक पहुँचना आवश्यक है। यदि मैं किसी अन्य व्यक्ति में मुख्यतः सतही अनुभव करता हूँ, तो मैं मुख्यतः उन अंतरों को, जो हमें अलग करते हैं, अनुभव करता हूँ। यदि मैं मूल तक पहुँचता हूँ, तो मैं हमारी पहचान, हमारे भाईचारे के तथ्य को अनुभव करता हूँ। केंद्र से केंद्र तक का यह संबंध—परिधि से परिधि तक के बजाय—"केंद्रीय संबंध" है। या जैसा कि सिमोन वेइल ने इसे बहुत खूबसूरती से व्यक्त किया है: "एक ही शब्द [उदाहरण के लिए, एक पुरुष अपनी पत्नी से कहता है, "मैं तुमसे प्यार करता हूँ"] जिस तरह से बोले जाते हैं, उसके अनुसार सामान्य या असाधारण हो सकते हैं। और यह तरीका मनुष्य के अस्तित्व के उस क्षेत्र की गहराई पर निर्भर करता है जहाँ से वे बिना कुछ किए आगे बढ़ते हैं। और एक अद्भुत समझौते द्वारा वे

"सुनने वाले के भीतर उसी क्षेत्र तक पहुँचते हैं। इस प्रकार, यदि सुनने वाले में विवेक की थोड़ी भी शक्ति हो, तो वह समझ सकता है कि शब्दों का मूल्य क्या है।" 11

भाईचारे का प्यार बराबर वालों के बीच का प्यार है: लेकिन, वास्तव में, बराबर होने पर भी हम हमेशा "बराबर" नहीं होते; चूँकि हम इंसान हैं, इसलिए हम सभी को मदद की ज़रूरत है। आज मुझे, कल तुम्हें। लेकिन मदद की इस ज़रूरत का मतलब यह नहीं है कि एक असहाय है, दूसरा शक्तिशाली। लाचारी एक क्षणिक स्थिति है; अपने पैरों पर खड़े होने और चलने की क्षमता स्थायी और

आम एक.

फिर भी, असहाय का प्रेम, गरीबों और परदेशियों का प्रेम, भाईचारे के प्रेम की शुरुआत है। अपने ही खून से प्रेम करना कोई उपलब्धि नहीं है। पशु अपने बच्चों से प्रेम करता है और उनकी देखभाल करता है। असहाय अपने स्वामी से प्रेम करता है, क्योंकि उसका जीवन उस पर निर्भर करता है; बच्चा अपने माता-पिता से प्रेम करता है, क्योंकि उसे उनकी आवश्यकता होती है। केवल उन लोगों के प्रेम में, जिनका कोई उद्देश्य नहीं है, प्रेम प्रस्फुटित होता है। उल्लेखनीय रूप से, पुराने नियम में, मनुष्य के प्रेम का केंद्रीय उद्देश्य गरीब, परदेशी, विधवा और अनाथ हैं, और अंततः राष्ट्रीय शत्रु, मिस्री और एदोमी हैं।

असहाय व्यक्ति के प्रति दया दिखाने से मनुष्य अपने भाई के प्रति प्रेम विकसित करने लगता है; और अपने प्रति प्रेम में वह जरूरतमंद व्यक्ति से भी प्रेम करने लगता है।

Machine Translated by Google

कमज़ोर, असुरक्षित इंसान की मदद करने का। करुणा में ज्ञान और

पहचान। "तुम परदेशी के मन को जानते हो," पुराना नियम कहता है, "क्योंकि तुम मिस्र देश में परदेशी थे; ... इसलिए परदेशी से प्रेम करो!" 12

1. सिमोन वेइल, ग्रेविटी एंड ग्रेस, जी.पी. पुटनाम संस, न्यूयॉर्क, 1952, पृ. 117.

2. इसी विचार को हरमन कोहेन ने अपने रिलिजन डेर वर्नुनफ़्ट ऑस डेन क्वेलेन डेस जुडेंटम्स के दूसरे संस्करण, जे. कॉफ़मैन वेरलाग, में व्यक्त किया है।

फ्रैंकफर्ट एम मेन, 1929, पृष्ठ 168 ff.

हम पहले ही एक अध्याय में मातृ प्रेम की प्रकृति पर चर्चा कर चुके हैं, जिसमें मातृ और पितृ प्रेम के बीच अंतर पर चर्चा की गई थी।
जैसा कि मैंने पहले कहा, मातृ प्रेम बच्चे के जीवन और उसकी ज़रूरतों की बिना शर्त स्वीकृति है। लेकिन इस विवरण में एक महत्वपूर्ण बात यहाँ जोड़ना ज़रूरी है। बच्चे के जीवन की स्वीकृति के दो पहलू हैं; एक है बच्चे के जीवन और उसके विकास के संरक्षण के लिए नितांत आवश्यक देखभाल और ज़िम्मेदारी। दूसरा पहलू सिर्फ़ सुरक्षा से कहीं आगे जाता है। यह वह दृष्टिकोण है जो बच्चे में जीने के प्रति प्रेम जगाता है, जो उसे यह एहसास दिलाता है: ज़िंदा रहना अच्छा है, छोटा लड़का या लड़की होना अच्छा है, इस धरती पर होना अच्छा है! मातृ प्रेम के ये दो पहलू बाइबिल की सृष्टि की कहानी में बहुत ही संक्षेप में व्यक्त किए गए हैं। ईश्वर ने संसार की रचना की, और मनुष्य ने भी।

यह अस्तित्व की साधारण देखभाल और पुष्टि के अनुरूप है। लेकिन ईश्वर इस न्यूनतम आवश्यकता से भी आगे जाता है। प्रकृति और मनुष्य की रचना के बाद प्रत्येक दिन, ईश्वर कहता है: "यह अच्छा है।" इस दूसरे चरण में, मातृ प्रेम बच्चे को यह एहसास कराता है: जन्म लेना अच्छा है; यह बच्चे में जीवन के प्रति प्रेम जगाता है, न कि केवल जीवित रहने की इच्छा। इसी विचार को बाइबिल के एक अन्य प्रतीकवाद में व्यक्त किया जा सकता है। प्रतिज्ञा की गई भूमि (भूमि हमेशा एक माँ का प्रतीक होती है) का वर्णन "दूध और शहद से बहती हुई" के रूप में किया गया है। दूध प्रेम के पहले पहलू, देखभाल और पुष्टि का प्रतीक है।

शहद जीवन की मिठास, उसके प्रति प्रेम और जीवित रहने की खुशी का प्रतीक है। ज़्यादातर माताएँ "दूध" देने में सक्षम होती हैं, लेकिन बहुत कम ही "शहद" देने में सक्षम होती हैं। शहद देने में सक्षम होने के लिए, एक माँ को न केवल एक "अच्छी माँ" होना चाहिए, बल्कि एक खुशहाल इंसान भी होना चाहिए—और यह लक्ष्य बहुत कम लोग हासिल कर पाते हैं। बच्चे पर इसके प्रभाव का अंदाज़ा लगाना मुश्किल है।

Machine Translated by Google

अतिशयोक्ति। जीवन के प्रति माँ का प्रेम उसकी चिंता जितनी ही संक्रामक है। दोनों ही दृष्टिकोण बच्चे के संपूर्ण व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव डालते हैं; बच्चों और बड़ों में, वास्तव में, यह भेद किया जा सकता है कि किसे केवल "दूध" मिला और किसे "दूध और शहद" मिला।

भाईचारे और कामुक प्रेम, जो बराबरी के लोगों के बीच का प्रेम है, के विपरीत, माँ और बच्चे का रिश्ता स्वभाव से ही असमानता का होता है, जहाँ एक को पूरी मदद की ज़रूरत होती है और दूसरा उसे देता है। इसी परोपकारी, निःस्वार्थ स्वभाव के कारण मातृ प्रेम को सर्वोच्च प्रेम और सभी भावनात्मक बंधनों में सबसे पवित्र माना गया है। हालाँकि, ऐसा प्रतीत होता है कि मातृ प्रेम की वास्तविक उपलब्धि नन्हे शिशु के प्रति माँ के प्रेम में नहीं, बल्कि बढ़ते हुए बच्चे के प्रति उसके प्रेम में निहित है। वास्तव में, अधिकांश माताएँ तब तक प्रेममयी होती हैं जब तक शिशु छोटा होता है और पूरी तरह से उन पर निर्भर होता है। अधिकांश महिलाएँ बच्चे चाहती हैं,

नवजात शिशु के साथ खुश हैं और उसकी देखभाल के लिए उत्सुक हैं। ऐसा इस तथ्य के बावजूद है कि उन्हें बच्चे से बदले में कुछ भी "नहीं" मिलता, सिवाय एक मुस्कान या उसके चेहरे पर संतुष्टि के भाव के। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रेम का यह भाव आंशिक रूप से एक सहज प्रवृत्ति में निहित है जो जानवरों के साथ-साथ मानव मादा में भी पाई जाती है। लेकिन, इस सहज कारक का भार चाहे जो भी हो, कुछ विशिष्ट मानवीय मनोवैज्ञानिक कारक भी हैं जो इस प्रकार के मातृ प्रेम के लिए ज़िम्मेदार हैं।

मातृ प्रेम में आत्ममुग्धता का तत्व पाया जा सकता है। चूँकि शिशु अभी भी स्वयं का एक अंग है, इसलिए उसका प्रेम और मोह उसके आत्ममुग्धता की संतुष्टि का एक माध्यम हो सकता है। एक और प्रेरणा माँ की शक्ति या अधिकार की इच्छा में पाई जा सकती है। बच्चा, असहाय और पूरी तरह से उसकी इच्छा के अधीन होने के कारण, एक दबंग और अधिकारवादी महिला के लिए संतुष्टि का एक स्वाभाविक स्रोत होता है।

ये प्रेरणाएँ जितनी भी बार-बार आती हैं, वे शायद उस प्रेरणा से कम महत्वपूर्ण और कम सार्वभौमिक हैं जिसे उत्कृष्टता की आवश्यकता कहा जा सकता है। उत्कृष्टता की यह आवश्यकता मनुष्य की सबसे बुनियादी आवश्यकताओं में से एक है, जो उसकी आत्म-जागरूकता में निहित है, इस तथ्य में कि वह प्राणी की भूमिका से संतुष्ट नहीं है, कि वह स्वयं को प्याले से फेंके गए पासे के रूप में स्वीकार नहीं कर सकता। उसे स्वयं को एक सृजनकर्ता के रूप में, सृजित होने की निष्क्रिय भूमिका से परे महसूस करने की आवश्यकता है। सृजन की इस संतुष्टि को प्राप्त करने के कई तरीके हैं; सबसे स्वाभाविक और सबसे आसान तरीका है माँ की देखभाल और

Machine Translated by Google

अपनी रचना के प्रति प्रेम। वह शिशु में स्वयं से परे हो जाती है, उसके प्रति उसका प्रेम उसके जीवन को अर्थ और सार्थकता प्रदान करता है। (पुरुष द्वारा संतान उत्पन्न करके अपनी उत्कृष्टता की आवश्यकता को पूरा न कर पाने की असमर्थता में ही मानव निर्मित वस्तुओं और विचारों के सृजन द्वारा स्वयं से परे जाने की उसकी इच्छा निहित है।)

लेकिन बच्चे को विकसित होना ही होगा। उसे माँ के गर्भ से, माँ के स्तन से निकलना होगा; अंततः उसे एक पूर्णतः अलग इंसान बनना होगा। मातृ प्रेम का सार ही बच्चे के विकास का ध्यान रखना है, और इसका अर्थ है बच्चे को स्वयं से अलग करना। यहीं कामुक प्रेम और उसका मूल अंतर है। कामुक प्रेम में, दो व्यक्ति जो अलग थे, एक हो जाते हैं। मातृ प्रेम में, दो व्यक्ति जो एक थे, अलग हो जाते हैं।

माँ को न केवल बच्चे के अलगाव को सहना चाहिए, बल्कि उसकी इच्छा भी करनी चाहिए और उसका समर्थन भी करना चाहिए। केवल इसी अवस्था में मातृ प्रेम इतना कठिन हो जाता है।

यह कार्य, निःस्वार्थता, सब कुछ देने की क्षमता और अपने प्रियजन की खुशी के अलावा कुछ भी न चाहने की आवश्यकता रखता है। यही वह चरण है जहाँ कई माताएँ मातृत्व प्रेम के अपने कार्य में असफल हो जाती हैं। आत्ममुग्ध, दबंग,

जब तक बच्चा छोटा है, अधिकार जताने वाली स्त्री एक "प्यारी" माँ बनने में सफल हो सकती है। केवल वही सच्ची प्यार करने वाली स्त्री, जो लेने से ज़्यादा देने में ज़्यादा खुश रहती है, जो अपने अस्तित्व में पूरी तरह से स्थिर है, वही उस समय एक प्यार करने वाली माँ बन सकती है जब बच्चा अलग होने की प्रक्रिया में हो।

बढ़ते बच्चे के लिए मातृ प्रेम, वह प्रेम जो अपने लिए कुछ नहीं चाहता, शायद प्रेम का सबसे कठिन रूप है, और यह और भी भ्रामक है क्योंकि एक माँ अपने नन्हे शिशु को कितनी आसानी से प्यार कर सकती है। लेकिन इसी कठिनाई के कारण, एक स्त्री तभी सच्ची प्रेममयी माँ बन सकती है जब वह प्रेम कर सके; अगर वह अपने पति, दूसरे बच्चों, अजनबियों, सभी मनुष्यों से प्रेम कर सके। जो स्त्री इस अर्थ में प्रेम करने में सक्षम नहीं है, वह तब तक एक स्नेही माँ हो सकती है जब तक बच्चा छोटा है, लेकिन वह एक प्रेममयी माँ नहीं हो सकती, जिसकी परीक्षा वियोग सहने की इच्छा है—और वियोग के बाद भी प्रेम करते रहने की।

1. कामुक प्रेम

Machine Translated by Google

भाईचारे का प्यार बराबर वालों के बीच का प्यार होता है; माँ का प्यार असहायों के लिए प्यार होता है। हालाँकि वे एक-दूसरे से अलग हैं, फिर भी उनमें एक समानता यह है कि वे स्वभाव से ही किसी बंधन में नहीं हैं।

एक व्यक्ति के प्रति। अगर मैं अपने भाई से प्रेम करता हूँ, तो मैं अपने सभी भाइयों से प्रेम करता हूँ; अगर मैं अपने बच्चे से प्रेम करता हूँ, तो मैं अपने सभी बच्चों से प्रेम करता हूँ; नहीं, उससे ज़्यादा, मैं सभी बच्चों से प्रेम करता हूँ, उन सभी से जिन्हें मेरी मदद की ज़रूरत है। दोनों प्रकार के प्रेम के विपरीत कामुक प्रेम है; यह एक दूसरे व्यक्ति के साथ पूर्ण विलय, मिलन की लालसा है।

यह अपने स्वभाव से ही अनन्य है और सार्वभौमिक नहीं है; यह संभवतः प्रेम का सबसे भ्रामक रूप भी है।

सबसे पहले, इसे अक्सर प्यार में "पड़ने" के विस्फोटक अनुभव, यानी दो अजनबियों के बीच उस क्षण तक मौजूद बाधाओं के अचानक ढह जाने के अनुभव से भ्रमित किया जाता है। लेकिन, जैसा कि पहले बताया गया था, अचानक अंतरंगता का यह अनुभव स्वभाव से ही अल्पकालिक होता है। अजनबी के एक अंतरंग परिचित व्यक्ति बन जाने के बाद, कोई बाधाएँ पार करने की ज़रूरत नहीं रह जातीं, कोई अचानक निकटता प्राप्त करने की ज़रूरत नहीं रह जाती। "प्रिय" व्यक्ति उतना ही प्रसिद्ध हो जाता है जितना स्वयं स्वयं। या, शायद मैं यह कहूँ कि कम जाना-पहचाना। यदि दूसरे व्यक्ति के अनुभव में अधिक गहराई होती, यदि कोई उसके व्यक्तित्व की असीमता का अनुभव कर पाता, तो दूसरा व्यक्ति कभी इतना परिचित नहीं होता—और बाधाओं को पार करने का चमत्कार हर दिन नए सिरे से घटित हो सकता था। लेकिन अधिकांश लोगों के लिए, उनका अपना व्यक्तित्व, साथ ही अन्य लोग, जल्द ही खोजे जाते हैं और जल्द ही समाप्त हो जाते हैं। उनके लिए अंतरंगता मुख्यतः यौन संपर्क के माध्यम से स्थापित होती है। चूँकि वे दूसरे व्यक्ति के अलगाव को मुख्यतः शारीरिक अलगाव के रूप में अनुभव करते हैं, इसलिए शारीरिक मिलन का अर्थ है अलगाव पर विजय प्राप्त करना। इसके अलावा, कई और भी कारक हैं जो कई लोगों के लिए अलगाव पर विजय पाने का संकेत देते हैं। अपने शहर के निजी जीवन, अपनी आशाओं और चिंताओं के बारे में बात करना, अपने बच्चों जैसे या बचकाने पहलुओं को दिखाना, दुनिया के साथ एक साझा हित स्थापित करना—इन सबको अलगाव पर विजय पाने के रूप में लिया जाता है। यहाँ तक कि अपना गुस्सा, अपनी नफ़रत, और अपनी पूरी तरह से बेपरवाही दिखाना भी अंतरंगता के लिए लिया जाता है, और शायद यही विवाहित जोड़ों के बीच अक्सर एक-दूसरे के प्रति विकृत आकर्षण की व्याख्या कर सकता है, जो केवल बिस्तर पर होने पर या अपनी आपसी नफ़रत और भावनाओं को व्यक्त करने पर ही अंतरंग लगते हैं।

क्रोध। लेकिन समय के साथ इन सभी प्रकार की नज़दीकियाँ कम होती जाती हैं। नतीजा यह होता है कि व्यक्ति किसी नए व्यक्ति से प्यार की तलाश करता है।

Machine Translated by Google

एक नए अजनबी के साथ, एक नए व्यक्ति के साथ। फिर से अजनबी एक "अंतरंग" व्यक्ति में बदल जाता है, फिर से प्रेम में पड़ने का अनुभव रोमांचक और गहन होता है, और फिर धीरे-धीरे यह कम तीव्र होता जाता है, और एक नई विजय, एक नए प्रेम की कामना में समाप्त होता है—हमेशा इस भ्रम के साथ कि नया प्रेम पहले वाले से अलग होगा। इन भ्रमों को यौन इच्छा के भ्रामक चरित्र से बहुत मदद मिलती है।

यौन इच्छा का उद्देश्य विलय है—और यह किसी भी तरह से केवल एक शारीरिक भूख या किसी कष्टदायक तनाव से मुक्ति नहीं है। लेकिन यौन इच्छा अकेलेपन की चिंता, जीतने या जीतने की इच्छा, अहंकार, चोट पहुँचाने और यहाँ तक कि नष्ट करने की इच्छा से भी उतनी ही उत्तेजित हो सकती है, जितनी प्रेम से। ऐसा प्रतीत होता है कि यौन इच्छा किसी भी प्रबल भावना के साथ आसानी से घुल-मिल सकती है और उससे उत्तेजित हो सकती है, जिनमें प्रेम केवल एक है। चूँकि अधिकांश लोगों के मन में यौन इच्छा प्रेम के विचार के साथ जुड़ी होती है, इसलिए वे आसानी से इस निष्कर्ष पर पहुँच जाते हैं कि

वे एक-दूसरे से प्रेम करते हैं जब वे एक-दूसरे को शारीरिक रूप से चाहते हैं। प्रेम यौन मिलन की इच्छा को प्रेरित कर सकता है; इस मामले में, शारीरिक संबंध में लालच, जीतने या जीत लिए जाने की इच्छा का अभाव होता है, बल्कि कोमलता का मिश्रण होता है। यदि शारीरिक मिलन की इच्छा प्रेम से प्रेरित नहीं होती, यदि कामुक प्रेम भाईचारे का प्रेम भी नहीं है, तो यह कभी भी एक कामुक, क्षणिक अर्थ से अधिक मिलन की ओर नहीं ले जाता। यौन आकर्षण, क्षणिक रूप से, मिलन का भ्रम पैदा करता है, फिर भी प्रेम के बिना यह "मिलन" अजनबियों को पहले जितना ही दूर छोड़ देता है—कभी-कभी यह उन्हें एक-दूसरे से शर्मिंदा करता है, या यहाँ तक कि उन्हें एक-दूसरे से नफ़रत भी कराता है, क्योंकि जब भ्रम दूर हो जाता है तो वे अपनी अलगाव की भावना को पहले से भी अधिक स्पष्ट रूप से महसूस करते हैं।

कोमलता, जैसा कि फ्रायड का मानना था, किसी भी तरह से यौन प्रवृत्ति का उदात्तीकरण नहीं है; यह भाईचारे के प्रेम का प्रत्यक्ष परिणाम है, तथा प्रेम के भौतिक तथा अभौतिक दोनों रूपों में विद्यमान रहती है।

कामुक प्रेम में एक विशिष्टता होती है जो भाईचारे और मातृ प्रेम में नहीं होती। कामुक प्रेम का यह विशिष्टतापूर्ण स्वरूप कुछ और चर्चा का विषय है। कामुक प्रेम की विशिष्टता को अक्सर अधिकारपूर्ण लगाव के रूप में गलत समझा जाता है। अक्सर दो ऐसे लोग मिल जाते हैं जो एक-दूसरे के "प्रेम में" होते हैं और किसी और के लिए प्रेम महसूस नहीं करते। उनका प्रेम, वास्तव में, एक अहंकारी युगल है; वे दो लोग हैं जो एक-दूसरे के साथ अपनी पहचान बनाते हैं, और समस्या का समाधान करते हैं।

Machine Translated by Google

एक व्यक्ति को दो भागों में विभाजित करके अलगाव का अनुभव। उन्हें अकेलेपन पर विजय पाने का अनुभव है, फिर भी, चूँकि वे शेष मानवजाति से अलग हैं, वे एक-दूसरे से अलग और स्वयं से विमुख रहते हैं;

उनका मिलन का अनुभव एक भ्रम है। कामुक प्रेम अनन्य होता है, लेकिन यह दूसरे व्यक्ति में समस्त मानवजाति, समस्त जीवित प्राणी से प्रेम करता है। यह अनन्य केवल इस अर्थ में है कि मैं स्वयं को केवल एक ही व्यक्ति के साथ पूरी तरह और गहनता से एकाकार कर सकता हूँ।
कामुक प्रेम में दूसरों के प्रति प्रेम को केवल कामुक सम्मिश्रण, जीवन के सभी पहलुओं में पूर्ण प्रतिबद्धता के अर्थ में शामिल नहीं किया जाता है - लेकिन गहरे भाईचारे के प्रेम के अर्थ में नहीं।

कामुक प्रेम, यदि वह प्रेम है, तो उसका एक आधार है। वह यह कि मैं अपने अस्तित्व के सार से प्रेम करता हूँ —और दूसरे व्यक्ति को उसके अस्तित्व के सार में अनुभव करता हूँ। संक्षेप में, सभी मनुष्य एक समान हैं। हम सब एक के अंश हैं; हम एक हैं। ऐसा होने पर, इससे कोई फर्क नहीं पड़ना चाहिए कि हम किससे प्रेम करते हैं। प्रेम मूलतः इच्छाशक्ति का, अपने जीवन को पूरी तरह से किसी दूसरे व्यक्ति के प्रति समर्पित करने के निर्णय का कार्य होना चाहिए। वास्तव में, विवाह की अघुलनशीलता के विचार के पीछे यही तर्क है, क्योंकि यह पारंपरिक विवाह के कई रूपों के पीछे है जिसमें दोनों साथी एक-दूसरे को कभी नहीं चुनते, बल्कि एक-दूसरे के लिए चुने जाते हैं—और फिर भी उनसे एक-दूसरे से प्रेम करने की अपेक्षा की जाती है। समकालीन पश्चिमी संस्कृति में यह विचार पूरी तरह से गलत प्रतीत होता है।

प्रेम को एक सहज, भावनात्मक प्रतिक्रिया का परिणाम माना जाता है, अचानक एक अदम्य भावना से ग्रस्त हो जाना। इस दृष्टिकोण से, व्यक्ति केवल दो व्यक्तियों की विशिष्टताओं को ही देखता है—और इस तथ्य को नहीं कि सभी पुरुष आदम का हिस्सा हैं, और सभी स्त्रियाँ हव्वा का हिस्सा हैं। कामुक प्रेम में एक महत्वपूर्ण कारक, इच्छाशक्ति, को देखने की उपेक्षा की जाती है। किसी से प्रेम करना केवल एक प्रबल भावना नहीं है—यह एक निर्णय है, यह एक निर्णय है, यह एक वादा है। यदि प्रेम केवल एक भावना होती, तो एक-दूसरे से सदैव प्रेम करने के वादे का कोई आधार नहीं होता। एक भावना आती है और जा सकती है। मैं कैसे अनुमान लगा सकता हूँ कि यह हमेशा रहेगी, जब मेरे कार्य में निर्णय और निर्णय शामिल नहीं है?

इन विचारों को ध्यान में रखते हुए, कोई इस निष्कर्ष पर पहुँच सकता है कि प्रेम केवल इच्छा और प्रतिबद्धता का एक कार्य है, और इसलिए मूलतः इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि वे दोनों व्यक्ति कौन हैं। चाहे विवाह दूसरों द्वारा तय किया गया हो, या व्यक्तिगत पसंद का परिणाम हो, एक बार विवाह संपन्न हो जाने के बाद, इच्छाशक्ति के कार्य को विवाह की निरंतरता की गारंटी देनी चाहिए।

Machine Translated by Google

प्रेम। यह दृष्टिकोण मानव स्वभाव और कामुक प्रेम के विरोधाभासी चरित्र की उपेक्षा करता प्रतीत होता है। हम सब एक हैं—फिर भी हम में से प्रत्येक एक अद्वितीय, अद्वितीय इकाई है। दूसरों के साथ हमारे संबंधों में भी यही विरोधाभास दोहराया जाता है। चूँकि हम सब एक हैं, इसलिए हम भाईचारे के प्रेम के अर्थ में सभी से समान प्रेम कर सकते हैं। लेकिन चूँकि हम सब अलग-अलग भी हैं, इसलिए कामुक प्रेम के लिए कुछ विशिष्ट, अत्यंत व्यक्तिगत तत्वों की आवश्यकता होती है जो कुछ लोगों के बीच तो मौजूद होते हैं, लेकिन सभी के बीच नहीं।

दोनों दृष्टिकोणों से कामुक प्रेम पूर्णतः व्यक्तिगत है

दो विशिष्ट व्यक्तियों के बीच अद्वितीय आकर्षण, और साथ ही यह दूसरा दृष्टिकोण कि कामुक प्रेम केवल इच्छाशक्ति का एक कार्य है, सत्य है—या, जैसा कि इसे और अधिक सटीक रूप से कहा जा सकता है, सत्य न तो यह है और न ही वह। इसलिए यह विचार कि यदि कोई रिश्ता सफल नहीं होता है तो उसे आसानी से तोड़ा जा सकता है, उतना ही गलत है जितना कि यह विचार कि किसी भी परिस्थिति में रिश्ते को नहीं तोड़ा जाना चाहिए।

घ. आत्म-प्रेम 13

यद्यपि प्रेम की अवधारणा को विभिन्न वस्तुओं पर लागू करने में कोई आपत्ति नहीं है, फिर भी यह एक व्यापक मान्यता है कि दूसरों से प्रेम करना पुण्य है, परन्तु स्वयं से प्रेम करना पाप है। ऐसा माना जाता है

जिस हद तक मैं खुद से प्यार करता हूँ, मैं दूसरों से उतना प्यार नहीं करता, इसलिए आत्म-प्रेम स्वार्थ के समान है। यह दृष्टिकोण पश्चिमी चिंतन में बहुत पुराना है।
केल्विन आत्म-प्रेम को "एक कीट" कहते हैं। 14 फ्रायड आत्म-प्रेम को मनोवैज्ञानिक शब्दों में बोलते हैं, लेकिन फिर भी, उनका मूल्य-निर्णय केल्विन के समान ही है।

1. पॉल टिलिच ने, पैस्टोरल साइकोलॉजी में, द सेन सोसाइटी की समीक्षा में,
2. सितंबर, 1955 में प्रकाशित एक लेख में सुझाव दिया गया है कि बेहतर होगा कि अस्पष्ट शब्द "आत्म-प्रेम" को छोड़ दिया जाए और उसके स्थान पर "प्राकृतिक आत्म-पुष्टि" या "विरोधाभासी" शब्द का प्रयोग किया जाए। आत्म-स्वीकृति।" हालाँकि मैं इस सुझाव के गुणों को देख सकता हूँ, मैं इस बिंदु पर उनसे सहमत नहीं हो सकता। "आत्म-प्रेम" शब्द में आत्म-प्रेम का विरोधाभासी तत्व है इसमें और भी स्पष्टता है। यह तथ्य व्यक्त किया गया है कि प्रेम एक ऐसा दृष्टिकोण है जो सभी वस्तुओं के प्रति, जिनमें मैं भी शामिल हूँ, एक समान होता है। यह भी नहीं भूलना चाहिए कि यह शब्द "आत्म-प्रेम", जिस अर्थ में यहाँ प्रयुक्त हुआ है, उसका एक इतिहास है। बाइबल आत्म-प्रेम की बात तब करती है जब वह "अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो" का आदेश देती है और मिस्टर एकहार्ट इसी अर्थ में आत्म-प्रेम की बात की गई है।
3. जॉन कैल्विन, ईसाई धर्म के संस्थान, जे. अल्बाऊ द्वारा अनुवादित, प्रेस्बिटेरियन बोर्ड ऑफ क्रिश्चियन एजुकेशन, फिलाडेल्फिया, 1928, अध्याय 7, पैरा 4, पृ. 622.

Machine Translated by Google

उनके लिए आत्म-प्रेम, आत्म-प्रेम के समान है, अर्थात कामेच्छा का स्वयं की ओर मुड़ना। आत्म-प्रेम मानव विकास की प्रारंभिक अवस्था है, और जो व्यक्ति बाद के जीवन में इस आत्म-प्रेम की अवस्था में लौट आता है, वह प्रेम करने में असमर्थ होता है; चरम स्थिति में वह पागल होता है। फ्रायड मानते हैं कि प्रेम कामेच्छा की अभिव्यक्ति है, और यह कामेच्छा या तो दूसरों की ओर मुड़ती है—प्रेम की ओर; या स्वयं की ओर—आत्म-प्रेम की ओर। इस प्रकार प्रेम और आत्म-प्रेम इस अर्थ में परस्पर अनन्य हैं कि एक जितना अधिक होता है, दूसरा उतना ही कम होता है। यदि आत्म-प्रेम बुरा है, तो इसका अर्थ है कि निःस्वार्थता सद्गुण है।

ये प्रश्न उठते हैं: क्या मनोवैज्ञानिक अवलोकन इस सिद्धांत का समर्थन करते हैं कि स्वयं के प्रति प्रेम और दूसरों के प्रति प्रेम में एक बुनियादी विरोधाभास है? क्या स्वयं के प्रति प्रेम और स्वार्थ एक ही घटना है, या दोनों विपरीत हैं?

Machine Translated by Google

इसके अलावा, क्या आधुनिक मनुष्य का स्वार्थ सचमुच एक व्यक्ति के रूप में, अपनी समस्त बौद्धिक, भावनात्मक और ऐन्द्रिक क्षमताओं के साथ, स्वयं के प्रति चिंता है ? क्या "वह" उसकी सामाजिक-आर्थिक भूमिका का एक अंग नहीं बन गया है? क्या उसका स्वार्थ आत्म-प्रेम के समान है या फिर वह उसके अभाव के कारण नहीं है?

स्वार्थ और आत्म-प्रेम के मनोवैज्ञानिक पहलू पर चर्चा शुरू करने से पहले, इस धारणा में तार्किक भ्रांति पर ज़ोर देना ज़रूरी है कि दूसरों के प्रति प्रेम और स्वयं के प्रति प्रेम परस्पर अनन्य हैं। अगर अपने पड़ोसी से एक इंसान के तौर पर प्रेम करना एक गुण है, तो खुद से प्रेम करना भी एक गुण होना चाहिए—न कि एक दोष—क्योंकि मैं भी एक इंसान हूँ। मनुष्य की ऐसी कोई अवधारणा नहीं है जिसमें मैं स्वयं शामिल न हो। ऐसा सिद्धांत जो इस तरह के बहिष्कार की घोषणा करता है, वह स्वयं को ही सिद्ध करता है।

आंतरिक रूप से विरोधाभासी। बाइबिल में व्यक्त विचार "अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो!" का तात्पर्य है कि अपनी अखंडता और विशिष्टता के प्रति सम्मान, स्वयं के प्रति प्रेम और समझ को किसी अन्य व्यक्ति के प्रति सम्मान, प्रेम और समझ से अलग नहीं किया जा सकता।

मेरा स्वयं के प्रति प्रेम किसी अन्य प्राणी के प्रति प्रेम से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है।

अब हम उन मूल मनोवैज्ञानिक आधारों पर पहुँच गए हैं जिन पर हमारे तर्क के निष्कर्ष आधारित हैं। सामान्यतः, ये आधार इस प्रकार हैं: न केवल दूसरे, बल्कि हम स्वयं भी अपनी भावनाओं और दृष्टिकोणों के "विषय" हैं; दूसरों के प्रति और स्वयं के प्रति दृष्टिकोण, विरोधाभासी होने के बजाय, मूलतः संयोजक हैं। विचाराधीन समस्या के संबंध में इसका अर्थ है: दूसरों के प्रति प्रेम और स्वयं के प्रति प्रेम, विकल्प नहीं हैं। इसके विपरीत, स्वयं के प्रति प्रेम का भाव उन सभी में पाया जाएगा जो दूसरों से प्रेम करने में सक्षम हैं। प्रेम, सिद्धांततः, अविभाज्य है, जहाँ तक "विषयों" और स्वयं के बीच के संबंध का प्रश्न है। सच्चा प्रेम उत्पादकता की अभिव्यक्ति है और इसमें देखभाल, सम्मान, जिम्मेदारी और ज्ञान निहित है। यह किसी के द्वारा प्रभावित होने के अर्थ में "प्रभाव" नहीं है, बल्कि प्रेम करने की अपनी क्षमता में निहित, प्रिय व्यक्ति के विकास और सुख के लिए एक सक्रिय प्रयास है।

किसी से प्रेम करना, प्रेम करने की शक्ति का वास्तविकीकरण और एकाग्रता है। प्रेम में निहित मूल प्रतिज्ञान, प्रेम की ओर निर्देशित होता है।

Machine Translated by Google

प्रिय व्यक्ति को मूलतः मानवीय गुणों का अवतार मानना। एक व्यक्ति के प्रति प्रेम का तात्पर्य मनुष्य के प्रति प्रेम से है। विलियम जेम्स के अनुसार, जिस प्रकार का "श्रम विभाजन" होता है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने परिवार से प्रेम करता है, लेकिन "अजनबी" के प्रति कोई भावना नहीं रखता, वह प्रेम करने में मूलभूत अक्षमता का प्रतीक है। मनुष्य के प्रति प्रेम, जैसा कि अक्सर माना जाता है, किसी विशिष्ट व्यक्ति के प्रति प्रेम के बाद आने वाला एक अमूर्त भाव नहीं है, बल्कि यह उसका आधार है, हालाँकि आनुवंशिक रूप से यह विशिष्ट व्यक्तियों के प्रेम में अर्जित होता है।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि मेरा स्वयं भी उतना ही प्रेम का पात्र होना चाहिए जितना कोई अन्य व्यक्ति। अपने जीवन, सुख, विकास और स्वतंत्रता की पुष्टि प्रेम करने की क्षमता, यानी देखभाल, सम्मान, ज़िम्मेदारी और ज्ञान में निहित है । यदि कोई व्यक्ति उत्पादक रूप से प्रेम करने में सक्षम है, तो वह स्वयं से भी प्रेम करता है; यदि वह केवल दूसरों से प्रेम कर सकता है , तो वह बिल्कुल भी प्रेम नहीं कर सकता।

यह मानते हुए कि स्वयं के प्रति और दूसरों के प्रति प्रेम सिद्धांततः एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है, हम स्वार्थ की व्याख्या कैसे करें, जो स्पष्ट रूप से दूसरों के प्रति किसी भी वास्तविक चिंता को बाहर कर देता है? स्वार्थी व्यक्ति केवल अपने में ही रुचि रखता है, सब कुछ अपने लिए चाहता है, देने में नहीं, बल्कि केवल लेने में आनंद महसूस करता है। बाहरी दुनिया को केवल इस दृष्टिकोण से देखता है कि वह उससे क्या प्राप्त कर सकता है; उसे दूसरों की आवश्यकताओं में कोई रुचि नहीं होती, और उनकी गरिमा और निष्ठा के प्रति कोई सम्मान नहीं होता। वह अपने अलावा कुछ नहीं देख सकता; वह हर किसी और हर चीज़ का मूल्यांकन उसकी उपयोगिता के आधार पर करता है; वह मूलतः प्रेम करने में असमर्थ है। क्या यह सिद्ध नहीं करता कि दूसरों के प्रति चिंता और स्वयं के प्रति चिंता अपरिहार्य विकल्प हैं? ऐसा तब होता यदि स्वार्थ और आत्म-प्रेम एक समान होते। लेकिन यही धारणा ही वह भ्रांति है जिसके कारण इतने सारे गलत निष्कर्ष निकले हैं।

हमारी समस्या के बारे में। स्वार्थ और आत्म-प्रेम, वास्तविकता से कोसों दूर

समान, वास्तव में विपरीत हैं। स्वार्थी व्यक्ति खुद से बहुत ज़्यादा नहीं, बल्कि बहुत कम प्यार करता है; दरअसल वह खुद से नफ़रत करता है। खुद के प्रति स्नेह और परवाह की यह कमी, जो उसकी उत्पादकता की कमी का एक उदाहरण मात्र है, उसे खाली और निराश कर देती है। वह अनिवार्य रूप से दुखी रहता है और जीवन से संतुष्टि छीनने के लिए बेचैन रहता है।

जिसे पाने से वह खुद को रोकता है। ऐसा लगता है कि वह अपनी बहुत परवाह करता है, लेकिन असल में वह बस उसे छिपाने की एक असफल कोशिश करता है और

Machine Translated by Google

अपने वास्तविक स्वरूप की परवाह न कर पाने की अपनी विफलता की भरपाई करें। फ्रायड का मानना है कि स्वार्थी व्यक्ति आत्ममुग्ध होता है,

मानो उसने दूसरों से अपना प्रेम हटाकर अपनी ओर मोड़ लिया हो। यह सच है कि स्वार्थी व्यक्ति दूसरों से प्रेम करने में असमर्थ होते हैं, लेकिन वे स्वयं से भी प्रेम करने में असमर्थ होते हैं।

स्वार्थ को समझना आसान है, यदि इसकी तुलना दूसरों के प्रति लालची चिंता से की जाए, जैसा कि हम, उदाहरण के लिए, एक अति चिंतित मां में पाते हैं।
जबकि वह सचेत रूप से मानती है कि वह अपने बच्चे से विशेष रूप से प्यार करती है, वास्तव में उसके मन में उस बच्चे के प्रति गहरी दबी हुई शत्रुता है।
वह इसलिए अधिक चिंतित है क्योंकि वह बच्चे से बहुत अधिक प्यार नहीं करती, बल्कि इसलिए कि उसे उससे प्यार करने की अपनी क्षमता की कमी की भरपाई करनी है।

स्वार्थ की प्रकृति का यह सिद्धांत विक्षिप्त "निःस्वार्थता" के साथ मनोविश्लेषणात्मक अनुभव से सिद्ध होता है, जो विक्षिप्तता का एक लक्षण है, जो कुछ लोगों में देखा जाता है, जो आमतौर पर इस लक्षण से नहीं, बल्कि इससे जुड़े अन्य लक्षणों से परेशान होते हैं।

इसके साथ, जैसे अवसाद, थकान, काम करने में असमर्थता, प्यार में असफलता
रिश्ते वगैरह। निःस्वार्थता न केवल

इसे "लक्षण" के रूप में महसूस नहीं किया जाता; यह अक्सर एक ऐसा चरित्र गुण होता है जिस पर ऐसे लोग गर्व करते हैं। "निःस्वार्थ" व्यक्ति "अपने लिए कुछ नहीं चाहता"; वह "केवल दूसरों के लिए जीता है," उसे इस बात पर गर्व होता है कि वह खुद को महत्वपूर्ण नहीं समझता। वह यह जानकर हैरान होता है कि अपनी निःस्वार्थता के बावजूद वह दुखी है, और अपने सबसे करीबी लोगों के साथ उसके रिश्ते असंतोषजनक हैं। विश्लेषणात्मक कार्य से पता चलता है कि उसकी निःस्वार्थता उसके अन्य गुणों से अलग नहीं है।

लक्षणों में से एक, बल्कि अक्सर सबसे महत्वपूर्ण, यह है कि वह किसी भी चीज़ से प्रेम करने या उसका आनंद लेने की अपनी क्षमता में पंगु हो गया है; वह जीवन के प्रति शत्रुता से ग्रस्त है और निःस्वार्थता के मुखौटे के पीछे एक सूक्ष्म, लेकिन कम तीव्र नहीं, आत्म-केंद्रितता छिपी हुई है। ऐसे व्यक्ति का उपचार तभी संभव है जब उसकी निःस्वार्थता को भी अन्य लक्षणों के साथ एक लक्षण के रूप में समझा जाए, ताकि उसकी उत्पादकता की कमी, जो उसकी निःस्वार्थता और उसकी अन्य समस्याओं, दोनों की जड़ है, को ठीक किया जा सके।

Machine Translated by Google

निःस्वार्थता की प्रकृति दूसरों पर पड़ने वाले उसके प्रभाव में, और हमारी संस्कृति में सबसे ज़्यादा स्पष्ट रूप से "निःस्वार्थ" माँ के अपने बच्चों पर पड़ने वाले प्रभाव में दिखाई देती है। वह मानती है कि उसकी निःस्वार्थता से उसके बच्चे अनुभव करेंगे कि प्यार पाने का क्या मतलब है और बदले में, प्यार करने का क्या मतलब है, सीखेंगे। हालाँकि, उसकी निःस्वार्थता का प्रभाव उसकी अपेक्षाओं के अनुरूप बिल्कुल नहीं होता। बच्चे उन लोगों जैसी खुशी नहीं दिखाते जो इस बात से आश्वस्त होते हैं कि उन्हें प्यार किया जाता है; वे चिंतित, तनावग्रस्त, माँ की अस्वीकृति से भयभीत और उसकी अपेक्षाओं पर खरा उतरने के लिए बेचैन रहते हैं। आमतौर पर, वे अपनी माँ के जीवन के प्रति छिपे हुए द्वेष से प्रभावित होते हैं, जिसे वे स्पष्ट रूप से पहचानने के बजाय महसूस करते हैं, और अंततः वे स्वयं भी उसमें डूब जाते हैं।

कुल मिलाकर, "निःस्वार्थ" माँ का प्रभाव स्वार्थी माँ से बहुत अलग नहीं होता; बल्कि, अक्सर यह और भी बुरा होता है, क्योंकि माँ की निःस्वार्थता बच्चों को उसकी आलोचना करने से रोकती है। उन पर यह दायित्व डाला जाता है कि वे उसे निराश न करें; उन्हें सद्गुणों के मुखौटे में नापसंदगी सिखाई जाती है।

जीवन भर के लिए। अगर किसी को सच्चे आत्म-प्रेम वाली माँ के प्रभाव का अध्ययन करने का मौका मिले, तो वह देख सकता है कि एक बच्चे को उस प्रेम, आनंद और खुशी का अनुभव देने के लिए उससे ज़्यादा अनुकूल कुछ नहीं है जो उसे खुद से प्यार करने वाले किसी दूसरे व्यक्ति से प्यार मिले। आत्म-प्रेम के इन विचारों को इस विषय पर मिस्टर एकहार्ट के उद्धरण से बेहतर ढंग से संक्षेपित नहीं किया जा सकता: "अगर आप खुद से प्यार करते हैं, तो आप हर किसी से उतना ही प्यार करते हैं जितना आप खुद से करते हैं। जब तक आप किसी दूसरे व्यक्ति से खुद से कम प्यार करते हैं, तब तक आप खुद से प्यार करने में सफल नहीं होंगे, लेकिन अगर आप खुद सहित सभी से समान रूप से प्यार करते हैं, तो आप उन्हें एक व्यक्ति के रूप में प्यार करेंगे और वह व्यक्ति ईश्वर और मनुष्य दोनों है। इस प्रकार वह एक महान और धर्मी व्यक्ति है जो खुद से प्यार करते हुए, सभी को समान रूप से प्यार करता है।" 15

15
मीस्टर एकहार्ट, आर.बी. ब्लैकनी द्वारा अनुवादित, हार्पर एंड ब्रदर्स, न्यूयॉर्क, 1941, पृष्ठ 204.

ई. ईश्वर का प्रेम

ऊपर कहा गया है कि प्रेम करने की हमारी आवश्यकता का आधार अलगाव के अनुभव और उसके परिणामस्वरूप एकता के अनुभव द्वारा अलगाव की चिंता पर विजय पाने की आवश्यकता में निहित है। प्रेम का धार्मिक रूप, जिसे ईश्वर का प्रेम कहा जाता है, मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इससे भिन्न नहीं है।

Machine Translated by Google

यह अलगाव पर विजय पाने और एकता प्राप्त करने की आवश्यकता से उपजा है। वास्तव में, ईश्वर के प्रेम में भी उतने ही विभिन्न गुण और पहलू हैं जितने कि मानव प्रेम में—और काफी हद तक हम दोनों में समान अंतर पाते हैं।

सभी आस्तिक धर्मों में, चाहे वे बहुदेववादी हों या एकेश्वरवादी, ईश्वर सर्वोच्च मूल्य, सर्वाधिक वांछनीय भलाई का प्रतीक है। इसलिए, ईश्वर का विशिष्ट अर्थ इस बात पर निर्भर करता है कि किसी व्यक्ति के लिए सर्वाधिक वांछनीय भलाई क्या है। इसलिए, ईश्वर की अवधारणा को समझने की शुरुआत ईश्वर की पूजा करने वाले व्यक्ति के चरित्र-संरचना के विश्लेषण से होनी चाहिए।

जहाँ तक हमें मानव जाति के विकास का ज्ञान है, उसे प्रकृति से, माँ से, रक्त और मिट्टी के बंधनों से मनुष्य के उद्भव के रूप में वर्णित किया जा सकता है। मानव इतिहास के आरंभ में, मनुष्य, प्रकृति के साथ अपनी मूल एकता से अलग हो जाने के बावजूद, इन मूल बंधनों से चिपका हुआ है। वह वापस जाकर या इन मूल बंधनों को थामे रहकर अपनी सुरक्षा पाता है। वह अभी भी पशुओं और वृक्षों की दुनिया से तादात्म्य महसूस करता है, और प्राकृतिक दुनिया के साथ एकाकार रहकर एकता खोजने का प्रयास करता है। कई आदिम धर्म विकास के इस चरण के साक्षी हैं। एक पशु को कुलदेवता में रूपांतरित किया जाता है; व्यक्ति सबसे पवित्र धार्मिक कार्यों में, या युद्ध में, पशु मुखौटे पहनता है; व्यक्ति पशु को ईश्वर मानकर उसकी पूजा करता है। विकास के एक बाद के चरण में, जब मानव कौशल कारीगरी और कलात्मक कौशल के स्तर तक विकसित हो जाता है, जब मनुष्य प्रकृति के उपहारों—जो फल वह खोजता है और जिस पशु को वह मारता है—पर पूरी तरह निर्भर नहीं रहता, तब मनुष्य अपने ही हाथों से बनाए गए उत्पाद को ईश्वर में बदल देता है। यह मिट्टी, चाँदी या सोने से बनी मूर्तियों की पूजा का चरण है। मनुष्य अपनी शक्तियों और कौशलों को अपनी बनाई वस्तुओं में प्रक्षेपित करता है, और इस प्रकार एक विरक्त भाव से अपने पराक्रम, अपनी संपत्ति की पूजा करता है। और भी आगे चलकर मनुष्य अपने देवताओं को मानव रूप प्रदान करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह तभी संभव है जब वह स्वयं के प्रति और भी अधिक जागरूक हो जाए, और जब वह मनुष्य को संसार की सर्वोच्च और सबसे प्रतिष्ठित "वस्तु" के रूप में जान ले। मानवरूपी ईश्वर-पूजा के इस चरण में हम दो आयामों में विकास पाते हैं। एक, देवताओं के स्त्री या पुरुष स्वरूप को संदर्भित करता है, दूसरा, मनुष्य द्वारा प्राप्त परिपक्वता की उस सीमा को, जो उसके देवताओं के स्वरूप और उनके प्रति उसके प्रेम के स्वरूप को निर्धारित करती है।

Machine Translated by Google

आइए सबसे पहले मातृ-केंद्रित से पितृ-केंद्रित धर्मों के विकास की बात करें। उन्नीसवीं सदी के मध्य में बाखोफेन और मॉर्गन की महान और निर्णायक खोजों के अनुसार, और अधिकांश अकादमिक हलकों में उनके निष्कर्षों की अस्वीकृति के बावजूद, इसमें कोई संदेह नहीं है कि पितृसत्तात्मक धर्म से पहले, कम से कम कई संस्कृतियों में, मातृसत्तात्मक धर्म का एक चरण था। मातृसत्तात्मक चरण में, सर्वोच्च सत्ता माँ होती है। वह देवी है, परिवार और समाज में भी वही अधिकार रखती है। मातृसत्तात्मक धर्म के सार को समझने के लिए, हमें केवल मातृ प्रेम के सार के बारे में कही गई बातों को याद रखना होगा। माँ का प्रेम बिना शर्त, सर्व-सुरक्षात्मक, सर्वव्यापी होता है; क्योंकि यह बिना शर्त होता है, इसे नियंत्रित या अर्जित भी नहीं किया जा सकता। इसकी उपस्थिति प्रिय व्यक्ति को आनंद की अनुभूति कराती है; इसकी अनुपस्थिति खोई हुई अवस्था और घोर निराशा का भाव उत्पन्न करती है। चूँकि माँ अपने बच्चों से इसलिए प्यार करती है क्योंकि वे उसके बच्चे हैं, इसलिए नहीं कि वे "अच्छे" हैं, आज्ञाकारी हैं, या उसकी इच्छाओं और आज्ञाओं का पालन करते हैं, इसलिए माँ का प्यार समानता पर आधारित है। सभी मनुष्य समान हैं, क्योंकि वे सभी एक माँ की संतान हैं, क्योंकि वे सभी धरती माँ की संतान हैं।

मानव विकास का अगला चरण, जिसके बारे में हमें पूरी जानकारी है और जिसके लिए अनुमानों और पुनर्निर्माण पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं है, पितृसत्तात्मक चरण है। इस चरण में माता अपने सर्वोच्च पद से अपदस्थ हो जाती है, और पिता धर्म और समाज दोनों में सर्वोच्च सत्ता बन जाता है। पितृ प्रेम का स्वरूप यह है कि वह माँगें करता है, सिद्धांत और नियम स्थापित करता है, और पुत्र के प्रति उसका प्रेम पुत्र द्वारा इन माँगों का पालन करने पर निर्भर करता है। उसे वह पुत्र सबसे अधिक प्रिय होता है जो उसके सबसे अधिक समान हो, जो सबसे अधिक आज्ञाकारी हो और जो उसका उत्तराधिकारी बनने के लिए, उसकी संपत्ति का उत्तराधिकारी बनने के लिए सबसे उपयुक्त हो। (पितृसत्तात्मक समाज का विकास निजी संपत्ति के विकास के साथ-साथ होता है।) परिणामस्वरूप, पितृसत्तात्मक समाज पदानुक्रमित होता है; भाइयों की समानता प्रतिस्पर्धा और आपसी कलह का मार्ग प्रशस्त करती है। चाहे हम भारतीय, मिस्री या यूनानी संस्कृतियों की बात करें, या यहूदी-ईसाई या इस्लामी धर्मों की, हम एक पितृसत्तात्मक दुनिया के बीच में हैं, जहाँ पुरुष देवता हैं, जिन पर एक ही मुख्य देवता शासन करता है, या जहाँ एक ईश्वर को छोड़कर सभी देवताओं का सफाया कर दिया गया है। हालाँकि , चूँकि माँ के प्रेम की कामना मनुष्य के हृदय से नहीं मिटाई जा सकती, इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि प्रेममयी माँ का स्वरूप देवताओं के समूह से कभी पूरी तरह से समाप्त नहीं हो सका। यहूदी धर्म में, ईश्वर के मातृ रूप को सर्वोच्च माना जाता है।

Machine Translated by Google

रहस्यवाद की विभिन्न धाराओं में विशेष रूप से पुनः प्रस्तुत किया गया है। कैथोलिक धर्म में, माता का प्रतीक चर्च और वर्जिन है। प्रोटेस्टेंट धर्म में भी, माता का स्वरूप पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ है, हालाँकि वह छिपी हुई है। लूथर ने स्थापित किया

उनका मुख्य सिद्धांत यह था कि मनुष्य जो कुछ भी करता है, उससे ईश्वर का प्रेम प्राप्त नहीं किया जा सकता। ईश्वर का प्रेम अनुग्रह है, धार्मिक दृष्टिकोण इस अनुग्रह में विश्वास रखना और स्वयं को छोटा और असहाय बनाना है; कोई भी अच्छा कर्म ईश्वर को प्रभावित नहीं कर सकता—या ईश्वर को हमसे प्रेम करने के लिए मजबूर नहीं कर सकता, जैसा कि कैथोलिक सिद्धांतों में प्रतिपादित है। हम यहाँ यह पहचान सकते हैं कि अच्छे कर्मों का कैथोलिक सिद्धांत पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण का एक हिस्सा है; मैं आज्ञाकारिता और उनकी माँगों को पूरा करके पिता का प्रेम प्राप्त कर सकता हूँ। दूसरी ओर, लूथरन सिद्धांत, अपने स्पष्ट पितृसत्तात्मक चरित्र के बावजूद, अपने भीतर एक छिपा हुआ मातृसत्तात्मक तत्व रखता है।

माँ का प्यार पाया नहीं जा सकता, या तो वो होता है या नहीं होता

वहाँ; मैं बस इतना कर सकता हूँ कि विश्वास रखूँ (जैसा कि भजनकार कहता है, "तूने मुझे अपनी माँ के स्तनों में विश्वास दिलाया था।" 16) और खुद को एक असहाय, शक्तिहीन बच्चे में बदल लूँ। लेकिन लूथर के विश्वास की ख़ासियत यह है कि माँ की छवि प्रकट चित्र से गायब हो गई है, और उसकी जगह पिता की छवि आ गई है; माँ द्वारा प्यार किए जाने की निश्चितता के बजाय, पिता द्वारा बिना शर्त प्यार की आशा के विरुद्ध तीव्र संदेह , सर्वोपरि हो गया है।

16
भजन 22:9.

मुझे धर्म में मातृसत्तात्मक और पितृसत्तात्मक तत्वों के बीच के अंतर पर चर्चा करनी थी ताकि यह दिखाया जा सके कि ईश्वर के प्रेम का चरित्र धर्म के मातृसत्तात्मक और पितृसत्तात्मक पहलुओं के संबंधित महत्व पर निर्भर करता है।

पितृसत्तात्मक पहलू मुझे ईश्वर से एक पिता की तरह प्रेम करने के लिए प्रेरित करता है; मैं मानती हूँ कि वह न्यायप्रिय और कठोर है, वह दंड और पुरस्कार देता है; और अंततः वह मुझे अपना प्रिय पुत्र चुनेगा; जैसे ईश्वर ने अब्राहम-इस्राएल को चुना था, जैसे इसहाक ने याकूब को चुना था, जैसे ईश्वर ने अपना प्रिय राष्ट्र चुना था। धर्म के मातृसत्तात्मक पहलू में, मैं ईश्वर से एक सर्वव्यापी माँ के रूप में प्रेम करती हूँ। मुझे उसके प्रेम पर विश्वास है, कि चाहे मैं गरीब और शक्तिहीन हूँ, चाहे मेरे पास कुछ भी हो

Machine Translated by Google

पाप किया है, वह मुझसे प्रेम करेगी, वह अपने बच्चों में से किसी को भी मुझसे अधिक पसंद नहीं करेगी; मेरे साथ जो कुछ भी हो, वह मुझे बचाएगी, मुझे बचाएगी, मुझे क्षमा करेगी।
कहने की ज़रूरत नहीं कि ईश्वर के प्रति मेरे प्रेम और ईश्वर के मेरे प्रति प्रेम को अलग नहीं किया जा सकता। अगर ईश्वर पिता हैं, तो वे मुझे पुत्र के समान प्रेम करते हैं और मैं उन्हें पिता के समान प्रेम करता हूँ। अगर ईश्वर माँ हैं, तो उनका और मेरा प्रेम इसी तथ्य से निर्धारित होता है।

हालाँकि, ईश्वर के प्रति प्रेम के मातृ और पितृत्व पहलुओं के बीच का यह अंतर, इस प्रेम की प्रकृति को निर्धारित करने वाला केवल एक कारक है; दूसरा कारक व्यक्ति द्वारा प्राप्त परिपक्वता की डिग्री है, अर्थात् ईश्वर की उसकी अवधारणा और ईश्वर के प्रति उसके प्रेम में।

चूँकि मानव जाति का विकास माता-केन्द्रित समाज से पिता-केन्द्रित समाज और धर्म की संरचना में स्थानांतरित हो गया, इसलिए हम परिपक्व होते प्रेम के विकास को मुख्य रूप से पितृसत्तात्मक धर्म के विकास में देख सकते हैं।17 इस विकास के आरंभ में हम एक निरंकुश, ईर्ष्यालु ईश्वर को पाते हैं, जो मनुष्य को, जिसे उसने बनाया है, अपनी संपत्ति मानता है, और उसके साथ जो चाहे करने का हकदार है।

[17] यह बात पश्चिम के एकेश्वरवादी धर्मों के लिए विशेष रूप से सत्य है। भारतीय धर्मों में मातृ-रूपों का काफी प्रभाव रहा है, उदाहरण के लिए, देवी काली; बौद्ध धर्म और ताओवाद में ईश्वर या देवी की अवधारणा का कोई विशेष महत्व नहीं था, यदि उसे पूरी तरह से समाप्त नहीं कर दिया गया था।

धर्म का यह वह चरण है जिसमें ईश्वर मनुष्य को स्वर्ग से निकाल देता है, ताकि वह ज्ञान के वृक्ष का फल न खा सके और स्वयं ईश्वर न बन जाए; यही वह चरण है जिसमें ईश्वर जलप्रलय द्वारा मानवजाति का विनाश करने का निर्णय लेता है, क्योंकि अपने प्रिय पुत्र नूह को छोड़कर, कोई भी उसे प्रसन्न नहीं करता; यही वह चरण है जिसमें ईश्वर अब्राहम से माँग करता है कि वह अपने इकलौते, अपने प्रिय पुत्र, इसहाक को मार डाले, ताकि वह परम आज्ञाकारिता के कार्य द्वारा ईश्वर के प्रति अपने प्रेम का प्रमाण दे सके। लेकिन साथ ही एक नया चरण शुरू होता है; ईश्वर नूह के साथ एक वाचा बाँधता है, जिसमें वह मानवजाति को फिर कभी नष्ट न करने का वादा करता है, एक ऐसी वाचा जिससे वह स्वयं बंधा हुआ है। वह न केवल अपने वादों से बंधा है, बल्कि अपने स्वयं के सिद्धांत, न्याय से भी बंधा है, और इस आधार पर ईश्वर को अब्राहम की इस माँग को स्वीकार करना होगा कि यदि वहाँ कम से कम दस न्यायी लोग हों तो सदोम को छोड़ दिया जाए। लेकिन यह विकास ईश्वर को एक निरंकुश आदिवासी सरदार से एक प्रेमपूर्ण पिता में रूपांतरित करने से कहीं आगे जाता है, एक ऐसे पिता में जो स्वयं उन सिद्धांतों से बंधा हुआ है जिन्हें उसने प्रतिपादित किया है; यह ईश्वर को एक पिता के रूप से बदलकर उसके सिद्धांतों, न्याय, सत्य और प्रेम के प्रतीक में बदलने की दिशा में आगे बढ़ता है। ईश्वर सत्य है , ईश्वर

Machine Translated by Google

न्याय है । इस विकास में ईश्वर एक व्यक्ति, एक पुरुष, एक पिता नहीं रह जाता; वह घटनाओं की विविधता के पीछे एकता के सिद्धांत का, मनुष्य के भीतर आध्यात्मिक बीज से खिलने वाले पुष्प के दर्शन का प्रतीक बन जाता है। ईश्वर का कोई नाम नहीं हो सकता। एक नाम हमेशा किसी वस्तु, या व्यक्ति, किसी सीमित चीज़ का बोध कराता है। यदि ईश्वर व्यक्ति नहीं है, वस्तु नहीं है, तो उसका नाम कैसे हो सकता है?

इस परिवर्तन की सबसे उल्लेखनीय घटना बाइबिल की उस कहानी में निहित है जिसमें ईश्वर ने मूसा को ईश्वर का दर्शन दिया था। जब मूसा मूसा से कहता है कि इब्रानियों को विश्वास नहीं होगा कि ईश्वर ने उसे भेजा है, जब तक कि वह उन्हें ईश्वर का नाम न बता दे (मूर्तिपूजक अनाम ईश्वर को कैसे समझ सकते हैं, क्योंकि मूर्ति का मूल सार नाम होना ही है?), ईश्वर एक रियायत देते हैं। वह मूसा से कहते हैं कि उनका नाम है "मैं वही बन रहा हूँ जो मैं बन रहा हूँ।" "मैं-बन रहा हूँ, यही मेरा नाम है।" "मैं-बन रहा हूँ" का अर्थ है कि ईश्वर सीमित नहीं है, कोई व्यक्ति नहीं है, कोई "अस्तित्व" नहीं है। इस वाक्य का सबसे उपयुक्त अनुवाद होगा: उन्हें बता दो कि "मेरा नाम अनाम है।" ईश्वर की कोई भी छवि बनाने, उसका नाम व्यर्थ में उच्चारण करने, और अंततः उसका नाम उच्चारण करने का निषेध, इसी लक्ष्य को प्राप्त करता है, अर्थात् मनुष्य को इस विचार से मुक्त करना कि ईश्वर एक पिता है, कि वह एक व्यक्ति है। बाद के धर्मशास्त्रीय विकास में, इस विचार को इस सिद्धांत में और आगे बढ़ाया जाता है कि ईश्वर को कोई भी सकारात्मक गुण नहीं देना चाहिए। ईश्वर के बारे में यह कहना कि वह बुद्धिमान है, बलवान है, अच्छा है, इसका अर्थ फिर यही है कि वह एक व्यक्ति है; मैं ज़्यादा से ज़्यादा यही कह सकता हूँ कि ईश्वर क्या नहीं है, नकारात्मक गुण बता सकता हूँ, यह मान सकता हूँ कि वह सीमित नहीं है , निर्दयी नहीं है, अन्यायी नहीं है। जितना ज़्यादा मैं जानता हूँ कि ईश्वर क्या नहीं है, उतना ही ज़्यादा मुझे ईश्वर के बारे में ज्ञान होता है।18

18
द गाइड फॉर द पर्प्लेक्स्ड में नकारात्मक विशेषताओं के बारे में मैमोनिडेस की अवधारणा देखें।

एकेश्वरवाद के परिपक्व होते विचार का उसके आगे के परिणामों में अनुसरण करने से केवल एक ही निष्कर्ष निकलता है: ईश्वर का नाम लेना ही नहीं, ईश्वर के बारे में बात ही नहीं करना । तब ईश्वर वही बन जाता है जो वह एकेश्वरवादी धर्मशास्त्र में संभावित रूप से है, नामहीन, एक अकथनीय हकलाहट, जो प्रत्यक्ष ब्रह्मांड, समस्त अस्तित्व के आधार में अंतर्निहित एकता को दर्शाता है; ईश्वर सत्य, प्रेम, न्याय बन जाता है। ईश्वर मैं हूँ, क्योंकि मैं मनुष्य हूँ।

Machine Translated by Google

स्पष्टतः, मानवरूपी से शुद्ध एकेश्वरवादी सिद्धांत की ओर यह विकास ईश्वर के प्रेम की प्रकृति में बहुत बड़ा अंतर लाता है। अब्राहम के ईश्वर को एक पिता की तरह प्रेम किया जा सकता है, या उनसे भयभीत हुआ जा सकता है, कभी उनकी क्षमा, कभी उनका क्रोध प्रमुख पहलू होता है। चूँकि ईश्वर पिता हैं, मैं बालक हूँ। मैं सर्वज्ञता और सर्वशक्तिमानता की आत्मकेंद्रित इच्छा से पूरी तरह मुक्त नहीं हुआ हूँ। मैंने अभी तक एक मनुष्य के रूप में अपनी सीमाओं, अपनी अज्ञानता, अपनी असहायता को समझने की वस्तुनिष्ठता हासिल नहीं की है। मैं अब भी एक बच्चे की तरह दावा करता हूँ कि एक पिता अवश्य होना चाहिए जो मुझे बचाए, जो मेरी देखभाल करे, जो मुझे दंड दे, एक पिता जो मुझे तब पसंद करे जब मैं आज्ञाकारी रहूँ, जो मेरी प्रशंसा से खुश हो और मेरी अवज्ञा पर क्रोधित हो। स्पष्टतः, अधिकांश लोग अपने व्यक्तिगत विकास में इस शिशु अवस्था से उबर नहीं पाए हैं, और इसलिए अधिकांश लोगों के लिए ईश्वर में विश्वास एक सहायक पिता में विश्वास है—एक बचकाना भ्रम।

इस तथ्य के बावजूद कि धर्म की इस अवधारणा को मानव जाति के कुछ महान शिक्षकों और अल्पसंख्यक पुरुषों द्वारा पराजित किया गया है, यह अभी भी धर्म का प्रमुख रूप है।

चूँकि यह सच है, इसलिए ईश्वर के विचार की आलोचना, जैसा कि फ्रायड ने व्यक्त किया था, बिल्कुल सही है। हालाँकि, यह त्रुटि,

इस तथ्य में था कि उन्होंने एकेश्वरवादी धर्म के दूसरे पहलू और उसके वास्तविक सार को नज़रअंदाज़ कर दिया, जिसका तर्क ईश्वर की इस अवधारणा के बिल्कुल खंडन की ओर ले जाता है। सच्चा धार्मिक व्यक्ति, यदि वह एकेश्वरवादी विचार के सार का अनुसरण करता है, तो किसी चीज़ के लिए प्रार्थना नहीं करता, ईश्वर से किसी चीज़ की अपेक्षा नहीं करता; वह ईश्वर से वैसा प्रेम नहीं करता जैसा एक बच्चा अपने पिता या माता से करता है; उसने अपनी सीमाओं को समझने की विनम्रता प्राप्त कर ली है, इस हद तक कि वह ईश्वर के बारे में कुछ भी नहीं जानता। ईश्वर उसके लिए एक प्रतीक बन जाता है जिसमें मनुष्य ने, अपने विकास के एक प्रारंभिक चरण में, उस समग्रता को व्यक्त किया है जिसके लिए मनुष्य प्रयास कर रहा है, आध्यात्मिक जगत का क्षेत्र, प्रेम, सत्य और न्याय। वह उन सिद्धांतों में विश्वास रखता है जिनका प्रतिनिधित्व "ईश्वर" करता है; वह सत्य पर विचार करता है, प्रेम और न्याय को जीता है, और अपने पूरे जीवन को केवल मूल्यवान मानता है।

क्योंकि यह उसे अपनी मानवीय शक्तियों को और अधिक पूर्ण रूप से प्रकट करने का अवसर देता है - एकमात्र वास्तविकता के रूप में जो मायने रखती है, "परम चिंता" का एकमात्र विषय के रूप में; और, अंततः, वह ईश्वर के बारे में बात नहीं करता

Machine Translated by Google

-और न ही उसके नाम का उल्लेख किया, भगवान से प्रेम करने के लिए, यदि वह इस शब्द का उपयोग करने जा रहा था, तो इसका अर्थ होगा, प्रेम करने की पूर्ण क्षमता की प्राप्ति के लिए, उस "ईश्वर" की प्राप्ति के लिए जो स्वयं में है।

इस दृष्टिकोण से, एकेश्वरवादी विचार का तार्किक परिणाम समस्त "धर्मशास्त्र" का, अर्थात् "ईश्वर के बारे में समस्त ज्ञान" का निषेध है।

फिर भी, इस तरह के कट्टरपंथी गैर-धार्मिक दृष्टिकोण और गैर-ईश्वरवादी प्रणाली के बीच अंतर बना हुआ है, जैसा कि हम इसे पाते हैं, उदाहरण के लिए प्रारंभिक बौद्ध धर्म या ताओवाद में।

सभी आस्तिक प्रणालियों में, यहाँ तक कि एक अधार्मिक, रहस्यवादी प्रणाली में भी, आध्यात्मिक क्षेत्र की वास्तविकता की धारणा होती है, जो मनुष्य से परे है, मनुष्य की आध्यात्मिक शक्तियों और मोक्ष एवं आंतरिक जन्म के लिए उसके प्रयास को अर्थ और वैधता प्रदान करती है। एक अधार्मिक प्रणाली में, मनुष्य के बाहर या उससे परे कोई आध्यात्मिक क्षेत्र नहीं होता। प्रेम, तर्क और न्याय का क्षेत्र केवल इसलिए एक वास्तविकता के रूप में विद्यमान है, और क्योंकि मनुष्य अपने विकास की प्रक्रिया में इन शक्तियों को स्वयं में विकसित करने में सक्षम रहा है। इस दृष्टिकोण में, जीवन का कोई अर्थ नहीं है, सिवाय उस अर्थ के जो मनुष्य स्वयं उसे देता है; मनुष्य पूरी तरह से अकेला है, सिवाय इसके कि वह दूसरे की सहायता करे।

ईश्वर के प्रेम के बारे में बात करने के बाद, मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि मैं स्वयं किसी आस्तिक अवधारणा के संदर्भ में नहीं सोचता, और मेरे लिए ईश्वर की अवधारणा केवल एक ऐतिहासिक रूप से निर्धारित अवधारणा है, जिसमें मनुष्य ने अपनी उच्च शक्तियों के अपने अनुभव, सत्य और एकता के लिए अपनी लालसा को एक निश्चित ऐतिहासिक काल में व्यक्त किया है। लेकिन मेरा यह भी मानना है कि कठोर एकेश्वरवाद और आध्यात्मिक वास्तविकता के प्रति एक अनीश्वरवादी परम चिंता के परिणाम दो ऐसे दृष्टिकोण हैं, जो भिन्न होते हुए भी एक-दूसरे से लड़ने की आवश्यकता नहीं रखते।

हालाँकि, इस बिंदु पर, ईश्वर के प्रेम की समस्या का एक और आयाम उभरता है, जिस पर इस समस्या की जटिलता को समझने के लिए चर्चा आवश्यक है। मैं पूर्व (चीन और भारत) और पश्चिम के बीच धार्मिक दृष्टिकोण में एक मूलभूत अंतर की बात कर रहा हूँ; इस अंतर को तार्किक अवधारणाओं के संदर्भ में व्यक्त किया जा सकता है। अरस्तू के बाद से, पश्चिमी दुनिया ने अरस्तू के दर्शन के तार्किक सिद्धांतों का पालन किया है। यह तर्क तादात्म्य के नियम पर आधारित है जो कहता है कि A, A है, विरोधाभास का नियम (A, गैर-A नहीं है) और बहिष्कृत मध्य का नियम (A

Machine Translated by Google

(यह असंभव है कि यह A और गैर-A हो, न तो A और न ही गैर-A)। अरस्तू निम्नलिखित वाक्य में अपनी स्थिति को बहुत स्पष्ट रूप से समझाते हैं: "यह असंभव है

एक ही चीज़ का एक ही समय में एक ही चीज़ से संबंधित होना और न होना, दोनों एक ही अर्थ में; और द्वंद्वात्मक आपत्तियों का समाधान करने के लिए हम जो भी अन्य भेद जोड़ सकते हैं, उन्हें भी जोड़ दें। तो, यह सभी सिद्धांतों में सबसे निश्चित है...

19

19
अरस्तू, मेटाफिजिक्स, पुस्तक गामा, 1005 बी. 20. अरस्तू के मेटाफिजिक्स से उद्धृत, रिचर्ड होप द्वारा नव अनुवादित, कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क, 1952.

अरस्तू के तर्कशास्त्र का यह सिद्धांत हमारी विचार-प्रणाली में इतनी गहराई से समाया हुआ है कि यह "स्वाभाविक" और स्वतःसिद्ध प्रतीत होता है, जबकि दूसरी ओर यह कथन कि X, A है , A नहीं, निरर्थक प्रतीत होता है। (निःसंदेह, यह कथन किसी निश्चित समय में कर्ता X को संदर्भित करता है, न कि वर्तमान X और बाद में X को, या X के एक पहलू को दूसरे पहलू के विरुद्ध नहीं।)

अरस्तू के तर्क के विपरीत एक विरोधाभासी तर्क है, जो यह मानता है कि A और अ-A, X के विधेय के रूप में एक-दूसरे को बहिष्कृत नहीं करते। विरोधाभासी तर्क चीनी और भारतीय चिंतन में, हेराक्लिटस के दर्शन में, और फिर द्वंद्वात्मकता के नाम से, हेगेल और मार्क्स का दर्शन बन गया। विरोधाभासी तर्क के सामान्य सिद्धांत को लाओत्से ने स्पष्ट रूप से वर्णित किया है। "जो शब्द पूर्णतः सत्य हैं, वे विरोधाभासी प्रतीत होते हैं" 20 और च्वांग-त्ज़ु ने भी कहा है: "जो एक है, वह एक है। जो एक नहीं है, वह भी एक है।"

20
लाओ-त्से, द ताओ तेह किंग, द सेक्रेड बुक्स ऑफ द ईस्ट, एफ. मैक्स म्यूलर द्वारा संपादित, खंड XXXIX, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन, 1927, पृष्ठ 120।

विरोधाभासी तर्क के ये सूत्रीकरण सकारात्मक हैं: यह है और यह नहीं है।

एक और सूत्रीकरण नकारात्मक है: यह न तो यह है और न ही वह। विचार की पहली अभिव्यक्ति हमें ताओवादी चिंतन में, हेराक्लिटस में और फिर हेगेलियन द्वंद्ववाद में मिलती है; दूसरी सूत्रीकरण भारतीय दर्शन में अक्सर देखने को मिलती है।

यद्यपि अरस्तूवादी और विरोधाभासी के बीच के अंतर का अधिक विस्तृत विवरण देना इस पुस्तक के दायरे से बाहर होगा

Machine Translated by Google

तर्कशास्त्र में, मैं सिद्धांत को और अधिक समझने योग्य बनाने के लिए कुछ उदाहरण प्रस्तुत करूँगा। पश्चिमी चिंतन में विरोधाभासी तर्कशास्त्र की प्रारंभिक दार्शनिक अभिव्यक्ति हेराक्लिटस के दर्शन में मिलती है। वह मानते हैं कि विपरीतताओं के बीच संघर्ष ही समस्त अस्तित्व का आधार है। वे कहते हैं, "वे यह नहीं समझते कि सर्व-एक, स्वयं में संघर्ष करते हुए, स्वयं के साथ एकरूप है: धनुष और वीणा की तरह परस्पर विरोधी सामंजस्य ।" 21 या इससे भी अधिक स्पष्ट रूप से: "हम एक ही नदी में जाते हैं, फिर भी एक ही नदी में नहीं; यह हम हैं और यह हम नहीं हैं।"

22 या "एक ही चीज़ जीवित और मृत, जागते और सोते, जवान और बूढ़े जैसी चीज़ों में प्रकट होती है।" 23

लाओत्से के दर्शन में यही विचार अधिक काव्यात्मक रूप में व्यक्त किया गया है। ताओवादी विरोधाभासी चिंतन का एक विशिष्ट उदाहरण निम्नलिखित कथन है: "गुरुत्वाकर्षण प्रकाश का मूल है; स्थिरता गति का नियम है।" 24 या "ताओ अपने नियमित क्रम में कुछ नहीं करता, इसलिए ऐसा कुछ भी नहीं है जो वह न करता हो।" 25

1. डब्लू. कैपेल, डाई वोर्सोक्रेटिकर, अल्फ्रेड क्रोनर वेरलाग, स्टटगार्ट, 1953, पृ. 134. (मेरा अनुवाद। ईएफ)
2. वही, पृ. 132.
3. वही, पृ. 133.
4. म्यूएलर, ऑप. सीआईटी., पृ. 69.

या "मेरे वचनों को जानना बहुत आसान है, और उनका अभ्यास करना भी बहुत आसान है; लेकिन दुनिया में ऐसा कोई नहीं है जो उन्हें जान सके और उनका अभ्यास कर सके।"
26 ताओवादी चिंतन में, भारतीय और सुकरातीय चिंतन की तरह, विचार जिस सर्वोच्च सोपान तक ले जा सकता है, वह यह जानना है कि हम नहीं जानते। "जानना और फिर भी [सोचना] कि हम नहीं जानते, सर्वोच्च [उपलब्धि] है; न जानना [और फिर भी सोचना] कि हम जानते हैं, एक रोग है।" 27 इसी दर्शन का ही परिणाम है कि सर्वोच्च ईश्वर का नाम नहीं लिया जा सकता। परम सत्य, परम परमेश्वर को शब्दों या विचारों में नहीं पकड़ा जा सकता। जैसा कि लाओत्से कहते हैं, "जिस ताओ को रौंदा जा सकता है, वह स्थायी और अपरिवर्तनीय ताओ नहीं है। जिस नाम का नाम लिया जा सकता है, वह स्थायी और अपरिवर्तनीय नाम नहीं है।" 28 या, एक अलग सूत्रीकरण में, "हम उसे देखते हैं, और हम उसे नहीं देखते, और हम उसे सम कहते हैं । हम उसे सुनते हैं, और हम उसे नहीं सुनते, और हम उसे 'अश्रव्य' कहते हैं। हम उसे समझने की कोशिश करते हैं, और उसे पकड़ नहीं पाते, और हम उसे ' सूक्ष्म ' कहते हैं।" इन तीन गुणों के साथ, इसे वर्णन का विषय नहीं बनाया जा सकता; और इसलिए हम उन्हें एक साथ मिलाते हैं और उस एक को प्राप्त करते हैं।" 29 और

Machine Translated by Google

इसी विचार का एक और सूत्रीकरण: "जो ताओ को जानता है, वह इसके बारे में बोलने की परवाह नहीं करता; जो इसके बारे में बोलने के लिए तैयार है, वह इसे नहीं जानता।" 30

ब्राह्मण दर्शन का संबंध निम्न के बीच के संबंधों से था
अनेकता (घटनाओं की) और एकता (ब्रह्म)।

25 वही, पृ. 79.

26 वही, पृ. 112.

27 वही, पृ. 113.

1. वही, पृ. 47.
2. वही, पृ. 57.
3. वही, पृ. 100.

लेकिन विरोधाभासी दर्शन को न तो भारत में और न ही चीन में द्वैतवादी दृष्टिकोण से भ्रमित किया जाना चाहिए। सामंजस्य (एकता) उस परस्पर विरोधी स्थिति में निहित है जिससे वह बना है। "ब्राह्मणवादी चिंतन शुरू से ही प्रत्यक्ष जगत की व्यक्त शक्तियों और रूपों की एक साथ होने वाली विरोधी—फिर भी—एकरूपता के विरोधाभास पर केंद्रित था..." 31 ब्रह्मांड और मनुष्य दोनों में परम शक्ति वैचारिक और आध्यात्मिक दोनों स्तरों से परे है।

और इंद्रिय क्षेत्र। इसलिए यह "न तो यह है और न ही ऐसा।" लेकिन, जैसा कि ज़िमर कहते हैं, "इस पूर्णतः अद्वैतवादी बोध में 'वास्तविक और अवास्तविक' के बीच कोई विरोध नहीं है।" 32

बहुलता के पीछे एकता की खोज में, ब्रह्म विचारक इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि विपरीतों का बोधगम्य युग्म वस्तुओं की नहीं, बल्कि बोधगम्य मन की प्रकृति को प्रतिबिम्बित करता है। बोधगम्य विचार को यदि सच्ची वास्तविकता प्राप्त करनी है, तो उसे स्वयं से परे जाना होगा। विरोध मनुष्य के मन की एक श्रेणी है, अपने आप में वास्तविकता का एक तत्व नहीं। ऋग्वेद में इस सिद्धांत को इस रूप में व्यक्त किया गया है: "मैं दो हूँ, प्राण शक्ति और प्राण द्रव्य, एक साथ दो।" इस विचार का अंतिम परिणाम कि विचार केवल विरोधाभासों में ही बोधगम्य हो सकता है, वेदों में और भी अधिक तीव्र क्रम पाया गया है।

Machine Translated by Google

वेदान्तिक चिंतन, जो यह मानता है कि विचार - अपनी समस्त सूक्ष्म विशिष्टता के साथ - "अज्ञान का एक अधिक सूक्ष्म क्षितिज मात्र है, वस्तुतः माया के सभी भ्रामक उपायों में सबसे सूक्ष्म है।" 33

विरोधाभासी तर्क का ईश्वर की अवधारणा पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

1. एच.आर. ज़िमर, फिलॉसफ़ीज़ ऑफ़ इंडिया, पैंथियन बुक्स, न्यूयॉर्क, 1951.
2. वही.
3. वही, पृ. 424.

चूँकि ईश्वर परम सत्य का प्रतिनिधित्व करता है, और चूँकि मानव मन वास्तविकता को विरोधाभासों में देखता है, इसलिए ईश्वर के बारे में कोई सकारात्मक कथन नहीं दिया जा सकता। वेदान्त में सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान ईश्वर के विचार को अज्ञान का चरम रूप माना जाता है।34 यहाँ हम ताओ के अनामत्व के साथ संबंध देखते हैं, उस ईश्वर का अनाम नाम जो स्वयं को मूसा के सामने प्रकट करता है, मीस्टर एकहार्ट के "परम शून्य" के साथ। मनुष्य केवल निषेध को ही जान सकता है, परम सत्य की स्थिति को कभी नहीं। "इस बीच, मनुष्य यह नहीं जान सकता कि ईश्वर क्या है, भले ही वह इस बात से भली-भाँति अवगत हो कि ईश्वर क्या नहीं है..."

इस प्रकार, कुछ भी न होने पर भी, मन सर्वोच्च भलाई के लिए चिल्लाता है।" 35 मीस्टर एकहार्ट के लिए, "ईश्वरीय एक, निषेधों का निषेध है, और निषेधों का खंडन है... प्रत्येक प्राणी में एक निषेध निहित है: एक दूसरे को अस्वीकार करता है।" 36 यह केवल एक और परिणाम है कि ईश्वर मीस्टर एकहार्ट के लिए "परम शून्य" बन जाता है, ठीक उसी तरह जैसे कि कबाला के लिए परम वास्तविकता "एन सोफ", अर्थात् अनंत एक है।

Cf. ज़िमर, ibid., पृ. 424.

35 मीस्टर एकहार्ट, आर.बी. ब्लेकनी द्वारा अनुवादित, हार्पर एंड ब्रदर्स, न्यूयॉर्क, 1941, पृष्ठ 114.

36 वही, पृ. 247. Gf. मैमोनिडेस का नकारात्मक धर्मशास्त्र भी.

मैंने ईश्वर के प्रेम की अवधारणा में एक महत्वपूर्ण अंतर की ज़मीन तैयार करने के लिए अरस्तू के तर्क और विरोधाभासी तर्क के बीच के अंतर पर चर्चा की है। विरोधाभासी तर्क के शिक्षक कहते हैं कि मनुष्य वास्तविकता को केवल विरोधाभासों में ही देख सकता है, और कभी भी विरोधाभासों में नहीं देख सकता।

Machine Translated by Google

परम सत्य - एकत्व, स्वयं एकत्व - के बारे में सोचा । इसका परिणाम यह हुआ कि व्यक्ति ने विचार में उत्तर खोजने को अपना अंतिम लक्ष्य नहीं बनाया। विचार हमें केवल इस ज्ञान की ओर ले जा सकता है कि वह हमें अंतिम उत्तर नहीं दे सकता। विचारों की दुनिया विरोधाभास में फँसी रहती है।

अंततः संसार को समझने का एकमात्र तरीका विचारों में नहीं, बल्कि कर्म में, एकत्व के अनुभव में निहित है। इस प्रकार विरोधाभासी तर्क इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि ईश्वर का प्रेम न तो विचारों में ईश्वर का ज्ञान है, न ही ईश्वर के प्रति प्रेम का विचार, बल्कि ईश्वर के साथ एकत्व का अनुभव करने का कार्य है।

इससे सही जीवन जीने पर ज़ोर दिया जाता है। जीवन का हर छोटा-मोटा और हर महत्वपूर्ण कार्य, ईश्वर के ज्ञान के लिए समर्पित है, लेकिन यह ज्ञान सही विचारों में नहीं, बल्कि सही कर्मों में है। यह पूर्वी धर्मों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

ब्राह्मणवाद, बौद्ध धर्म और ताओवाद, दोनों में ही धर्म का अंतिम लक्ष्य सही विश्वास नहीं, बल्कि सही कर्म है। यहूदी धर्म में भी हमें यही ज़ोर मिलता है।

यहूदी परंपरा में आस्था को लेकर शायद ही कभी कोई मतभेद हुआ हो (एक बड़ा अपवाद, फरीसी और सदूकी के बीच का अंतर, मूलतः दो विपरीत सामाजिक वर्गों का था)। यहूदी धर्म का ज़ोर (विशेषकर हमारे युग की शुरुआत से) सही जीवन जीने के तरीके, हलाखा (इस शब्द का वास्तव में ताओ के समान ही अर्थ है) पर था।

आधुनिक इतिहास में, स्पिनोज़ा, मार्क्स और फ्रायड के विचारों में भी यही सिद्धांत अभिव्यक्त होता है। स्पिनोज़ा के दर्शन में, ज़ोर सही विश्वास से हटकर सही जीवन-आचरण पर केंद्रित है। मार्क्स ने भी यही सिद्धांत व्यक्त किया था जब उन्होंने कहा था, "दार्शनिकों ने दुनिया की अलग-अलग तरह से व्याख्या की है—कार्य इसे रूपांतरित करना है।" फ्रायड का विरोधाभासी तर्क उन्हें मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा की प्रक्रिया की ओर ले जाता है, जो स्वयं के निरंतर गहन होते अनुभव की प्रक्रिया है।

विरोधाभासी तर्क के दृष्टिकोण से, ज़ोर विचार पर नहीं, बल्कि कर्म पर है। इस दृष्टिकोण के कई अन्य परिणाम हुए। सबसे पहले, इसने उस सहिष्णुता को जन्म दिया जो हमें भारतीय और चीनी धार्मिक विकास में मिलती है। यदि सही विचार परम सत्य नहीं है, और न ही मार्ग है, तो

Machine Translated by Google

मोक्ष की प्राप्ति के लिए, दूसरों से लड़ने का कोई कारण नहीं है, जिनकी सोच अलग-अलग सूत्रों पर पहुँची है। यह सहिष्णुता कई लोगों की कहानी में खूबसूरती से व्यक्त होती है, जिन्हें अंधेरे में एक हाथी का वर्णन करने के लिए कहा गया था। एक ने उसकी सूंड को छूते हुए कहा, "यह जानवर पानी के पाइप जैसा है"; दूसरे ने उसके कान को छूते हुए कहा, "यह जानवर पंखे जैसा है"; तीसरे ने उसके पैरों को छूते हुए उस जानवर का वर्णन एक खंभे के रूप में किया।

दूसरे, विरोधाभासी दृष्टिकोण ने मनुष्य के रूपांतरण पर ज़ोर दिया , बजाय एक ओर सिद्धांत और दूसरी ओर विज्ञान के विकास पर । भारतीय, चीनी और रहस्यवादी दृष्टिकोणों से, मनुष्य का धार्मिक कार्य सही सोचना नहीं, बल्कि सही कार्य करना और/या एकाग्र ध्यान की क्रिया में उस एक के साथ एकाकार होना है।

पश्चिमी चिंतन की मुख्यधारा के लिए इसका विपरीत सत्य है। चूँकि सही विचार में परम सत्य की खोज की अपेक्षा की जाती थी, इसलिए विचार पर ही अधिक बल दिया गया, हालाँकि सही कर्म को भी महत्वपूर्ण माना गया। धार्मिक विकास में इसने हठधर्मिता के निर्माण, हठधर्मिता के बारे में अंतहीन तर्क-वितर्क और "अविश्वासी" या विधर्मी के प्रति असहिष्णुता को जन्म दिया। इसके अतिरिक्त, इसने धार्मिक दृष्टिकोण के मुख्य उद्देश्य के रूप में "ईश्वर में विश्वास" पर ज़ोर दिया। बेशक, इसका अर्थ यह नहीं था कि यह अवधारणा भी नहीं थी कि व्यक्ति को सही जीवन जीना चाहिए। फिर भी, जो व्यक्ति ईश्वर में विश्वास करता था—भले ही वह ईश्वर को जीए नहीं —वह स्वयं को उस व्यक्ति से श्रेष्ठ समझता था जो ईश्वर को जीए तो था, लेकिन उसमें "विश्वास" नहीं करता था।

विचार पर ज़ोर देने का एक और ऐतिहासिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण परिणाम भी है। यह विचार कि विचार में सत्य पाया जा सकता है, न केवल हठधर्मिता को जन्म देता है, बल्कि विज्ञान को भी जन्म देता है। वैज्ञानिक विचार में, सही विचार ही सबसे महत्वपूर्ण है, बौद्धिक ईमानदारी के पहलू से भी, और वैज्ञानिक विचार को व्यवहार में लागू करने के पहलू से भी—अर्थात तकनीक के संदर्भ में भी।

संक्षेप में, विरोधाभासी विचार ने सहिष्णुता और आत्म-परिवर्तन के प्रयास को जन्म दिया। अरस्तू के दृष्टिकोण ने हठधर्मिता और विज्ञान, कैथोलिक चर्च और परमाणु ऊर्जा की खोज को जन्म दिया।

परमेश्वर के प्रेम की समस्या के लिए दो दृष्टिकोणों के बीच इस अंतर के परिणामों को पहले ही स्पष्ट रूप से समझाया जा चुका है, और इसे केवल संक्षेप में संक्षेपित करने की आवश्यकता है।

Machine Translated by Google

प्रमुख पश्चिमी धार्मिक व्यवस्था में, ईश्वर का प्रेम
मूलतः ईश्वर में, ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास के समान ही,

ईश्वर का न्याय, ईश्वर का प्रेम। ईश्वर का प्रेम मूलतः एक विचार अनुभव है। पूर्वी धर्मों और रहस्यवाद में,

ईश्वर का प्रेम एकता का गहन अनुभव है, जो जीवन के प्रत्येक कार्य में इस प्रेम की अभिव्यक्ति के साथ अविभाज्य रूप से जुड़ा हुआ है।
इस लक्ष्य के लिए सबसे क्रांतिकारी सूत्रीकरण मीस्टर एकहार्ट द्वारा दिया गया है: "यदि मैं ईश्वर में परिवर्तित हो जाऊं और वह मुझे अपने साथ एक कर ले, तो जीवित ईश्वर की कृपा से हमारे बीच कोई भेद नहीं रह जाता...

कुछ लोग कल्पना करते हैं कि वे ईश्वर को देखने जा रहे हैं, कि वे ईश्वर को ऐसे देखेंगे जैसे ईश्वर वहाँ खड़ा है और वे यहाँ हैं, लेकिन ऐसा नहीं है।
ईश्वर और मैं: हम एक हैं।

ईश्वर को जानकर मैं उसे अपने पास ले आता हूँ। ईश्वर से प्रेम करके मैं उसमें प्रवेश करता हूँ।" 37

37 मिस्टर एकहार्ट, ऑप. सिटपीपी. 181-2.

अब हम माता-पिता के प्रति प्रेम और ईश्वर के प्रति प्रेम के बीच एक महत्वपूर्ण समानता पर लौट सकते हैं। बच्चा अपनी माँ से "समग्र अस्तित्व का आधार" मानकर उससे जुड़ता है। वह असहाय महसूस करता है और उसे माँ के सर्वव्यापी प्रेम की आवश्यकता होती है। फिर वह अपने स्नेह के नए केंद्र के रूप में पिता की ओर मुड़ता है, पिता विचार और कर्म का मार्गदर्शक सिद्धांत होता है; इस अवस्था में वह पिता की प्रशंसा प्राप्त करने और उनकी नाराजगी से बचने की आवश्यकता से प्रेरित होता है। पूर्ण परिपक्वता की अवस्था में वह स्वयं को माता और पिता के व्यक्तित्व से मुक्त कर लेता है, जो रक्षक और आदेशकारी शक्तियाँ हैं; उसने स्वयं में मातृ और पितृत्व के सिद्धांतों को स्थापित कर लिया है। वह स्वयं अपना पिता और माता बन गया है; वह पिता और माता है । मानव जाति के इतिहास में हम यही विकास देखते हैं—और इसकी आशा भी कर सकते हैं—: ईश्वर के प्रति प्रेम की शुरुआत से, एक माँ देवी के प्रति असहाय लगाव के रूप में, एक पितृतुल्य ईश्वर के प्रति आज्ञाकारी लगाव के माध्यम से, एक परिपक्व अवस्था तक जहाँ ईश्वर एक बाहरी शक्ति नहीं रह जाता, जहाँ मनुष्य ने प्रेम और न्याय के सिद्धांतों को आत्मसात कर लिया है।

Machine Translated by Google

स्वयं में, जहाँ वह ईश्वर के साथ एक हो गया है, और अंततः, एक
वह बिंदु जहां वह ईश्वर के बारे में केवल काव्यात्मक, प्रतीकात्मक अर्थ में बात करता है।

इन विचारों से यह निष्कर्ष निकलता है कि ईश्वर के प्रति प्रेम को माता-पिता के प्रति प्रेम से अलग नहीं किया जा सकता। यदि कोई व्यक्ति माता, कुल, राष्ट्र के प्रति अनाचारपूर्ण आसक्ति से मुक्त नहीं होता, यदि वह दंड देने वाले और पुरस्कार देने वाले पिता, या किसी अन्य सत्ता पर बचकानी निर्भरता बनाए रखता है, तो वह ईश्वर के प्रति अधिक परिपक्व प्रेम विकसित नहीं कर सकता; तब उसका धर्म धर्म के उस प्रारंभिक चरण का है, जिसमें ईश्वर को एक सर्व-रक्षक माता या दंड देने वाले-पुरस्कृत पिता के रूप में अनुभव किया जाता था।

समकालीन धर्म में हम पाते हैं कि प्रारंभिक और सबसे आदिम विकास से लेकर उच्चतम विकास तक, सभी चरण अभी भी विद्यमान हैं। "ईश्वर" शब्द जनजातीय मुखिया के साथ-साथ "परम शून्य" का भी बोध कराता है। इसी प्रकार, जैसा कि फ्रायड ने दर्शाया है, प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर, अपने अचेतन में, असहाय शिशु से लेकर आगे तक की सभी अवस्थाओं को धारण करता है। प्रश्न यह है कि वह किस सीमा तक विकसित हुआ है। एक बात निश्चित है: ईश्वर के प्रति उसके प्रेम का स्वरूप मनुष्य के प्रति उसके प्रेम के स्वरूप से मेल खाता है, और इसके अलावा, ईश्वर और मनुष्य के प्रति उसके प्रेम का वास्तविक गुण प्रायः अचेतन होता है—जो उसके प्रेम के एक अधिक परिपक्व विचार द्वारा ढका और तर्कसंगत होता है। इसके अलावा, मनुष्य के प्रति प्रेम, जबकि उसके परिवार के साथ उसके संबंधों में प्रत्यक्ष रूप से अंतर्निहित है, अंततः संरचना द्वारा निर्धारित होता है।

वह जिस समाज में रहता है, उसका। अगर सामाजिक संरचना सत्ता के प्रति समर्पण की है—प्रकट सत्ता या बाज़ार और जनमत की अनाम सत्ता—तो ईश्वर की उसकी अवधारणा बचकानी और परिपक्व अवधारणा से कोसों दूर होगी, जिसके बीज एकेश्वरवादी धर्म के इतिहास में मिलते हैं।

Machine Translated by Google

III. समकालीन पश्चिमी समाज में प्रेम और उसका विघटन

यदि प्रेम परिपक्व, उत्पादक चरित्र की क्षमता है, तो इसका अर्थ यह है कि किसी भी संस्कृति में रहने वाले व्यक्ति में प्रेम करने की क्षमता उस संस्कृति के औसत व्यक्ति के चरित्र पर पड़ने वाले प्रभाव पर निर्भर करती है। यदि हम समकालीन पश्चिमी संस्कृति में प्रेम की बात करते हैं, तो हमारा तात्पर्य यह पूछना है कि क्या पश्चिमी सभ्यता की सामाजिक संरचना और उससे उत्पन्न भावना प्रेम के विकास के लिए अनुकूल हैं। यह प्रश्न उठाना इसका नकारात्मक उत्तर देना है। हमारे पश्चिमी जीवन का कोई भी वस्तुनिष्ठ पर्यवेक्षक इस बात पर संदेह नहीं कर सकता कि प्रेम—भ्रातृ प्रेम, मातृ प्रेम और कामुक प्रेम—एक अपेक्षाकृत दुर्लभ घटना है, और इसका स्थान छद्म प्रेम के अनेक रूपों ने ले लिया है, जो वास्तव में प्रेम के विघटन के अनेक रूप हैं।

पूँजीवादी समाज एक ओर राजनीतिक स्वतंत्रता के सिद्धांत पर आधारित है, और दूसरी ओर सभी आर्थिक, अर्थात् सामाजिक संबंधों के नियामक के रूप में बाज़ार पर। वस्तु बाज़ार उन परिस्थितियों का निर्धारण करता है जिनमें वस्तुओं का आदान-प्रदान होता है, श्रम बाज़ार श्रम के अधिग्रहण और विक्रय को नियंत्रित करता है। उपयोगी वस्तुएँ और उपयोगी मानवीय ऊर्जा व कौशल, दोनों ही वस्तुओं में परिवर्तित हो जाते हैं जिनका बाज़ार की परिस्थितियों में बिना बल प्रयोग और बिना धोखाधड़ी के आदान-प्रदान होता है।

जूते, चाहे वे कितने भी उपयोगी और ज़रूरी क्यों न हों, अगर बाज़ार में उनकी माँग न हो, तो उनका कोई आर्थिक मूल्य (विनिमय मूल्य) नहीं होता; अगर मौजूदा बाज़ार परिस्थितियों में उनकी माँग न हो, तो मानव ऊर्जा और कौशल का कोई विनिमय मूल्य नहीं होता। पूँजी का मालिक श्रम खरीद सकता है और उसे अपनी पूँजी के लाभदायक निवेश के लिए काम करने का आदेश दे सकता है। मौजूदा बाज़ार परिस्थितियों में श्रम के मालिक को उसे पूँजीपतियों को बेचना होगा।

जब तक कि उसे भूखा न मरना पड़े। यह आर्थिक संरचना मूल्यों के पदानुक्रम में प्रतिबिम्बित होती है। पूँजी श्रम को नियंत्रित करती है; संचित वस्तुएँ, जो मृत हैं, श्रम से, मानव शक्ति से, और जीवित वस्तुओं से श्रेष्ठतर मूल्य रखती हैं।

Machine Translated by Google

पूंजीवाद की शुरुआत से ही यही मूल संरचना रही है। हालाँकि यह अभी भी आधुनिक पूंजीवाद की विशेषता है, फिर भी कई कारक बदल गए हैं जो समकालीन पूंजीवाद को एक नया आयाम देते हैं।

पूंजीवाद अपने विशिष्ट गुणों के लिए जाना जाता है और आधुनिक मनुष्य के चरित्र-संरचना पर गहरा प्रभाव डालता है। पूंजीवाद के विकास के परिणामस्वरूप हम पूंजी के केंद्रीकरण और संकेंद्रण की एक निरंतर बढ़ती प्रक्रिया देख रहे हैं। बड़े उद्यम लगातार आकार में बढ़ते जा रहे हैं, जबकि छोटे उद्यम बाहर निकल रहे हैं। इन उद्यमों में निवेशित पूंजी का स्वामित्व, उनके प्रबंधन के कार्य से अधिकाधिक अलग होता जा रहा है। लाखों शेयरधारक उद्यम के "मालिक" हैं; एक प्रबंधकीय नौकरशाही, जिसे अच्छा वेतन मिलता है, लेकिन जो उद्यम की मालिक नहीं है, उसका प्रबंधन करती है। यह नौकरशाही अधिकतम लाभ कमाने में कम और उद्यम के विस्तार और अपनी शक्ति में अधिक रुचि रखती है। पूंजी के बढ़ते संकेंद्रण और एक शक्तिशाली प्रबंधकीय नौकरशाही के उदय के साथ-साथ श्रमिक आंदोलन का विकास भी हो रहा है। श्रम के संघीकरण के माध्यम से, व्यक्तिगत श्रमिक को श्रम बाजार में अपने लिए सौदेबाजी नहीं करनी पड़ती; वह बड़े श्रमिक संघों में एकजुट होता है, जिसका नेतृत्व भी एक शक्तिशाली नौकरशाही करती है जो औद्योगिक दिग्गजों के मुकाबले उसका प्रतिनिधित्व करती है। पूँजी और श्रम के क्षेत्र में, पहल, चाहे अच्छी हो या बुरी, व्यक्ति से नौकरशाही की ओर स्थानांतरित हो गई है। बढ़ती संख्या में लोग स्वतंत्र होना छोड़ रहे हैं और बड़े आर्थिक साम्राज्यों के प्रबंधकों पर निर्भर हो रहे हैं।

पूँजी के इस संकेंद्रण से उत्पन्न एक और निर्णायक विशेषता, और आधुनिक पूँजीवाद की विशेषता, कार्य के संगठन के विशिष्ट तरीके में निहित है। श्रम के आमूल-चूल विभाजन वाले व्यापक रूप से केंद्रीकृत उद्यम, कार्य के ऐसे संगठन की ओर ले जाते हैं जहाँ व्यक्ति अपनी वैयक्तिकता खो देता है, जहाँ वह मशीन का एक बेकार पुर्जा बन जाता है। आधुनिक पूँजीवाद की मानवीय समस्या को इस प्रकार सूत्रबद्ध किया जा सकता है:

आधुनिक पूँजीवाद को ऐसे लोगों की ज़रूरत है जो सुचारू रूप से और बड़ी संख्या में सहयोग करें; जो अधिक से अधिक उपभोग करना चाहते हों; और जिनकी रुचियाँ मानकीकृत हों और जिन्हें आसानी से प्रभावित और पूर्वानुमानित किया जा सके। उसे ऐसे लोगों की ज़रूरत है जो स्वतंत्र और स्वाधीन महसूस करें, किसी अधिकार, सिद्धांत या विवेक के अधीन न हों—फिर भी आज्ञा मानने को तैयार हों, जो उनसे अपेक्षित कार्य करें,

Machine Translated by Google

बिना किसी घर्षण के सामाजिक मशीन में फिट होने के लिए; जिसे बिना बल के निर्देशित किया जा सकता है, बिना नेताओं के नेतृत्व किया जा सकता है, बिना उद्देश्य के प्रेरित किया जा सकता है - सिवाय उसके जो अच्छा करे, आगे बढ़े, कार्य करे, आगे बढ़े।

नतीजा क्या है? आधुनिक मनुष्य खुद से, अपने साथियों से और प्रकृति से अलग-थलग पड़ गया है।

[1] अलगाव की समस्या और आधुनिक समाज के मनुष्य के चरित्र पर प्रभाव की अधिक विस्तृत चर्चा के लिए देखें द सेन सोसाइटी, ई. फ्रॉम, राइनहार्ट और कंपनी, न्यूयॉर्क, 1955.

वह एक वस्तु में तब्दील हो चुका है, अपनी जीवन शक्ति को एक निवेश के रूप में अनुभव करता है जो उसे मौजूदा बाज़ार स्थितियों में अधिकतम लाभ दिलाना चाहिए। मानवीय संबंध मूलतः अलग-थलग पड़े स्वचालित मशीनों के होते हैं, जिनमें से प्रत्येक अपनी सुरक्षा झुंड के करीब रहने पर आधारित करता है, और विचार, भावना या क्रिया में भिन्न न होने पर। जबकि हर कोई बाकियों के जितना हो सके करीब रहने की कोशिश करता है, हर कोई पूरी तरह से अकेला रहता है, असुरक्षा, चिंता और अपराधबोध की गहरी भावना से ग्रस्त, जो हमेशा तब उत्पन्न होती है जब मानवीय अलगाव को दूर नहीं किया जा सकता। हमारी सभ्यता कई ऐसे उपाय प्रदान करती है जो लोगों को इस अकेलेपन से सचेत रूप से अनभिज्ञ रहने में मदद करते हैं: सबसे पहले, नौकरशाही, यांत्रिक कार्य की कठोर दिनचर्या, जो लोगों को उनकी सबसे बुनियादी मानवीय इच्छाओं, उत्कृष्टता और एकता की लालसा से अनभिज्ञ रहने में मदद करती है। चूँकि केवल दिनचर्या ही इसमें सफल नहीं होती, इसलिए मनुष्य मनोरंजन की दिनचर्या, मनोरंजन उद्योग द्वारा प्रस्तुत ध्वनियों और दृश्यों के निष्क्रिय उपभोग द्वारा अपनी अचेतन निराशा पर विजय प्राप्त करता है; इसके अलावा, नित नई चीज़ें खरीदने और जल्द ही उन्हें दूसरों से बदलने की संतुष्टि से भी। आधुनिक मनुष्य वास्तव में हक्सले द्वारा अपनी पुस्तक ब्रेव न्यू वर्ल्ड में वर्णित चित्र के बहुत करीब है : भरपूर भोजन, अच्छे वस्त्र, यौन संतुष्टि, फिर भी आत्म-विहीन, अपने साथियों के साथ सतही संपर्क के अलावा किसी भी संपर्क से रहित, हक्सले द्वारा इतने संक्षिप्त रूप से प्रतिपादित नारों से प्रेरित, जैसे: "जब व्यक्ति अनुभव करता है, तो समाज डगमगाता है"; या "आज जो आनंद आप ले सकते हैं उसे कल पर न टालें," या, जैसा कि उनका सबसे महत्वपूर्ण कथन है: "आज हर कोई खुश है।" आज मनुष्य की खुशी "मस्ती" में निहित है।

आनंद का अर्थ है वस्तुओं, दृश्यों, भोजन, पेय, सिगरेट, लोगों, व्याख्यानों, पुस्तकों आदि का उपभोग करने और उन्हें "अपने अंदर समाहित" करने की संतुष्टि।

Machine Translated by Google

फिल्में - सब खा ली जाती हैं, निगल ली जाती हैं।

दुनिया हमारी भूख के लिए एक बड़ी वस्तु है, एक बड़ा सेब, एक बड़ी बोतल, एक बड़ा स्तन; हम दूध पीने वाले हैं, हमेशा उम्मीद रखने वाले, आशावान—और हमेशा निराश रहने वाले भी। हमारा चरित्र विनिमय और ग्रहण करने, वस्तु विनिमय और उपभोग के लिए तैयार है; हर चीज़, आध्यात्मिक और भौतिक दोनों ही वस्तुएँ, विनिमय और उपभोग की वस्तु बन जाती हैं।

जहाँ तक प्रेम का प्रश्न है, स्थिति आधुनिक मनुष्य के इस सामाजिक चरित्र के अनुरूप है, जैसा कि अनिवार्यतः होना ही चाहिए। स्वचालित प्राणी प्रेम नहीं कर सकते; वे अपने "व्यक्तित्व पैकेज" का आदान-प्रदान कर सकते हैं और उचित सौदे की आशा कर सकते हैं।
प्रेम की, और विशेष रूप से इस अलगाववादी संरचना वाले विवाह की, सबसे महत्वपूर्ण अभिव्यक्तियों में से एक है "टीम" का विचार। सुखी विवाह पर लिखे गए अनेक लेखों में, आदर्श रूप से सुचारु रूप से कार्य करने वाली टीम का वर्णन किया गया है। यह वर्णन एक सुचारु रूप से कार्य करने वाले कर्मचारी के विचार से बहुत अलग नहीं है; उसे "काफी स्वतंत्र" होना चाहिए,

सहयोगी, सहिष्णु, और साथ ही महत्वाकांक्षी और आक्रामक।
इस प्रकार, विवाह परामर्शदाता हमें बताते हैं, पति को अपनी पत्नी को "समझना" चाहिए और उसकी मदद करनी चाहिए। उसे उसकी नई पोशाक और स्वादिष्ट व्यंजन पर सकारात्मक टिप्पणी करनी चाहिए। बदले में, जब वह थका हुआ और निराश घर आए तो उसे समझना चाहिए, जब वह अपनी व्यावसायिक परेशानियों के बारे में बात करे तो उसे ध्यान से सुनना चाहिए, जब वह उसका जन्मदिन भूल जाए तो उसे नाराज़ नहीं बल्कि समझदार होना चाहिए। इस तरह का रिश्ता दो ऐसे लोगों के बीच एक सुचारु रिश्ता होता है जो जीवन भर अजनबी रहते हैं, जो कभी किसी "मुख्य रिश्ते" तक नहीं पहुँच पाते, लेकिन एक-दूसरे के साथ शिष्टाचार से पेश आते हैं और एक-दूसरे को बेहतर महसूस कराने की कोशिश करते हैं।

प्रेम और विवाह की इस अवधारणा में मुख्य ज़ोर अकेलेपन की असहनीय भावना से बचने पर है। "प्रेम" में, अंततः, अकेलेपन से मुक्ति का एक आश्रय मिल जाता है। दुनिया के विरुद्ध दो लोगों का गठबंधन बनता है, और इस अहंकार को प्रेम और आत्मीयता समझ लिया जाता है।

टीम भावना, आपसी सहिष्णुता वगैरह पर ज़ोर अपेक्षाकृत हाल ही में विकसित हुआ है। प्रथम विश्व युद्ध के बाद के वर्षों में, प्रेम की एक ऐसी अवधारणा प्रचलित हुई थी जिसमें आपसी यौन संतुष्टि को संतोषजनक प्रेम संबंधों, और विशेष रूप से एक...

Machine Translated by Google

सुखी विवाह। ऐसा माना जाता था कि विवाह में बार-बार होने वाले दुख का कारण यह था कि विवाहित जोड़ों ने सही "यौन समायोजन" नहीं किया था;

इस दोष का कारण "सही" यौन व्यवहार के बारे में अज्ञानता, और इस प्रकार एक या दोनों साथियों की दोषपूर्ण यौन तकनीक में देखा गया। इस दोष को "ठीक" करने और उन अभागे जोड़ों की मदद करने के लिए जो एक-दूसरे से प्यार नहीं कर सकते थे, कई किताबों में निर्देश और सलाह दी गई है।

सही यौन व्यवहार के बारे में, और परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप से यह वादा किया कि खुशी और प्रेम अवश्य प्राप्त होंगे। मूल विचार यह था कि प्रेम यौन सुख की संतान है, और यदि दो लोग एक-दूसरे को यौन रूप से संतुष्ट करना सीख जाते हैं, तो वे एक-दूसरे से प्रेम करेंगे। यह उस समय के सामान्य भ्रम के अनुकूल था कि सही तकनीकों का उपयोग न केवल औद्योगिक उत्पादन की तकनीकी समस्याओं का, बल्कि सभी मानवीय समस्याओं का समाधान है। इस तथ्य को नज़रअंदाज़ कर दिया गया कि मूल धारणा के विपरीत सत्य है।

प्रेम पर्याप्त यौन संतुष्टि का परिणाम नहीं है, बल्कि यौन सुख—यहाँ तक कि तथाकथित यौन तकनीक का ज्ञान भी—प्रेम का परिणाम है। अगर रोज़मर्रा के अवलोकन के अलावा इस सिद्धांत को सिद्ध करना हो, तो मनोविश्लेषणात्मक आँकड़ों की प्रचुर सामग्री में ऐसा प्रमाण मिल सकता है।

सबसे आम यौन समस्याओं—महिलाओं में शीतलता, और पुरुषों में मानसिक नपुंसकता के कमोबेश गंभीर रूप—के अध्ययन से पता चलता है कि इसका कारण सही तकनीक के ज्ञान का अभाव नहीं, बल्कि उन संकोचों में है जो प्रेम करना असंभव बना देते हैं। विपरीत लिंग के प्रति भय या घृणा उन कठिनाइयों की जड़ में हैं जो किसी व्यक्ति को स्वयं को पूरी तरह से समर्पित करने, सहज रूप से कार्य करने, और शारीरिक निकटता की तात्कालिकता और प्रत्यक्षता में अपने यौन साथी पर भरोसा करने से रोकती हैं। यदि एक यौन संकोची व्यक्ति भय या घृणा से उबरकर प्रेम करने में सक्षम हो जाता है, तो उसकी यौन समस्याएँ हल हो जाती हैं। यदि ऐसा नहीं है, तो यौन तकनीकों का कोई भी ज्ञान मददगार नहीं होगा।

लेकिन जहाँ मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा के आँकड़े इस विचार की भ्रांति की ओर इशारा करते हैं कि सही यौन तकनीक का ज्ञान यौन सुख और प्रेम की ओर ले जाता है, वहीं यह अंतर्निहित धारणा कि प्रेम पारस्परिक यौन संतुष्टि का सहवर्ती है, काफी हद तक फ्रायड के सिद्धांतों से प्रभावित थी। फ्रायड के लिए, प्रेम मूलतः एक यौन घटना थी। "मनुष्य का

Machine Translated by Google

अनुभव से पाया कि यौन (जननांग) प्रेम ने उसे उसकी सबसे बड़ी संतुष्टि प्रदान की, जिससे कि यह वास्तव में उसके लिए सभी खुशियों का एक प्रोटोटाइप बन गया, इस प्रकार उसे यौन संबंधों के मार्ग पर आगे अपनी खुशी की तलाश करने के लिए प्रेरित किया गया होगा, जननांग कामुकता को अपने जीवन का केंद्रीय बिंदु बनाने के लिए।" 2 फ्रायड के लिए भाईचारे के प्यार का अनुभव यौन इच्छा का परिणाम है, लेकिन यौन वृत्ति को "अवरुद्ध उद्देश्य" के साथ एक आवेग में बदल दिया गया है। "अवरुद्ध उद्देश्य वाला प्रेम वास्तव में मूल रूप से कामुक प्रेम से भरा था, और मनुष्य के अचेतन मन में बहुत शांत है।" 3 जहाँ तक विलय की भावना, एकता की भावना ("सागरीय भावना") की बात है,

जो रहस्यमय अनुभव का सार है और एक दूसरे व्यक्ति या अपने साथी मनुष्यों के साथ मिलन की सबसे तीव्र भावना का मूल है, इसकी व्याख्या फ्रायड ने एक रोगात्मक घटना के रूप में की थी, जो कि प्रारंभिक "असीम आत्मप्रशंसा" की स्थिति में प्रतिगमन के रूप में थी ।

यह एक कदम और आगे की बात है कि फ्रायड के लिए प्रेम अपने आप में एक अतार्किक घटना है। उनके लिए अतार्किक प्रेम और परिपक्व व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति के रूप में प्रेम के बीच कोई अंतर नहीं है। उन्होंने स्थानांतरण प्रेम पर एक शोधपत्र में बताया कि स्थानांतरण प्रेम मूलतः प्रेम की "सामान्य" घटना से अलग नहीं है। प्रेम में पड़ना हमेशा असामान्यता की सीमा पर होता है, हमेशा वास्तविकता के प्रति अंधेपन, विवशता के साथ होता है, और बचपन के प्रेम-पात्रों से स्थानांतरण होता है। एक तर्कसंगत घटना के रूप में प्रेम,

परिपक्वता की सर्वोच्च उपलब्धि के रूप में, फ्रायड के लिए, यह जांच का विषय नहीं था, क्योंकि इसका कोई वास्तविक अस्तित्व नहीं था।

2 एस. फ्रायड, सभ्यता और उसके असंतोष, जे. रिविएर द्वारा अनुवादित, द हॉगर्थ प्रेस, लिमिटेड, लंदन, 1953, पृष्ठ 69।

3 वही, पृ. 69.

4 वही, पृ. 21.

5 फ्रायड, गेसमटे वेर्के, लंदन, 1940-52, वॉल्यूम। एक्स।

हालाँकि, इसके प्रभाव को अधिक आंकना एक गलती होगी।
फ्रायड के विचार कि प्रेम यौन आकर्षण का परिणाम है, या यूँ कहें कि यह यौन संतुष्टि के समान है, चेतना में प्रतिबिम्बित होता है।

Machine Translated by Google

भावना। मूलतः कार्य-कारण संबंध इसके विपरीत होता है। फ्रायड के विचार आंशिक रूप से उन्नीसवीं सदी की भावना से प्रभावित थे; आंशिक रूप से वे प्रथम विश्व युद्ध के बाद के वर्षों की प्रचलित भावना के माध्यम से लोकप्रिय हुए। लोकप्रिय और फ्रायडियन दोनों अवधारणाओं को प्रभावित करने वाले कुछ कारक थे, पहला, विक्टोरियन युग के सख्त रीति-रिवाजों के विरुद्ध प्रतिक्रिया। फ्रायड के सिद्धांतों को निर्धारित करने वाला दूसरा कारक मनुष्य की प्रचलित अवधारणा में निहित है, जो पूंजीवाद की संरचना पर आधारित है। यह सिद्ध करने के लिए कि पूंजीवाद मनुष्य की स्वाभाविक आवश्यकताओं के अनुरूप है, यह दर्शाना आवश्यक था कि मनुष्य स्वभाव से ही प्रतिस्पर्धी और पारस्परिक शत्रुता से भरा हुआ है।

जहाँ अर्थशास्त्रियों ने इसे आर्थिक लाभ की अतृप्त इच्छा के संदर्भ में, और डार्विनवादियों ने योग्यतम की उत्तरजीविता के जैविक नियम के संदर्भ में "सिद्ध" किया, वहीं फ्रायड भी इसी निष्कर्ष पर इस धारणा के आधार पर पहुँचे कि पुरुष सभी स्त्रियों पर यौन विजय की असीम इच्छा से प्रेरित होता है, और केवल समाज का दबाव ही उसे अपनी इच्छाओं को पूरा करने से रोकता है। परिणामस्वरूप, पुरुष अनिवार्य रूप से एक-दूसरे से ईर्ष्या करते हैं, और यह पारस्परिक ईर्ष्या और प्रतिस्पर्धा तब भी जारी रहेगी, जब इसके सभी सामाजिक और आर्थिक कारण समाप्त हो जाएँ। 6

[6] फ्रायड के एकमात्र शिष्य, जो कभी अपने गुरु से अलग नहीं हुए, और फिर भी जिन्होंने अपने जीवन के अंतिम वर्षों में प्रेम के बारे में अपने विचार बदल दिए, सैंडोर फ़ेरेन्ज़ी थे। एक उत्कृष्ट कृति के लिए इस विषय पर चर्चा के लिए देखें द लीवन ऑफ लव, लेखक: इज़ेट डी फॉरेस्ट, हार्पर एंड ब्रदर्स, न्यूयॉर्क, 1954.

अंततः, फ्रायड अपनी सोच में उन्नीसवीं सदी में प्रचलित भौतिकवाद से काफ़ी प्रभावित हुए। एक का मानना था कि सभी मानसिक घटनाओं का आधार शारीरिक घटनाओं में निहित है; इसलिए फ्रायड ने प्रेम, घृणा, महत्वाकांक्षा, ईर्ष्या को यौन प्रवृत्ति के विभिन्न रूपों के परिणामों के रूप में समझाया। वह यह नहीं देख पाए कि मूल वास्तविकता मानव अस्तित्व की समग्रता में निहित है, सबसे पहले सभी मनुष्यों के लिए समान मानवीय स्थिति में, और दूसरे, समाज की विशिष्ट संरचना द्वारा निर्धारित जीवन व्यवहार में। (इस प्रकार के भौतिकवाद से आगे निर्णायक कदम मार्क्स ने अपने "ऐतिहासिक भौतिकवाद" में उठाया, जिसमें शरीर, न ही भोजन या संपत्ति की आवश्यकता जैसी कोई प्रवृत्ति, मनुष्य को समझने की कुंजी है, बल्कि मनुष्य की संपूर्ण जीवन प्रक्रिया, उसका "जीवन व्यवहार" है)।

फ्रायड के अनुसार, सभी सहज इच्छाओं की पूर्ण और निर्बाध संतुष्टि मानसिक स्वास्थ्य और खुशी पैदा करेगी। लेकिन

Machine Translated by Google

स्पष्ट नैदानिक तथ्य दर्शाते हैं कि जो पुरुष—और महिलाएं—अपना जीवन अप्रतिबंधित यौन संतुष्टि के लिए समर्पित करते हैं, उन्हें खुशी नहीं मिलती, और अक्सर वे गंभीर विक्षिप्त संघर्षों या लक्षणों से पीड़ित होते हैं। सभी सहज आवश्यकताओं की पूर्ण संतुष्टि न केवल खुशी का आधार नहीं है, बल्कि यह मानसिक स्वास्थ्य की गारंटी भी नहीं देती। फिर भी, फ्रायड का विचार प्रथम विश्व युद्ध के बाद के काल में ही इतना लोकप्रिय हो सका क्योंकि पूंजीवाद की भावना में परिवर्तन हुए थे, बचत पर जोर से खर्च पर, आर्थिक सफलता के साधन के रूप में आत्म-कुंठा से एक निरंतर बढ़ते बाजार के आधार के रूप में उपभोग की ओर, और चिंतित, स्वचालित व्यक्ति के लिए मुख्य संतुष्टि के रूप में। किसी भी इच्छा की संतुष्टि को स्थगित न करना सेक्स के क्षेत्र में और साथ ही सभी भौतिक उपभोग में मुख्य प्रवृत्ति बन गई।

फ्रायड की अवधारणाओं की तुलना करना दिलचस्प है, जो
पूंजीवाद की भावना जैसी वह अस्तित्व में थी, फिर भी अखंड,

इस सदी की शुरुआत में, सबसे प्रतिभाशाली समकालीन मनोविश्लेषकों में से एक, स्वर्गीय एच.एस.

सुलिवन। सुलिवन की मनोविश्लेषणात्मक प्रणाली में, फ्रायड के विपरीत, हम कामुकता और प्रेम के बीच एक सख्त विभाजन पाते हैं।

सुलिवन की अवधारणा में प्रेम और अंतरंगता का क्या अर्थ है?
"अंतरंगता दो लोगों के बीच की वह स्थिति है जो व्यक्तिगत मूल्य के सभी घटकों को मान्यता प्रदान करती है। व्यक्तिगत मूल्य की मान्यता के लिए एक प्रकार के रिश्ते की आवश्यकता होती है जिसे मैं सहयोग कहता हूँ, जिसका अर्थ है कि एक व्यक्ति अपने व्यवहार में दूसरे व्यक्ति की व्यक्त आवश्यकताओं के अनुसार स्पष्ट रूप से समायोजन करता है ताकि बढ़ती समानता की खोज की जा सके—अर्थात, अधिकाधिक पारस्परिक संतुष्टि की प्राप्ति हो, और बढ़ती हुई समान सुरक्षा गतिविधियों को बनाए रखा जा सके।" 7 अगर हम सुलिवन के कथन को उसकी कुछ हद तक जटिल भाषा से मुक्त करें, तो प्रेम का सार सहयोग की स्थिति में दिखाई देता है, जिसमें दो लोग महसूस करते हैं: "हम अपनी प्रतिष्ठा और श्रेष्ठता व योग्यता की भावना को बनाए रखने के लिए खेल के नियमों के अनुसार खेलते हैं।" 8

7
एच.एस. सुलिवन, द इंटरपर्सनल थ्योरी ऑफ़ साइकियाट्री, डब्ल्यू.डब्ल्यू. नॉर्टन कंपनी, न्यूयॉर्क, 1953, पृ. 246. यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि यद्यपि सुलिवन ने यह परिभाषा दी है

किशोरावस्था से पहले की कोशिशों के साथ संबंध स्थापित करते हुए, वह उन्हें किशोरावस्था से पहले सामने आने वाली एकीकृत प्रवृत्तियों के रूप में देखते हैं, "जो जब पूरी तरह से विकसित हो जाती हैं, तो हम

'प्रेम' कहते हैं और कहते हैं कि किशोरावस्था से पहले का यह प्रेम "किसी पूर्ण विकसित, मनोवैज्ञानिक रूप से परिभाषित प्रेम जैसी किसी चीज़ की शुरुआत का प्रतिनिधित्व करता है/

Machine Translated by Google

[8] वही, पृ. 246. सुलिवन द्वारा प्रेम की एक और परिभाषा, कि प्रेम

जब कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति की आवश्यकताओं को अपनी आवश्यकताओं के समान ही महत्वपूर्ण समझता है, तो यह उपरोक्त सूत्रीकरण की तुलना में विपणन पहलू से कम प्रभावित होता है।

जिस प्रकार फ्रायड की प्रेम की अवधारणा उन्नीसवीं सदी के पूंजीवाद के संदर्भ में पितृसत्तात्मक पुरुष के अनुभव का वर्णन है, उसी प्रकार सुलिवन का वर्णन बीसवीं सदी के अलग-थलग, विपणन व्यक्तित्व के अनुभव को संदर्भित करता है।

यह दो लोगों के " दो अहंकार" का वर्णन है , जो अपने साझा हितों को एक साथ रखते हैं और एक शत्रुतापूर्ण और अलग-थलग दुनिया के खिलाफ एकजुट होकर खड़े होते हैं। वास्तव में, अंतरंगता की उनकी परिभाषा सिद्धांत रूप में किसी भी सहयोगी टीम की भावना के लिए मान्य है, जिसमें हर कोई "साझा लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए दूसरे व्यक्ति की व्यक्त आवश्यकताओं के अनुसार अपने व्यवहार को समायोजित करता है" (यह उल्लेखनीय है कि सुलिवन यहाँ व्यक्त आवश्यकताओं की बात कर रहे हैं, जबकि प्रेम के बारे में कम से कम इतना तो कहा ही जा सकता है कि यह दो लोगों के बीच अव्यक्त आवश्यकताओं की प्रतिक्रिया को दर्शाता है)।

पारस्परिक यौन संतुष्टि के रूप में प्रेम, तथा "टीम वर्क" के रूप में प्रेम तथा अकेलेपन से मुक्ति के रूप में प्रेम, आधुनिक पश्चिमी समाज में प्रेम के विघटन के दो "सामान्य" रूप हैं, जो प्रेम की सामाजिक रूप से प्रतिरूपित विकृति है।

प्रेम की विकृति के कई व्यक्तिगत रूप हैं, जिनके परिणामस्वरूप सचेतन पीड़ा होती है और जिन्हें मनोचिकित्सकों और बढ़ती संख्या में आम लोगों द्वारा विक्षिप्त माना जाता है। इनमें से कुछ अधिक सामान्य रूपों का संक्षेप में निम्नलिखित उदाहरणों में वर्णन किया गया है।

विक्षिप्त प्रेम की मूल स्थिति इस तथ्य में निहित है कि एक या दोनों "प्रेमी" माता-पिता के प्रति आसक्त रहे हैं, और वयस्क जीवन में पिता या माता के प्रति जो भावनाएँ, अपेक्षाएँ और भय थे, उन्हें अपने प्रिय व्यक्ति पर स्थानांतरित कर देते हैं; इसमें शामिल व्यक्ति कभी भी शिशु-संबंध के स्वरूप से बाहर नहीं निकल पाए हैं, और वयस्क जीवन में अपनी भावात्मक माँगों में इस स्वरूप की तलाश करते हैं। इन मामलों में, व्यक्ति भावात्मक रूप से दो, पाँच या बारह वर्ष का बच्चा ही बना रहता है, जबकि बौद्धिक और सामाजिक रूप से वह अपनी कालानुक्रमिक आयु के स्तर पर होता है। अधिक गंभीर मामलों में, यह भावनात्मक अपरिपक्वता उसकी सामाजिक प्रभावशीलता में व्यवधान उत्पन्न करती है; कम गंभीर मामलों में, संघर्ष अंतरंग व्यक्तिगत संबंधों के दायरे तक ही सीमित रहता है। माता-पिता-केंद्रित व्यक्तित्व पर हमारी पिछली चर्चा का संदर्भ देते हुए, इस प्रकार के व्यक्तित्व के लिए निम्नलिखित उदाहरण

Machine Translated by Google

आजकल अक्सर देखे जाने वाले विक्षिप्त प्रेम संबंधों का संबंध उन पुरुषों से है जो अपने भावनात्मक विकास में माँ के प्रति शिशुवत लगाव में फँसे रहे हैं। ये वे पुरुष हैं जिनका माँ से दूध कभी छूटा ही नहीं है। ये पुरुष अभी भी बच्चों जैसा महसूस करते हैं; वे माँ का संरक्षण, प्रेम, स्नेह, देखभाल और प्रशंसा चाहते हैं; वे माँ का निःस्वार्थ प्रेम चाहते हैं, एक ऐसा प्रेम जो किसी और कारण से नहीं बल्कि इसलिए दिया जाता है क्योंकि उन्हें इसकी ज़रूरत है, कि वे माँ के बच्चे हैं, कि वे असहाय हैं। ऐसे पुरुष अक्सर काफ़ी स्नेही और आकर्षक होते हैं यदि वे किसी स्त्री को अपने प्रेम में फँसाने की कोशिश करते हैं, और इसमें सफल होने के बाद भी। लेकिन स्त्री के साथ उनका रिश्ता (जैसा कि वास्तव में, अन्य सभी लोगों के साथ होता है) सतही और गैर-ज़िम्मेदाराना रहता है। उनका उद्देश्य प्रेम पाना होता है, प्रेम करना नहीं। इस प्रकार के पुरुषों में आमतौर पर काफ़ी अहंकार होता है, कमोबेश छिपे हुए भव्य विचार। अगर उन्हें सही स्त्री मिल जाती है, तो वे सुरक्षित महसूस करते हैं, दुनिया में सबसे ऊपर होते हैं, और बहुत स्नेह और आकर्षण प्रदर्शित कर सकते हैं, और यही कारण है कि ये पुरुष अक्सर इतने धोखेबाज़ होते हैं। लेकिन जब कुछ समय बाद, स्त्री उनकी काल्पनिक उम्मीदों पर खरी नहीं उतरती, तो संघर्ष और नाराज़गी पनपने लगती है। अगर स्त्री हमेशा उनकी प्रशंसा नहीं करती, अगर वह अपनी ज़िंदगी के लिए दावा करती है, अगर वह खुद प्यार और सुरक्षा चाहती है, और चरम मामलों में, अगर वह दूसरी स्त्रियों के साथ उसके प्रेम संबंधों को स्वीकार करने को तैयार नहीं है (या उनमें रुचि भी नहीं रखती), तो पुरुष को गहरा दुख और निराशा होती है, और आमतौर पर वह इस भावना को इस विचार से तर्कसंगत ठहराता है कि स्त्री "उससे प्यार नहीं करती, स्वार्थी है, या दबंग है।" एक प्यारे बच्चे के प्रति एक प्यारी माँ के व्यवहार से कम कुछ भी प्रेम की कमी का प्रमाण माना जाता है। ये पुरुष आमतौर पर अपने स्नेही व्यवहार, खुश करने की अपनी इच्छा को सच्चे प्यार से भ्रमित कर लेते हैं और इस तरह इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि उनके साथ बहुत अन्याय हो रहा है; वे खुद को महान प्रेमी समझते हैं और अपने प्रेम साथी की कृतघ्नता की कड़वी शिकायत करते हैं।

दुर्लभ मामलों में ऐसा मातृ-केंद्रित व्यक्ति बिना किसी गंभीर व्यवधान के कार्य कर सकता है। यदि उसकी माँ, वास्तव में, उसे अत्यधिक सुरक्षात्मक तरीके से "प्यार" करती है (शायद दबंग होकर, लेकिन विनाशकारी नहीं), यदि उसे उसी मातृत्वपूर्ण पत्नी मिलती है, यदि उसकी विशेष योग्यताएँ और प्रतिभाएँ उसे अपने आकर्षण का उपयोग करने और प्रशंसा पाने की अनुमति देती हैं (जैसा कि कभी-कभी सफल राजनेताओं के साथ होता है), तो वह सामाजिक रूप से "अच्छी तरह से समायोजित" होता है, बिना कभी परिपक्वता के उच्च स्तर तक पहुँचे। लेकिन कम अनुकूल परिस्थितियों में—और ये स्वाभाविक रूप से अधिक बार होती हैं—उसका प्रेम जीवन, यदि उसका सामाजिक जीवन नहीं,

Machine Translated by Google

जब इस प्रकार के व्यक्तित्व को अकेला छोड़ दिया जाता है तो गंभीर निराशा होती है; संघर्ष, और अक्सर तनावपूर्ण चिंता और अवसाद उत्पन्न होता है।

विकृति विज्ञान के एक और भी गंभीर रूप में, माँ के प्रति आसक्ति अधिक गहरी और तर्कहीन होती है। इस स्तर पर, प्रतीकात्मक रूप से कहें तो, इच्छा माँ की रक्षक भुजाओं में लौटने की नहीं, न ही उसके पोषण देने वाले स्तन की, बल्कि उसके सर्वग्राही—और सर्वनाश करने वाले—गर्भ की ओर लौटने की होती है। यदि विवेक का स्वभाव गर्भ से निकलकर संसार में विकसित होना है, तो गंभीर मानसिक रोग का स्वभाव गर्भ द्वारा आकर्षित होना, उसमें वापस खींच लिया जाना है—और यही जीवन से विमुख होना है। इस प्रकार की आसक्ति आमतौर पर उन माताओं के संबंध में होती है जो अपने बच्चों के साथ इस निगलने-विनाश करने वाले तरीके से जुड़ती हैं। कभी प्रेम के नाम पर, कभी कर्तव्य के नाम पर, वे बच्चे, किशोर, पुरुष को अपने भीतर रखना चाहती हैं; वह उनके माध्यम से ही साँस ले सके; सतही यौन स्तर को छोड़कर, प्रेम न कर सके—अन्य सभी स्त्रियों का अपमान कर सके; वह स्वतंत्र और स्वाधीन न रहकर एक शाश्वत अपंग या अपराधी बना रहे।

माँ का यह विनाशकारी और निगलने वाला पहलू, माँ की छवि का नकारात्मक पहलू है। माँ जीवन दे सकती है और जीवन ले भी सकती है। वह पुनर्जीवित करने वाली भी है और नष्ट करने वाली भी; वह प्रेम के चमत्कार कर सकती है—और उससे ज़्यादा कोई चोट नहीं पहुँचा सकता। धार्मिक प्रतिमाओं (जैसे हिंदू देवी काली) और स्वप्न प्रतीकों में माँ के दो विपरीत पहलू अक्सर देखे जा सकते हैं।

ऐसे मामलों में न्यूरोटिक पैथोलॉजी का एक अलग रूप पाया जाता है, जहां मुख्य लगाव पिता के प्रति होता है।

एक उदाहरण एक ऐसे व्यक्ति का है जिसकी माँ ठंडी और अलग-थलग है, जबकि उसका पिता (कुछ हद तक अपनी पत्नी की ठंडक के कारण) अपना सारा स्नेह और रुचि अपने बेटे पर केंद्रित करता है। वह एक "अच्छा पिता" है, लेकिन साथ ही तानाशाह भी। जब भी

वह बेटे के आचरण से प्रसन्न होता है, उसकी प्रशंसा करता है, उसे उपहार देता है, स्नेह करता है; जब भी बेटा उसे अप्रसन्न करता है, तो वह पीछे हट जाता है, या डांटता है।
बेटा, जिसके लिए पिता का स्नेह ही एकमात्र सहारा है, पिता के प्रति दासवत भाव से आसक्त हो जाता है। जीवन में उसका मुख्य उद्देश्य पिता को प्रसन्न करना होता है—और जब वह सफल होता है, तो वह सुखी, सुरक्षित और संतुष्ट महसूस करता है। लेकिन जब वह कोई गलती करता है, असफल होता है, या पिता को प्रसन्न करने में सफल नहीं होता, तो उसे लगता है कि

Machine Translated by Google

निराश, अप्रिय, बहिष्कृत। बाद के जीवन में ऐसा पुरुष एक पितातुल्य व्यक्ति ढूँढ़ने की कोशिश करेगा जिससे वह खुद को इसी तरह जोड़ ले। उसका पूरा जीवन उतार-चढ़ावों का एक क्रम बन जाता है, जो इस बात पर निर्भर करता है कि वह पिता की प्रशंसा पाने में सफल रहा है या नहीं। ऐसे पुरुष अक्सर अपने सामाजिक जीवन में बहुत सफल होते हैं। वे कर्तव्यनिष्ठ, विश्वसनीय, उत्सुक होते हैं—बशर्ते उनके द्वारा चुना गया पितातुल्य व्यक्ति उन्हें संभालना जानता हो। लेकिन महिलाओं के साथ अपने संबंधों में वे अलग-थलग और दूर रहते हैं। महिला उनके लिए कोई केंद्रीय महत्व नहीं रखती; उनके मन में आमतौर पर उसके प्रति थोड़ी सी अवमानना होती है, जो अक्सर एक छोटी बच्ची के लिए पितातुल्य चिंता के रूप में छिपी होती है। हो सकता है कि वे शुरू में अपने पुरुषत्व से किसी महिला को प्रभावित कर लें, लेकिन वे तब और भी निराशाजनक हो जाते हैं, जब जिस महिला से वे विवाह करते हैं, उसे पता चलता है कि उसे उस पितातुल्य व्यक्ति के प्रति प्राथमिक स्नेह के मुकाबले गौण भूमिका निभानी है, जो किसी भी समय पति के जीवन में प्रमुख होता है; यानी, जब तक कि पत्नी अपने पिता से जुड़ी न रही हो—और इस प्रकार वह ऐसे पति के साथ खुश रहती है जो उसके साथ एक मनमौजी बच्चे की तरह व्यवहार करता है।

प्रेम में एक प्रकार की विक्षिप्त गड़बड़ी और भी जटिल है, जो एक अलग तरह की माता-पिता की स्थिति पर आधारित होती है, जो तब होती है जब माता-पिता एक-दूसरे से प्यार नहीं करते, बल्कि झगड़ने या बाहरी तौर पर असंतोष के कोई संकेत देने से भी कतराते हैं। साथ ही, दूरी उन्हें अपने बच्चों के साथ अपने रिश्ते में भी सहज नहीं बनाती। एक छोटी बच्ची जो अनुभव करती है, वह "सही" होने का माहौल होता है।

लेकिन ऐसा रिश्ता जो न तो पिता से और न ही माता से कभी निकट संपर्क की अनुमति देता है, और इसलिए लड़की को उलझन और डर में डाल देता है। उसे कभी भी यकीन नहीं होता कि माता-पिता क्या महसूस करते हैं या सोचते हैं; हमेशा एक अज्ञात, रहस्यमय तत्व मौजूद रहता है,

माहौल में। नतीजतन, लड़की अपनी ही दुनिया में खो जाती है, दिवास्वप्न देखती है, दूर-दूर रहती है, और बाद में अपने प्रेम संबंधों में भी वही रवैया बरकरार रखती है।

इसके अलावा, वापसी के परिणामस्वरूप तीव्र चिंता पैदा होती है, दुनिया में मजबूती से जमे न होने की भावना पैदा होती है, और अक्सर तीव्र उत्तेजना का अनुभव करने के एकमात्र तरीके के रूप में आत्मपीड़ावादी प्रवृत्तियों को जन्म मिलता है।
अक्सर ऐसी महिलाएं अपने पति द्वारा सामान्य और समझदारी भरा व्यवहार बनाए रखने के बजाय, उनके द्वारा शोर मचाने और चिल्लाने को प्राथमिकता देती हैं, क्योंकि इससे कम से कम उन पर से तनाव और भय का बोझ तो कम हो जाता है; लेकिन ऐसा नहीं है।

Machine Translated by Google

कभी-कभार ही वे अनजाने में इस तरह के व्यवहार को भड़काते हैं, ताकि भावनात्मक तटस्थता के कष्टदायक रहस्य को समाप्त किया जा सके।

निम्नलिखित अनुच्छेदों में तर्कहीन प्रेम के अन्य रूपों का वर्णन किया गया है, तथा बचपन के विकास में उनके मूल में मौजूद विशिष्ट कारकों का विश्लेषण नहीं किया गया है:

छद्म प्रेम का एक रूप जो असामान्य नहीं है और जिसे अक्सर "महान प्रेम" के रूप में अनुभव किया जाता है (और अक्सर चलचित्रों और उपन्यासों में वर्णित किया जाता है), मूर्तिपूजक प्रेम है। यदि कोई व्यक्ति उस स्तर तक नहीं पहुँचा है जहाँ उसे अपनी शक्तियों के उत्पादक प्रकटीकरण में निहित पहचान, 'अहं' की भावना हो, तो वह प्रिय व्यक्ति को "आदर्श" मानने लगता है। वह अपनी शक्तियों से विमुख हो जाता है और उन्हें प्रिय व्यक्ति में प्रक्षेपित कर देता है, जिसकी पूजा सर्वोच्च देवता, समस्त प्रेम, समस्त प्रकाश, समस्त आनंद के वाहक के रूप में की जाती है। इस प्रक्रिया में वह स्वयं को शक्ति की सभी अनुभूतियों से वंचित कर लेता है, स्वयं को खोजने के बजाय प्रिय व्यक्ति में खो देता है। चूँकि आमतौर पर कोई भी व्यक्ति, अंततः, अपने (या अपने) मूर्तिपूजक उपासक की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतर पाता, इसलिए निराशा अवश्यंभावी है, और इसके समाधान के रूप में, कभी-कभी एक अंतहीन चक्र में, एक नए आदर्श की तलाश की जाती है। इस प्रकार के मूर्तिपूजक प्रेम की विशेषता, शुरुआत में, प्रेम अनुभव की तीव्रता और अचानकता है। इस मूर्तिपूजक प्रेम को अक्सर सच्चा, महान प्रेम कहा जाता है; लेकिन जहाँ यह प्रेम की तीव्रता और गहराई को दर्शाने के लिए है, वहीं यह मूर्तिपूजक की भूख और निराशा को ही दर्शाता है। कहने की ज़रूरत नहीं कि यह कोई दुर्लभ बात नहीं है कि दो व्यक्ति एक-दूसरे के प्रति परस्पर मूर्तिपूजा में डूबे हों, जो कभी-कभी, चरम मामलों में, एक दो-मुँह के चित्र का प्रतिनिधित्व करती है।

छद्म प्रेम का एक अन्य रूप है जिसे "भावुक प्रेम" कहा जा सकता है।

.

इसका सार इस तथ्य में निहित है कि प्रेम केवल कल्पना में ही अनुभव किया जाता है, न कि किसी वास्तविक व्यक्ति के साथ वर्तमान संबंध में। इस प्रकार के प्रेम का सबसे व्यापक रूप स्क्रीन पर दिखाई देने वाली तस्वीरों, पत्रिकाओं की प्रेम कहानियों और प्रेम गीतों के उपभोक्ता द्वारा अनुभव की जाने वाली अप्रत्यक्ष प्रेम संतुष्टि में पाया जाता है। प्रेम, मिलन और निकटता की सभी अधूरी इच्छाएँ इन उत्पादों के उपभोग में अपनी संतुष्टि पाती हैं। एक पुरुष और एक महिला, जो अपने जीवनसाथी के संबंध में अलगाव की दीवार को भेदने में असमर्थ हैं, उस जोड़े की सुखद या दुखद प्रेम कहानी में शामिल होते ही भावुक हो जाते हैं।

Machine Translated by Google

परदे पर। कई जोड़ों के लिए, परदे पर ये कहानियाँ देखना ही एकमात्र ऐसा अवसर होता है जब वे प्रेम का अनुभव करते हैं—एक-दूसरे के लिए नहीं, बल्कि साथ मिलकर, दूसरों के "प्रेम" के दर्शक बनकर। जब तक प्रेम एक दिवास्वप्न है, वे उसमें भाग ले सकते हैं; लेकिन जैसे ही बात दो वास्तविक लोगों के बीच के रिश्ते की वास्तविकता पर आती है—वे जड़ हो जाते हैं।

भावुक प्रेम का एक और पहलू समय के संदर्भ में प्रेम का अमूर्तीकरण है। एक जोड़ा अपने पिछले प्रेम की यादों से गहराई से द्रवित हो सकता है, हालाँकि जब यह अतीत वर्तमान था, तब कोई प्रेम अनुभव नहीं हुआ था—या अपने भविष्य के प्रेम की कल्पनाएँ। कितने ही सगाईशुदा या नवविवाहित जोड़े अपने प्रेम के आनंद को भविष्य में घटित होने का सपना देखते हैं, जबकि जिस क्षण वे जी रहे हैं, उसी क्षण वे एक-दूसरे से ऊबने लगे हैं? यह प्रवृत्ति आधुनिक मनुष्य की एक सामान्य प्रवृत्ति से मेल खाती है। वह अतीत या भविष्य में जीता है, लेकिन वर्तमान में नहीं। वह भावुकता से अपने बचपन और अपनी माँ को याद करता है—या वह भविष्य के लिए सुखद योजनाएँ बनाता है। चाहे प्रेम का अनुभव दूसरों के काल्पनिक अनुभवों में शामिल होकर परोक्ष रूप से किया जाए, या इसे वर्तमान से हटाकर अतीत या भविष्य में स्थानांतरित किया जाए, प्रेम का यह अमूर्त और विमुख रूप एक ऐसी नशीली दवा का काम करता है जो वास्तविकता के दर्द, व्यक्ति के अकेलेपन और अलगाव को कम करती है।

विक्षिप्त प्रेम का एक और रूप अपनी समस्याओं से बचने के लिए प्रक्षेपी तंत्रों के प्रयोग में निहित है , तथा इसके स्थान पर "प्रिय" व्यक्ति के दोषों और कमजोरियों के प्रति चिंतित रहता है।

इस मामले में व्यक्ति बिल्कुल वैसा ही व्यवहार करते हैं जैसा समूह, राष्ट्र या धर्म करते हैं। वे दूसरे व्यक्ति की छोटी-मोटी कमियों को भी अच्छी तरह समझते हैं और अपनी कमियों को नज़रअंदाज़ करके आनंदपूर्वक आगे बढ़ते हैं—हमेशा दूसरे व्यक्ति पर आरोप लगाने या उसे सुधारने में लगे रहते हैं। अगर दो लोग ऐसा करते हैं—जैसा कि अक्सर होता है—तो प्रेम का रिश्ता आपसी दिखावे में बदल जाता है। अगर मैं दबंग या अनिर्णायक या लालची हूँ, तो मैं अपने साथी पर इसका आरोप लगाता हूँ, और अपने चरित्र के आधार पर, मैं या तो उसे ठीक करना चाहता हूँ या उसे सज़ा देना चाहता हूँ। दूसरा व्यक्ति भी यही करता है—और इस तरह दोनों अपनी-अपनी समस्याओं को नज़रअंदाज़ करने में सफल हो जाते हैं और इसलिए कोई भी ऐसा कदम उठाने में असफल हो जाते हैं जो उनके अपने विकास में मददगार हो।

प्रक्षेपण का एक और रूप है अपनी समस्याओं को बच्चों पर थोपना। सबसे पहले, ऐसा प्रक्षेपण अक्सर बच्चों में होता है।

Machine Translated by Google

बच्चों की इच्छा। ऐसे मामलों में बच्चों की इच्छा मुख्य रूप से प्रक्षेपण द्वारा निर्धारित की जाती है

अपने अस्तित्व की समस्या को बच्चों की समस्या पर थोपना। जब किसी व्यक्ति को लगता है कि वह अपने जीवन को समझ नहीं पाया है, तो वह अपने बच्चों के जीवन के संदर्भ में इसे समझने की कोशिश करता है। लेकिन वह अपने भीतर और बच्चों के लिए असफल होने के लिए बाध्य है। पहला इसलिए क्योंकि अस्तित्व की समस्या का समाधान प्रत्येक व्यक्ति केवल अपने लिए ही कर सकता है, किसी प्रतिनिधि द्वारा नहीं; दूसरा इसलिए क्योंकि व्यक्ति में उन गुणों का अभाव होता है जिनकी आवश्यकता बच्चों को उनके उत्तर की खोज में मार्गदर्शन करने के लिए होती है। जब एक दुखी विवाह को समाप्त करने का प्रश्न उठता है, तब भी बच्चे प्रक्षेपी उद्देश्यों के लिए काम आते हैं।

ऐसी स्थिति में माता-पिता का आम तर्क यही होता है कि वे बच्चों को एकाकी घर के सुखों से वंचित न करने के लिए अलग नहीं हो सकते। हालाँकि, कोई भी विस्तृत अध्ययन यह दर्शाएगा कि "एकाकी परिवार" के भीतर तनाव और दुःख का माहौल बच्चों के लिए खुले अलगाव से कहीं ज़्यादा हानिकारक है—जो उन्हें कम से कम यह तो सिखाता है कि मनुष्य एक साहसी निर्णय से असहनीय स्थिति को समाप्त कर सकता है।

यहाँ एक और आम ग़लती का ज़िक्र करना ज़रूरी है। यह भ्रम कि प्रेम का अर्थ अनिवार्यतः संघर्ष का अभाव है। जिस तरह लोगों का यह मानना आम है कि हर हाल में दर्द और उदासी से बचना चाहिए, उसी तरह वे प्रेम को भी संघर्ष का अभाव मानते हैं।

और वे इस विचार के पीछे ठोस कारण इस तथ्य में पाते हैं कि उनके आस-पास के संघर्ष केवल विनाशकारी आदान-प्रदान प्रतीत होते हैं जिनसे संबंधित किसी भी व्यक्ति का कोई भला नहीं होता। लेकिन इसका कारण यह है कि अधिकांश लोगों के "संघर्ष" वास्तव में वास्तविक संघर्षों से बचने के प्रयास होते हैं।

ये मामूली या सतही मुद्दों पर मतभेद होते हैं, जो अपने स्वभाव से ही स्पष्टीकरण या समाधान की गुंजाइश नहीं रखते। दो लोगों के बीच वास्तविक संघर्ष, जो छिपाने या दिखाने का काम नहीं करते, बल्कि आंतरिक वास्तविकता के गहरे स्तर पर अनुभव किए जाते हैं, जिससे वे संबंधित हैं, विनाशकारी नहीं होते। ये स्पष्टीकरण की ओर ले जाते हैं, ये एक ऐसा रेचन उत्पन्न करते हैं जिससे दोनों व्यक्ति अधिक ज्ञान और अधिक शक्ति के साथ उभरते हैं। यह हमें ऊपर कही गई बात पर फिर से ज़ोर देने के लिए प्रेरित करता है।

प्रेम तभी संभव है जब दो व्यक्ति अपने अस्तित्व के केंद्र से एक दूसरे से संवाद करें, अर्थात उनमें से प्रत्येक अपने अस्तित्व के केंद्र से स्वयं को अनुभव करे।

Machine Translated by Google

केवल इसी "केंद्रीय अनुभव" में मानवीय यथार्थ है, केवल यहीं जीवंतता है, केवल यहीं प्रेम का आधार है। इस प्रकार अनुभव किया गया प्रेम एक सतत चुनौती है; यह विश्राम स्थल नहीं, बल्कि गतिमान, विकसित और साथ-साथ कार्य करने का स्थान है; यहाँ तक कि सामंजस्य हो या संघर्ष, आनंद हो या दुःख, यह इस मूलभूत तथ्य के आगे गौण है कि दो व्यक्ति अपने अस्तित्व के सार से स्वयं को अनुभव करते हैं, कि वे स्वयं से भागकर नहीं, बल्कि स्वयं के साथ एक होकर एक होते हैं। प्रेम की उपस्थिति का केवल एक ही प्रमाण है: रिश्ते की गहराई, और संबंधित प्रत्येक व्यक्ति में जीवंतता और शक्ति; यही वह फल है जिससे प्रेम की पहचान होती है।

जिस प्रकार स्वचालित मशीनें एक-दूसरे से प्रेम नहीं कर सकतीं, उसी प्रकार वे ईश्वर से भी प्रेम नहीं कर सकते। ईश्वर के प्रेम का विघटन मानव प्रेम के विघटन के समान ही हो गया है। यह तथ्य इस विचार के बिल्कुल विपरीत है कि हम इस युग में एक धार्मिक पुनर्जागरण देख रहे हैं। इससे अधिक दूर कुछ भी नहीं हो सकता। हम जो देख रहे हैं (हालांकि कुछ अपवाद भी हैं) वह ईश्वर की मूर्तिपूजक अवधारणा की ओर वापसी है, और ईश्वर के प्रेम का एक ऐसे रिश्ते में रूपांतरण है जो एक विमुख चरित्र संरचना के अनुकूल है। ईश्वर की मूर्तिपूजक अवधारणा की ओर वापसी को देखना आसान है। लोग चिंतित हैं, सिद्धांतों या विश्वास से रहित हैं, वे खुद को आगे बढ़ने के अलावा किसी लक्ष्य से रहित पाते हैं; इसलिए वे बच्चे ही बने रहते हैं, और यह आशा करते हैं कि ज़रूरत पड़ने पर पिता या माता उनकी मदद के लिए आएँगे।

यह सच है कि मध्य युग जैसी धार्मिक संस्कृतियों में भी, औसत व्यक्ति ईश्वर को एक सहायक पिता और माता के रूप में देखता था। लेकिन साथ ही वह ईश्वर को गंभीरता से भी लेता था, इस अर्थ में कि उसके जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य ईश्वर के सिद्धांतों के अनुसार जीवन जीना था, "मोक्ष" को सर्वोच्च प्राथमिकता बनाना था, जिसके अधीन अन्य सभी गतिविधियाँ थीं। आजकल, ऐसा कोई प्रयास मौजूद नहीं है। दैनिक जीवन किसी भी धार्मिक मूल्यों से पूरी तरह अलग है। यह भौतिक सुख-सुविधाओं और व्यक्तित्व के बाज़ार में सफलता के लिए प्रयासरत है। हमारे धर्मनिरपेक्ष प्रयास जिन सिद्धांतों पर आधारित हैं, वे उदासीनता और अहंकार के हैं (जिसे अक्सर "व्यक्तिवाद" या "व्यक्तिगत पहल" कहा जाता है)। सच्ची धार्मिक संस्कृतियों वाले व्यक्ति की तुलना आठ साल की उम्र के बच्चों से की जा सकती है, जिन्हें पिता की मदद की ज़रूरत होती है, लेकिन जो अपने जीवन में उनकी शिक्षाओं और सिद्धांतों को अपनाना शुरू कर देते हैं।

Machine Translated by Google

समकालीन मनुष्य तीन साल के बच्चे जैसा है, जो ज़रूरत पड़ने पर पिता के लिए रोता है, और जब खेल सकता है तो पूरी तरह आत्मनिर्भर होता है।

इस संबंध में, ईश्वर के सिद्धांतों के अनुसार जीवन के परिवर्तन के बिना ईश्वर के मानवरूपी चित्र पर बचकानी निर्भरता में, हम मध्य युग की धार्मिक संस्कृति की तुलना में एक आदिम मूर्तिपूजक जनजाति के अधिक निकट हैं। एक अन्य दृष्टि से हमारी धार्मिक स्थिति ऐसी विशेषताएँ प्रदर्शित करती है जो नई हैं, और केवल समकालीन पश्चिमी पूँजीवादी समाज की विशेषता हैं। मैं इस पुस्तक के पिछले भाग में दिए गए कथनों का उल्लेख कर सकता हूँ। आधुनिक मनुष्य ने स्वयं को एक वस्तु में बदल लिया है; वह अपनी जीवन ऊर्जा को एक निवेश के रूप में अनुभव करता है जिससे उसे अपनी स्थिति और व्यक्तित्व बाज़ार की स्थिति को देखते हुए अधिकतम लाभ कमाना चाहिए। वह स्वयं से, अपने साथियों से और प्रकृति से अलग-थलग पड़ गया है।

उसका मुख्य उद्देश्य अपने कौशल, ज्ञान और स्वयं का, अपने "व्यक्तित्व पैकेज" का उन लोगों के साथ लाभदायक आदान-प्रदान करना है जो समान रूप से निष्पक्ष और लाभदायक आदान-प्रदान के इच्छुक हों। जीवन का कोई लक्ष्य नहीं है सिवाय आगे बढ़ने के, कोई सिद्धांत नहीं है सिवाय निष्पक्ष आदान-प्रदान के, कोई संतुष्टि नहीं है सिवाय निष्पक्ष आदान-प्रदान के।
उपभोग करना।

इन परिस्थितियों में ईश्वर की अवधारणा का क्या अर्थ हो सकता है? यह अपने मूल धार्मिक अर्थ से हटकर, सफलता की विमुख संस्कृति के अनुकूल अर्थ में परिवर्तित हो गई है। हाल के धार्मिक पुनरुत्थान में, ईश्वर में विश्वास को एक मनोवैज्ञानिक उपकरण में बदल दिया गया है जो व्यक्ति को प्रतिस्पर्धी संघर्ष के लिए बेहतर ढंग से तैयार करता है।

धर्म, मनुष्य को उसकी व्यावसायिक गतिविधियों में सहायता करने के लिए आत्म-सुझाव और मनोचिकित्सा के साथ जुड़ता है। बीस के दशक में, "अपने व्यक्तित्व को बेहतर बनाने" के उद्देश्य से ईश्वर का आह्वान नहीं किया जाता था। 1938 में सर्वाधिक बिकने वाली पुस्तक, डेल

कार्नेगी की पुस्तक "हाउ टू विन फ्रेंड्स एंड इन्फ्लुएंस पीपल" पूरी तरह से धर्मनिरपेक्ष स्तर पर ही रही। उस समय कार्नेगी की पुस्तक का जो महत्व था, वही आज हमारी सबसे ज़्यादा बिकने वाली पुस्तक, रेवरेंड एन.वी. पील द्वारा लिखित "द पावर ऑफ़ पॉज़िटिव थिंकिंग" का भी है। इस धार्मिक पुस्तक में यह प्रश्न भी नहीं किया गया है कि सफलता के प्रति हमारी प्रमुख चिंता अपने आप में एकेश्वरवादी धर्म की भावना के अनुरूप है या नहीं। इसके विपरीत, इस सर्वोच्च लक्ष्य पर कभी संदेह नहीं किया गया है, बल्कि ईश्वर में विश्वास और प्रार्थना को सफल होने की क्षमता बढ़ाने के साधन के रूप में सुझाया गया है। ठीक उसी तरह जैसे

Machine Translated by Google

आधुनिक मनोचिकित्सक ग्राहकों को अधिक आकर्षित करने के लिए कर्मचारियों की खुशी की सलाह देते हैं, कुछ पादरी अधिक सफलता के लिए ईश्वर के प्रेम की सलाह देते हैं। "ईश्वर को अपना साझेदार बनाएँ" का अर्थ है ईश्वर को व्यवसाय में साझेदार बनाना, न कि प्रेम, न्याय और सत्य में उनके साथ एकाकार होना। जिस प्रकार भाईचारे के प्रेम का स्थान अवैयक्तिक निष्पक्षता ने ले लिया है, उसी प्रकार ईश्वर यूनिवर्स, इंक. के एक दूरस्थ महानिदेशक में रूपांतरित हो गए हैं; आप जानते हैं कि वे वहाँ हैं, वे ही सारा काम देखते हैं (हालाँकि यह शायद उनके बिना भी चलता), आप उन्हें कभी नहीं देखते, लेकिन जब आप "अपना काम" कर रहे होते हैं, तो आप उनके नेतृत्व को स्वीकार करते हैं।

Machine Translated by Google

IV. प्रेम का अभ्यास

प्रेम करने की कला के सैद्धांतिक पहलू पर विचार करने के बाद, अब हमारे सामने एक और भी कठिन समस्या है, वह है प्रेम करने की कला के अभ्यास की। क्या किसी कला के अभ्यास के बारे में, उसका अभ्यास किए बिना, कुछ सीखा जा सकता है?

समस्या की कठिनाई इस तथ्य से और भी बढ़ जाती है कि आजकल अधिकांश लोग, और इसलिए इस पुस्तक के कई पाठक, यह अपेक्षा रखते हैं कि उन्हें "यह स्वयं कैसे करें" के नुस्खे दिए जाएं, और हमारे मामले में इसका अर्थ यह है कि उन्हें सिखाया जाए कि प्रेम कैसे करें।
मुझे डर है कि जो कोई भी इस अंतिम अध्याय को इसी भावना से पढ़ेगा, उसे घोर निराशा होगी। प्रेम करना एक व्यक्तिगत अनुभव है जिसे हर कोई केवल अपने द्वारा और अपने लिए ही प्राप्त कर सकता है; वास्तव में, शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसने इस अनुभव को प्रारंभिक रूप से न प्राप्त किया हो, कम से कम एक बच्चे, किशोर या वयस्क के रूप में। प्रेम के अभ्यास की चर्चा प्रेम करने की कला के आधारों, उसके दृष्टिकोणों और इन आधारों और दृष्टिकोणों के अभ्यास पर चर्चा कर सकती है। लक्ष्य की ओर कदम केवल स्वयं ही उठाए जा सकते हैं, और निर्णायक कदम उठाने से पहले ही चर्चा समाप्त हो जाती है। फिर भी, मेरा मानना है कि इन दृष्टिकोणों की चर्चा इस कला में निपुणता प्राप्त करने में सहायक हो सकती है—कम से कम उन लोगों के लिए जिन्होंने खुद को "नुस्खे" की अपेक्षा से मुक्त कर लिया है।

किसी भी कला के अभ्यास की कुछ सामान्य आवश्यकताएँ होती हैं, चाहे हम बढ़ईगीरी, चिकित्सा या प्रेम की कला से ही क्यों न जुड़े हों। सबसे पहले, किसी भी कला के अभ्यास के लिए अनुशासन की आवश्यकता होती है। अगर मैं किसी चीज़ को अनुशासित तरीके से नहीं करूँगा, तो मैं उसमें कभी अच्छा नहीं बन पाऊँगा; जो भी मैं सिर्फ़ "मन में" होने पर करता हूँ, वह एक अच्छा या मनोरंजक शौक हो सकता है, लेकिन मैं उस कला में कभी निपुण नहीं बन पाऊँगा। लेकिन समस्या केवल उस विशेष कला के अभ्यास में अनुशासन की नहीं है (मान लीजिए कि हर दिन एक निश्चित संख्या में घंटे अभ्यास करना), बल्कि पूरे जीवन में अनुशासन की है। कोई सोच सकता है कि आधुनिक मनुष्य के लिए अनुशासन से ज़्यादा आसान कुछ भी नहीं है। क्या वह दिन में आठ घंटे एक ऐसे काम में, जो पूरी तरह से नियमित है, अत्यंत अनुशासित तरीके से नहीं बिताता? हालाँकि, सच्चाई यह है कि आधुनिक मनुष्य के पास कार्यक्षेत्र के बाहर बहुत कम आत्म-अनुशासन है। जब वह काम नहीं करता, तो वह आलसी होना, सुस्ताना या, एक अच्छे शब्द का प्रयोग करें तो, "आराम करना" चाहता है। यही इच्छा

Machine Translated by Google

क्योंकि आलस्य मुख्यतः जीवन की दिनचर्या के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया है। सिर्फ़ इसलिए कि मनुष्य को दिन के आठ घंटे अपनी ऊर्जा उन उद्देश्यों के लिए, उन तरीकों से खर्च करने के लिए मजबूर किया जाता है जो उसके अपने नहीं हैं, बल्कि काम की लय द्वारा उसके लिए निर्धारित हैं, वह विद्रोह करता है और उसकी विद्रोहशीलता एक बचकानी आत्म-भोग का रूप ले लेती है। इसके अलावा, अधिनायकवाद के विरुद्ध संघर्ष में वह सभी प्रकार के अनुशासनों के प्रति, तर्कहीन सत्ता द्वारा लागू किए गए अनुशासन के प्रति, और साथ ही स्वयं द्वारा थोपे गए तर्कसंगत अनुशासन के प्रति भी अविश्वासी हो गया है। हालाँकि, ऐसे अनुशासन के बिना, जीवन बिखर जाता है, अस्त-व्यस्त हो जाता है, और एकाग्रता का अभाव हो जाता है।

किसी कला में निपुणता के लिए एकाग्रता एक आवश्यक शर्त है, यह साबित करना शायद ही ज़रूरी हो। जिसने भी कभी कोई कला सीखने की कोशिश की है, वह यह बात जानता है ।
फिर भी, आत्म-अनुशासन से भी ज़्यादा, हमारी संस्कृति में एकाग्रता दुर्लभ है। इसके विपरीत, हमारी संस्कृति एक ऐसी असंकेंद्रित और बिखरी हुई जीवनशैली की ओर ले जाती है जिसकी तुलना शायद ही कहीं और की जा सकती है। आप एक साथ कई काम करते हैं; आप पढ़ते हैं, रेडियो सुनते हैं, बातें करते हैं, धूम्रपान करते हैं, खाते-पीते हैं। आप खुले मुँह वाले उपभोक्ता हैं, जो सब कुछ निगलने के लिए उत्सुक और तैयार हैं—चित्र, शराब, ज्ञान। एकाग्रता की यह कमी हमारे अपने साथ अकेले रहने में कठिनाई में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। बिना बात किए, धूम्रपान किए, पढ़े-लिखे, शराब पिए, स्थिर बैठना ज़्यादातर लोगों के लिए असंभव है। वे घबरा जाते हैं और बेचैन हो जाते हैं, और उन्हें अपने मुँह या हाथों से कुछ न कुछ करना ही पड़ता है। (धूम्रपान इस एकाग्रता की कमी का एक लक्षण है; यह हाथ, मुँह, आँख और नाक को घेर लेता है।)

तीसरा कारक है धैर्य। फिर से, जिसने भी कभी किसी कला में महारत हासिल करने की कोशिश की है, वह जानता है कि किसी भी चीज़ को हासिल करने के लिए धैर्य ज़रूरी है। अगर कोई तुरंत परिणाम चाहता है, तो वह कभी कोई कला नहीं सीख सकता। फिर भी, आधुनिक मनुष्य के लिए, धैर्य का अभ्यास करना उतना ही मुश्किल है जितना अनुशासन और एकाग्रता। हमारी पूरी औद्योगिक व्यवस्था इसके ठीक विपरीत को बढ़ावा देती है: तेज़ी। हमारी सभी मशीनें तेज़ी के लिए डिज़ाइन की गई हैं: कार और हवाई जहाज हमें जल्दी से हमारी मंज़िल तक पहुँचा देते हैं—और जितनी जल्दी, उतना अच्छा। जो मशीन आधे समय में उतनी ही मात्रा में उत्पादन कर सकती है, वह पुरानी और धीमी मशीन से दोगुनी बेहतर है।

बेशक, इसके पीछे महत्वपूर्ण आर्थिक कारण हैं। लेकिन, कई अन्य पहलुओं की तरह, मानवीय मूल्य भी आर्थिक मूल्यों से निर्धारित होने लगे हैं।
जो मशीनों के लिए अच्छा है, वह मनुष्य के लिए भी अच्छा होना चाहिए - ऐसा तर्क है।
आधुनिक मनुष्य सोचता है कि जब वह कुछ नहीं करता तो वह कुछ खो देता है—समय—

Machine Translated by Google

जल्दी से; फिर भी वह नहीं जानता कि जो समय उसने प्राप्त किया है, उसका क्या करे - सिवाय इसके कि उसे नष्ट कर दे।

अंततः, किसी भी कला को सीखने की एक शर्त उस कला में निपुणता का सर्वोच्च ध्यान रखना है । यदि कला सर्वोच्च महत्व की नहीं है, तो प्रशिक्षु उसे कभी नहीं सीख पाएगा। वह अधिक से अधिक एक अच्छा शौकिया तो बना रहेगा, लेकिन कभी उसमें निपुण नहीं बन पाएगा। प्रेम करने की कला के लिए यह शर्त उतनी ही आवश्यक है जितनी किसी अन्य कला के लिए। हालाँकि, ऐसा प्रतीत होता है कि प्रेम करने की कला में, अन्य कलाओं की तुलना में, शौकिया लोगों के पक्ष में गुरुओं और शौकिया लोगों के बीच का अनुपात ज़्यादा भारी है।

किसी कला को सीखने की सामान्य परिस्थितियों के संबंध में एक और बात ध्यान देने योग्य है। कोई व्यक्ति किसी कला को सीधे तौर पर नहीं, बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से सीखना शुरू करता है। किसी कला को शुरू करने से पहले, उसे कई अन्य—और अक्सर असंबद्ध प्रतीत होने वाली चीज़ें—सीखनी पड़ती हैं। बढ़ईगीरी का एक प्रशिक्षु लकड़ी को समतल करना सीखकर शुरुआत करता है; एक प्रशिक्षु

पियानो बजाने की कला में अभ्यास स्केल के अभ्यास से शुरू होता है; तीरंदाजी की ज़ेन कला में एक प्रशिक्षु श्वास अभ्यास से शुरू होता है।1

[1] किसी कला को सीखने के लिए आवश्यक एकाग्रता, अनुशासन, धैर्य और चिंता की तस्वीर के लिए, मैं पाठकों को ई.

हेरिगेल, पैंथियन बुक्स, इंक., न्यूयॉर्क, 1953।

यदि कोई किसी कला में निपुण बनना चाहता है, तो उसे अपना पूरा जीवन उसी के लिए समर्पित करना होगा, या कम से कम उससे जुड़ा होना होगा। कला के अभ्यास में व्यक्ति स्वयं एक साधन बन जाता है, और उसे उसके विशिष्ट कार्यों के अनुसार, तंदुरुस्त रखना होगा। प्रेम की कला के संबंध में, इसका अर्थ है कि जो कोई भी इस कला में निपुण बनना चाहता है, उसे अपने जीवन के प्रत्येक चरण में अनुशासन, एकाग्रता और धैर्य का अभ्यास करना शुरू करना होगा।

अनुशासन का पालन कैसे किया जाता है? हमारे दादा-दादी इस प्रश्न का उत्तर देने में कहीं बेहतर होते। उनकी सलाह थी कि सुबह जल्दी उठो, अनावश्यक विलासिता में लिप्त न होओ और कड़ी मेहनत करो। इस प्रकार के अनुशासन में स्पष्ट कमियाँ थीं। यह कठोर था।

Machine Translated by Google

और अधिनायकवादी, मितव्ययिता और बचत के गुणों पर केंद्रित था, और कई मायनों में जीवन के प्रति शत्रुतापूर्ण था। लेकिन इस तरह के अनुशासन की प्रतिक्रिया में, किसी भी अनुशासन के प्रति संदेह करने और शेष जीवन में अनुशासनहीन, आलसी भोग-विलास को उसका प्रतिरूप बनाने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है।

और आठ घंटे काम के दौरान हम पर थोपी गई दिनचर्या के लिए संतुलन। एक निश्चित समय पर उठना, दिन में ध्यान, पढ़ना, संगीत सुनना, टहलना जैसी गतिविधियों के लिए एक निश्चित समय देना; कम से कम एक निश्चित न्यूनतम सीमा से ज़्यादा रहस्यमय कहानियों और फिल्मों जैसी पलायनवादी गतिविधियों में लिप्त न होना, ज़्यादा खाना या पीना न करना, ये कुछ स्पष्ट और बुनियादी नियम हैं। हालाँकि, यह ज़रूरी है कि अनुशासन का अभ्यास बाहर से खुद पर थोपे गए नियम की तरह न किया जाए, बल्कि यह व्यक्ति की अपनी इच्छा की अभिव्यक्ति बन जाए; इसे सुखद महसूस किया जाए, और व्यक्ति धीरे-धीरे उस तरह के व्यवहार का आदी हो जाए जिसकी उसे अंततः कमी महसूस होगी, अगर उसने इसका अभ्यास करना बंद कर दिया। अनुशासन की हमारी पश्चिमी अवधारणा (हर गुण की तरह) का यह एक दुर्भाग्यपूर्ण पहलू है कि इसका अभ्यास कुछ हद तक कष्टदायक माना जाता है और केवल तभी जब यह कष्टदायक हो, यह "अच्छा" हो सकता है। पूर्व ने बहुत पहले ही यह मान लिया था कि जो मनुष्य के लिए अच्छा है - उसके शरीर और उसकी आत्मा के लिए - वह स्वीकार्य भी होना चाहिए, भले ही शुरुआत में कुछ प्रतिरोधों पर विजय प्राप्त करनी पड़े।

हमारी संस्कृति में एकाग्रता का अभ्यास करना कहीं अधिक कठिन है, जहाँ हर चीज़ एकाग्रता की क्षमता के विरुद्ध काम करती प्रतीत होती है। एकाग्रता सीखने का सबसे महत्वपूर्ण चरण है, बिना पढ़े, रेडियो सुने, धूम्रपान या शराब पिए, स्वयं के साथ अकेले रहना सीखना। वास्तव में, एकाग्रता करने में सक्षम होने का अर्थ है स्वयं के साथ अकेले रहना—और यह क्षमता प्रेम करने की क्षमता के लिए एक शर्त है। अगर मैं किसी दूसरे व्यक्ति से इसलिए जुड़ा हूँ क्योंकि मैं अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो सकता, तो वह जीवन रक्षक हो सकता है, लेकिन वह रिश्ता प्रेम का नहीं है। विरोधाभासी रूप से, अकेले रहने की क्षमता प्रेम करने की क्षमता की शर्त है। जो कोई भी स्वयं के साथ अकेले रहने की कोशिश करता है, उसे पता चलेगा कि यह कितना मुश्किल है। वह बेचैन, बेचैन, या यहाँ तक कि

काफी चिंता होगी। वह अपने तर्कों को तर्कसंगत बनाने के लिए प्रवृत्त होगा

इस अभ्यास को जारी रखने में अनिच्छा, यह सोचकर कि इसका कोई मूल्य नहीं है, यह मूर्खतापूर्ण है, इसमें बहुत समय लगता है, इत्यादि। वह

Machine Translated by Google

यह भी देखें कि उसके मन में तरह-तरह के विचार आते हैं जो उसे अपने वश में कर लेते हैं। वह खुद को दिन के अंत में अपनी योजनाओं के बारे में, या किसी काम में आने वाली किसी कठिनाई के बारे में, या शाम को कहाँ जाना है, या ऐसी कई चीज़ों के बारे में सोचते हुए पाएगा जो उसके मन को भर देंगी—बजाय उसे खाली होने देने के। कुछ बहुत ही सरल अभ्यासों का अभ्यास करना मददगार होगा, जैसे, आराम की मुद्रा में बैठना (न झुककर, न ही अकड़कर), अपनी आँखें बंद करना, और अपनी आँखों के सामने एक सफ़ेद परदा देखने की कोशिश करना, और सभी बाधा डालने वाले चित्रों और विचारों को हटाने की कोशिश करना, फिर अपनी साँसों का अनुसरण करने का प्रयास करना; उसके बारे में सोचना नहीं, न ही उसे मजबूर करना, बल्कि उसका अनुसरण करना—और ऐसा करते हुए उसे महसूस करना; इसके अलावा "मैं" का बोध पाने का प्रयास करना; मैं = स्वयं, अपनी शक्तियों के केंद्र के रूप में, अपनी दुनिया के रचयिता के रूप में। कम से कम, हर सुबह बीस मिनट (और हो सके तो उससे भी ज़्यादा) और हर शाम सोने से पहले ऐसा एकाग्रता अभ्यास करना चाहिए।

[2] यद्यपि पूर्वी, विशेषकर भारतीय संस्कृतियों में इस विषय पर पर्याप्त सिद्धांत और व्यवहार मौजूद हैं, तथापि हाल के वर्षों में भी इसी प्रकार के उद्देश्यों का अनुसरण किया गया है। पश्चिम में भी। मेरे विचार से, सबसे महत्वपूर्ण गिंडलर का स्कूल है, जिसका उद्देश्य अपने शरीर की अनुभूति करना है। गिंडलर पद्धति को समझने के लिए, देखें चालट सेल्वर के कार्य, न्यूयॉर्क के न्यू स्कूल में उनके व्याख्यानों और पाठ्यक्रमों में।

ऐसे अभ्यासों के अलावा, व्यक्ति को अपने हर काम में, संगीत सुनने में, किताब पढ़ने में, किसी व्यक्ति से बात करने में, किसी दृश्य को देखने में, एकाग्र रहना सीखना चाहिए। इस क्षण की गतिविधि ही एकमात्र ऐसी चीज़ होनी चाहिए जो मायने रखती हो, जिसमें व्यक्ति पूरी तरह से समर्पित हो। यदि व्यक्ति एकाग्र है, तो वह क्या कर रहा है, इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता; महत्वपूर्ण और महत्वहीन दोनों ही चीज़ें वास्तविकता का एक नया आयाम ग्रहण कर लेती हैं, क्योंकि उन पर व्यक्ति का पूरा ध्यान होता है। एकाग्रता सीखने के लिए, जहाँ तक हो सके, तुच्छ बातचीत से बचना ज़रूरी है, यानी ऐसी बातचीत जो वास्तविक न हो। यदि दो लोग किसी ऐसे पेड़ के उगने के बारे में बात करते हैं जिसे वे दोनों जानते हैं, या उस रोटी के स्वाद के बारे में जो उन्होंने अभी-अभी साथ मिलकर खाई है, या अपने काम के किसी समान अनुभव के बारे में, तो ऐसी बातचीत प्रासंगिक हो सकती है, बशर्ते वे जिस बारे में बात कर रहे हैं उसका अनुभव करें, और उसे अमूर्त रूप में न लें; दूसरी ओर, बातचीत राजनीति या धर्म के मामलों से संबंधित हो सकती है और फिर भी तुच्छ हो सकती है; ऐसा तब होता है जब दो लोग घिसी-पिटी बातें करते हैं, जब उनका मन उनकी बातों में नहीं होता। मैं यहां यह जोड़ना चाहूंगा कि यह उतना ही महत्वपूर्ण है

Machine Translated by Google

तुच्छ बातचीत से बचने के लिए, बुरी संगति से बचना ज़रूरी है। बुरी संगति से मेरा मतलब सिर्फ़ दुष्ट और विनाशकारी लोगों से नहीं है; उनकी संगति से बचना चाहिए क्योंकि उनका वातावरण विषाक्त और निराशाजनक होता है।
मेरा मतलब ज़ॉम्बी लोगों की संगति से भी है, ऐसे लोगों की संगति से जिनकी आत्मा मर चुकी है, हालाँकि उनका शरीर जीवित है; ऐसे लोगों की संगति जिनके विचार और बातचीत तुच्छ हैं; जो बात करने के बजाय बकबक करते हैं, और जो सोचने के बजाय घिसी-पिटी राय रखते हैं। हालाँकि, ऐसे लोगों की संगति से बचना हमेशा संभव नहीं होता, न ही ज़रूरी। अगर कोई अपेक्षित तरीके से—यानी घिसी-पिटी बातों और तुच्छ बातों में—नहीं, बल्कि सीधे और मानवीय तरीके से प्रतिक्रिया करता है, तो अक्सर वह पाएगा कि ऐसे लोग अपना व्यवहार बदल लेते हैं, अक्सर अप्रत्याशित आघात से उत्पन्न आश्चर्य से मदद मिलती है।

दूसरों के प्रति एकाग्र होने का अर्थ है, मुख्यतः सुनने में सक्षम होना। ज़्यादातर लोग दूसरों की बात सुनते हैं, या सलाह भी देते हैं, लेकिन ध्यान से सुने बिना। वे दूसरे व्यक्ति की बात को गंभीरता से नहीं लेते, और न ही अपने जवाबों को गंभीरता से लेते हैं। नतीजतन, बातचीत उन्हें थका देती है।

उन्हें यह भ्रम होता है कि अगर वे ध्यान लगाकर सुनेंगे तो और भी ज़्यादा थक जाएँगे। लेकिन सच इसके उलट है। कोई भी गतिविधि, अगर एकाग्रता से की जाए, तो व्यक्ति ज़्यादा जागृत रहता है (हालाँकि बाद में स्वाभाविक और लाभदायक थकान आ जाती है), जबकि हर असंयमित गतिविधि व्यक्ति को नींद में डाल देती है—और साथ ही दिन के अंत में सोना मुश्किल बना देती है।

एकाग्र होने का अर्थ है वर्तमान में, यहीं और अभी में पूरी तरह जीना, और जब मैं अभी कुछ कर रहा हूँ, तो अगले काम के बारे में न सोचना। कहने की आवश्यकता नहीं कि एकाग्रता का अभ्यास सबसे ज़्यादा उन लोगों को करना चाहिए जो एक-दूसरे से प्रेम करते हैं। उन्हें एक-दूसरे के करीब रहना सीखना चाहिए, न कि उन कई तरीकों से भागना जिनसे यह किया जाता है। एकाग्रता के अभ्यास की शुरुआत कठिन होगी; ऐसा लगेगा जैसे कोई कभी लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पाएगा। यह कहना ज़रूरी नहीं है कि इसका अर्थ है कि धैर्य रखना ज़रूरी है। अगर कोई यह नहीं जानता कि हर चीज़ का एक समय होता है, और चीज़ों को ज़बरदस्ती करना चाहता है, तो वह वास्तव में कभी भी एकाग्र होने में सफल नहीं होगा—न ही प्रेम करने की कला में।

धैर्य क्या होता है, इसका अंदाज़ा लगाने के लिए बस एक बच्चे को चलना सीखते हुए देखना होगा। वह गिरता है, फिर गिरता है, फिर गिरता है, फिर भी कोशिश करता रहता है, सुधार करता रहता है, जब तक कि एक दिन वह बिना गिरे चलने लगता है। बड़ा क्या कर सकता है?

Machine Translated by Google

यदि किसी व्यक्ति में बच्चे जैसा धैर्य और एकाग्रता हो, तो वह अपने लिए महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त कर सकता है!

स्वयं के प्रति संवेदनशील बने बिना कोई भी व्यक्ति ध्यान केन्द्रित करना नहीं सीख सकता ।
इसका क्या मतलब है? क्या हमें हर समय अपने बारे में सोचना चाहिए, खुद का "विश्लेषण" करना चाहिए, या क्या? अगर हम किसी मशीन के प्रति संवेदनशील होने की बात करें, तो इसका मतलब समझाने में कोई दिक्कत नहीं होगी।

उदाहरण के लिए, जो कोई भी कार चलाता है, वह इसके प्रति संवेदनशील होता है। यहाँ तक कि एक छोटी सी, अपरिचित आवाज़ भी उसे महसूस हो जाती है, और मोटर की गति में भी थोड़ा सा बदलाव। इसी तरह, ड्राइवर भी सड़क की सतह में होने वाले बदलावों और अपने आगे-पीछे चलने वाली कारों की गतिविधियों के प्रति संवेदनशील होता है। फिर भी, वह इन सभी कारकों के बारे में नहीं सोच रहा होता ; उसका मन एक शांत, सतर्क अवस्था में होता है, और जिस स्थिति पर उसका ध्यान केंद्रित होता है—यानी अपनी कार को सुरक्षित रूप से चलाने—में होने वाले सभी प्रासंगिक बदलावों के प्रति खुला होता है।

अगर हम किसी दूसरे इंसान के प्रति संवेदनशीलता की स्थिति पर गौर करें, तो इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण हमें एक माँ की अपने बच्चे के प्रति संवेदनशीलता और संवेदनशीलता में मिलता है। वह कुछ शारीरिक बदलावों, माँगों, चिंताओं को, उनके खुलकर प्रकट होने से पहले ही भाँप लेती है। वह अपने बच्चे के रोने की आवाज़ से जागती है, जबकि कोई और तेज़ आवाज़ उसे जगा नहीं सकती।

इसका मतलब यह है कि वह बच्चे के जीवन की अभिव्यक्तियों के प्रति संवेदनशील है; वह चिंतित या परेशान नहीं है, बल्कि सतर्क संतुलन की स्थिति में है, बच्चे से आने वाले किसी भी महत्वपूर्ण संदेश के प्रति ग्रहणशील है। इसी तरह व्यक्ति स्वयं के प्रति भी संवेदनशील हो सकता है। उदाहरण के लिए, व्यक्ति थकान या अवसाद की भावना से अवगत होता है, और उसके आगे झुकने और हमेशा मौजूद रहने वाले अवसादग्रस्त विचारों से उसे सहारा देने के बजाय, वह स्वयं से पूछता है, "क्या हुआ?" मैं उदास क्यों हूँ? यही बात तब भी समझी जा सकती है जब व्यक्ति चिढ़ जाता है या क्रोधित हो जाता है, या दिवास्वप्न देखने लगता है, या अन्य पलायन गतिविधियों में लिप्त हो जाता है। इनमें से प्रत्येक स्थिति में महत्वपूर्ण बात यह है कि हम इनके प्रति सचेत रहें, न कि इन्हें उन हज़ारों तरीकों से तर्कसंगत बनाएँ जिनसे ऐसा किया जा सकता है; इसके अलावा, अपनी अंतरात्मा की आवाज़ के प्रति खुले रहें, जो हमें बता देगी—अक्सर तुरंत—कि हम चिंतित, उदास, चिड़चिड़े क्यों हैं।

एक औसत व्यक्ति अपनी शारीरिक प्रक्रियाओं के प्रति संवेदनशील होता है; वह बदलावों को, या यहाँ तक कि थोड़े से दर्द को भी महसूस कर सकता है; इस तरह की शारीरिक संवेदनशीलता का अनुभव करना अपेक्षाकृत आसान होता है क्योंकि ज़्यादातर लोगों के मन में स्वस्थ होने का एक एहसास होता है। अपनी मानसिक प्रक्रियाओं के प्रति भी यही संवेदनशीलता होती है।

Machine Translated by Google

प्रक्रियाओं को समझना कहीं अधिक कठिन है, क्योंकि बहुत से लोगों ने कभी ऐसे व्यक्ति को नहीं जाना जो सर्वोत्तम रूप से कार्य करता हो। वे अपने माता-पिता और रिश्तेदारों, या जिस सामाजिक समूह में वे पैदा हुए हैं, की मानसिक कार्यप्रणाली को आदर्श मान लेते हैं, और जब तक वे इनसे भिन्न नहीं होते, तब तक वे सामान्य महसूस करते हैं और किसी भी चीज़ को देखने में रुचि नहीं लेते। उदाहरण के लिए, ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्होंने कभी किसी प्रेमपूर्ण व्यक्ति, या किसी ईमानदार, साहसी, या एकाग्रता वाले व्यक्ति को नहीं देखा। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि स्वयं के प्रति संवेदनशील होने के लिए, व्यक्ति के मन में पूर्ण, स्वस्थ मानवीय कार्यप्रणाली की एक छवि होनी चाहिए— और यदि किसी को अपने बचपन में, या बाद में जीवन में ऐसा अनुभव नहीं हुआ है, तो वह ऐसा अनुभव कैसे प्राप्त कर सकता है? इस प्रश्न का निश्चित रूप से कोई सरल उत्तर नहीं है; लेकिन यह प्रश्न हमारी शिक्षा प्रणाली में एक बहुत ही महत्वपूर्ण कारक की ओर इशारा करता है।

ज्ञान की शिक्षा देते हुए, हम उस शिक्षा को खो रहे हैं जो मानव विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण है: वह शिक्षा जो केवल एक परिपक्व, प्रेमपूर्ण व्यक्ति की उपस्थिति से ही मिल सकती है। हमारी अपनी संस्कृति के पिछले युगों में, या चीन और भारत में, सबसे अधिक मूल्यवान व्यक्ति वह होता था जिसके पास उत्कृष्ट आध्यात्मिक गुण होते थे। यहाँ तक कि शिक्षक भी न केवल, या मुख्यतः, सूचना का स्रोत होता था, बल्कि उसका कार्य कुछ मानवीय दृष्टिकोणों को व्यक्त करना होता था। समकालीन पूँजीवादी समाज में—और यही बात रूसी साम्यवाद पर भी लागू होती है—प्रशंसा और अनुकरण के लिए सुझाए गए व्यक्ति महत्वपूर्ण आध्यात्मिक गुणों के वाहक तो होते ही हैं। वे मूलतः जनता की नज़रों में होते हैं और आम आदमी को परोक्ष संतुष्टि का एहसास दिलाते हैं। फिल्मी सितारे, रेडियो कलाकार, स्तंभकार, महत्वपूर्ण व्यावसायिक या सरकारी हस्तियाँ—ये अनुकरण के आदर्श हैं। इस पद के लिए उनकी मुख्य योग्यता अक्सर यह होती है कि वे समाचारों में छा गए हैं। फिर भी, स्थिति पूरी तरह निराशाजनक नहीं लगती। अगर हम इस तथ्य पर विचार करें कि अल्बर्ट श्वित्ज़र जैसा व्यक्ति संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रसिद्ध हो सकता है, अगर हम उन जीवंत और ऐतिहासिक व्यक्तित्वों से हमारे युवाओं को परिचित कराने की अनेक संभावनाओं की कल्पना करें जो यह दर्शाते हैं कि मनुष्य एक मनोरंजनकर्ता (शब्द के व्यापक अर्थ में) के रूप में नहीं, बल्कि एक मनुष्य के रूप में क्या हासिल कर सकता है, अगर हम सभी युगों के साहित्य और कला के महान कार्यों के बारे में सोचें, तो अच्छे मानवीय कामकाज और इस प्रकार खराबी के प्रति संवेदनशीलता की एक दृष्टि बनाने की संभावना प्रतीत होती है। अगर हम परिपक्व जीवन की दृष्टि को जीवित रखने में सफल नहीं होते हैं, तो वास्तव में हमारे सामने यह संभावना है कि हमारी पूरी सांस्कृतिक परंपरा नष्ट हो जाएगी। यह परंपरा मुख्यतः

Machine Translated by Google

कुछ खास तरह के ज्ञान के हस्तांतरण पर नहीं, बल्कि कुछ खास तरह के मानवीय गुणों पर आधारित संस्कृति। अगर आने वाली पीढ़ियाँ इन गुणों को और नहीं देख पाएँगी, तो पाँच हज़ार साल पुरानी संस्कृति नष्ट हो जाएगी, भले ही उसका ज्ञान हस्तांतरित और विकसित हो रहा हो।

अब तक मैंने इस बात पर चर्चा की है कि किसी भी कला के अभ्यास के लिए क्या आवश्यक है । अब मैं उन गुणों की चर्चा करूँगा जो प्रेम करने की क्षमता के लिए विशिष्ट महत्व रखते हैं। प्रेम की प्रकृति के बारे में मैंने जो कहा, उसके अनुसार प्रेम की प्राप्ति के लिए मुख्य शर्त है अपने अहंकार पर विजय पाना ।

आत्ममुग्धता वह प्रवृत्ति है जिसमें व्यक्ति केवल उसी को वास्तविक मानता है जो उसके भीतर विद्यमान है, जबकि बाहरी दुनिया की घटनाओं में स्वयं कोई वास्तविकता नहीं होती, बल्कि उन्हें केवल उपयोगी या खतरनाक होने के दृष्टिकोण से ही अनुभव किया जाता है। आत्ममुग्धता का विपरीत ध्रुव वस्तुनिष्ठता है; यह लोगों और वस्तुओं को उनके वास्तविक स्वरूप में, वस्तुनिष्ठ रूप से देखने और इस वस्तुनिष्ठ चित्र को अपनी इच्छाओं और भय से निर्मित चित्र से अलग करने की क्षमता है । मनोविकृति के सभी रूप, अत्यधिक हद तक, वस्तुनिष्ठ होने में असमर्थता दर्शाते हैं। विक्षिप्त व्यक्ति के लिए एकमात्र वास्तविकता जो विद्यमान है, वह उसके भीतर है, उसके भय और इच्छाएँ। वह बाहरी दुनिया को अपनी आंतरिक दुनिया के प्रतीक, अपनी रचना के रूप में देखता है। हम सभी स्वप्न देखते समय ऐसा ही करते हैं। स्वप्न में हम घटनाएँ उत्पन्न करते हैं, हम नाटक रचते हैं, जो हमारी इच्छाओं और भयों (यद्यपि कभी-कभी हमारी अंतर्दृष्टि और निर्णय की भी) की अभिव्यक्ति होते हैं, और जब हम सो रहे होते हैं तो हमें विश्वास हो जाता है कि हमारे स्वप्नों का उत्पाद उतना ही वास्तविक है जितना कि वह वास्तविकता जिसे हम अपनी जाग्रत अवस्था में अनुभव करते हैं।

पागल व्यक्ति या स्वप्नदृष्टा बाहरी दुनिया को वस्तुनिष्ठ रूप से देखने में पूरी तरह विफल रहता है ; लेकिन हम सभी कमोबेश पागल हैं, या कमोबेश सोए हुए हैं; हम सभी के पास दुनिया के बारे में एक अनाब्जेक्टिव दृष्टिकोण है, जो हमारे आत्ममुग्ध अभिविन्यास द्वारा विकृत है। क्या मुझे उदाहरण देने की आवश्यकता है? कोई भी व्यक्ति खुद को, अपने पड़ोसियों को देखकर और समाचार पत्रों को पढ़कर उन्हें आसानी से पा सकता है। वे वास्तविकता के आत्ममुग्ध विरूपण की डिग्री में भिन्न होते हैं। उदाहरण के लिए, एक महिला डॉक्टर को फोन करती है और कहती है कि वह उसी दोपहर उसके कार्यालय में आना चाहती है। डॉक्टर जवाब देता है कि वह उसी दोपहर मुक्त नहीं है, लेकिन वह उसे अगले दिन देख सकता है। उसका जवाब है: लेकिन, डॉक्टर, मैं आपके कार्यालय से केवल पाँच मिनट की दूरी पर रहती हूँ। वह उसका स्पष्टीकरण नहीं समझ पाती है कि इससे उसका समय नहीं बचता

Machine Translated by Google

दूरी कितनी कम है। वह इस स्थिति को आत्ममुग्धता से अनुभव करती है: चूँकि वह समय बचाती है, इसलिए वह भी समय बचाता है; उसके लिए एकमात्र वास्तविकता वह स्वयं है।

पारस्परिक संबंधों में आम तौर पर पाई जाने वाली विकृतियाँ कम चरम पर होती हैं—या शायद कम स्पष्ट भी होती हैं। कितने माता-पिता बच्चे की प्रतिक्रियाओं को उसके आज्ञाकारी होने, उन्हें खुशी देने, उनके लिए श्रेयस्कर होने आदि के रूप में देखते हैं, बजाय इसके कि वे यह समझें या यहाँ तक कि उसमें रुचि लें कि बच्चा अपने लिए क्या महसूस करता है? कितने पति अपनी पत्नियों को दबंग समझते हैं, क्योंकि माँ के प्रति उनका अपना लगाव उन्हें किसी भी माँग को अपनी स्वतंत्रता पर प्रतिबंध के रूप में समझने पर मजबूर करता है? कितनी पत्नियाँ अपने पतियों को निकम्मा या मूर्ख समझती हैं, क्योंकि वे उस चमकदार शूरवीर की कल्पना के अनुरूप नहीं जीते जो उन्होंने बचपन में बनाई होगी?

जहाँ तक विदेशी राष्ट्रों का संबंध है, निष्पक्षता का अभाव कुख्यात है। एक दिन से दूसरे दिन, किसी अन्य राष्ट्र को पूरी तरह से भ्रष्ट और दुष्ट सिद्ध कर दिया जाता है, जबकि स्वयं का राष्ट्र हर उस चीज़ का प्रतीक होता है जो अच्छी और महान है। शत्रु के प्रत्येक कार्य का मूल्यांकन एक ही मानदंड से किया जाता है—किसी अन्य राष्ट्र द्वारा स्वयं के प्रत्येक कार्य का। शत्रु के अच्छे कर्मों को भी एक विशेष शैतानी का प्रतीक माना जाता है, जिसका उद्देश्य हमें और दुनिया को धोखा देना है, जबकि हमारे बुरे कर्म हमारे महान उद्देश्यों के लिए आवश्यक और उचित हैं, जिनकी पूर्ति वे करते हैं। वास्तव में, यदि कोई राष्ट्रों के साथ-साथ व्यक्तियों के बीच के संबंधों की भी जाँच करे, तो वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि निष्पक्षता अपवाद है, और कमोबेश आत्ममुग्धतापूर्ण विकृति ही नियम है।

वस्तुनिष्ठ रूप से सोचने की क्षमता ही तर्क है; तर्क के पीछे भावनात्मक दृष्टिकोण विनम्रता का है। वस्तुनिष्ठ होना, अपने तर्क का उपयोग करना, तभी संभव है जब व्यक्ति ने विनम्रता का दृष्टिकोण विकसित कर लिया हो, जब वह बचपन में देखे गए सर्वज्ञता और सर्वशक्तिमानता के स्वप्नों से बाहर आ गया हो।

प्रेम कला के अभ्यास की इस चर्चा के संदर्भ में, इसका अर्थ है: प्रेम आत्ममुग्धता के सापेक्ष अभाव पर निर्भर है, इसलिए इसके लिए विनम्रता, वस्तुनिष्ठता और तर्कशीलता का विकास आवश्यक है। व्यक्ति का पूरा जीवन इसी लक्ष्य के लिए समर्पित होना चाहिए। विनम्रता और वस्तुनिष्ठता अविभाज्य हैं, जैसे प्रेम है। अगर मैं अजनबी के प्रति वस्तुनिष्ठ नहीं हो सकता, तो मैं अपने परिवार के प्रति भी पूरी तरह वस्तुनिष्ठ नहीं हो सकता, और इसके विपरीत। अगर मैं प्रेम करने की कला सीखना चाहता हूँ, तो मुझे हर परिस्थिति में वस्तुनिष्ठता के लिए प्रयास करना होगा, और संवेदनशील बनना होगा।

Machine Translated by Google

उन परिस्थितियों के प्रति जहाँ मैं वस्तुनिष्ठ नहीं हूँ। मुझे किसी व्यक्ति की अपनी तस्वीर और उसके व्यवहार, जो आत्ममुग्धता से विकृत है, और उस व्यक्ति की वास्तविकता, जो मेरी रुचियों, ज़रूरतों और आशंकाओं से परे मौजूद है, के बीच अंतर देखने की कोशिश करनी चाहिए। वस्तुनिष्ठता और तर्क की क्षमता हासिल करना प्रेम करने की कला हासिल करने का आधा रास्ता है, लेकिन इसे हर उस व्यक्ति के प्रति सम्मान के साथ हासिल किया जाना चाहिए जिसके संपर्क में आप आते हैं। अगर कोई अपनी वस्तुनिष्ठता को अपने प्रिय व्यक्ति के लिए आरक्षित रखना चाहता है, और सोचता है कि वह बाकी दुनिया के साथ अपने रिश्ते में इससे छुटकारा पा सकता है, तो उसे जल्द ही पता चल जाएगा कि वह यहाँ और वहाँ दोनों जगह असफल हो रहा है।

प्रेम करने की क्षमता व्यक्ति की आत्ममुग्धता से, और माँ व कुल के प्रति अनाचारपूर्ण आसक्ति से बाहर निकलने की क्षमता पर निर्भर करती है; यह हमारी विकसित होने की क्षमता पर, दुनिया और स्वयं के प्रति हमारे संबंधों में एक उत्पादक अभिविन्यास विकसित करने पर निर्भर करती है। उद्भव, जन्म और जागृति की इस प्रक्रिया के लिए एक गुण की आवश्यकता होती है: विश्वास। प्रेम करने की कला के अभ्यास के लिए विश्वास के अभ्यास की आवश्यकता होती है।

आस्था क्या है? क्या आस्था अनिवार्य रूप से ईश्वर या धार्मिक सिद्धांतों में विश्वास का विषय है? क्या आस्था अनिवार्यतः तर्क और विवेकशील सोच के विपरीत है या उनसे अलग है? आस्था की समस्या को समझने के लिए भी, हमें विवेकशील और तर्कहीन आस्था के बीच अंतर करना होगा। तर्कहीन आस्था से मेरा तात्पर्य उस विश्वास (किसी व्यक्ति या विचार में) से है जो तर्कहीन सत्ता के प्रति समर्पण पर आधारित होता है। इसके विपरीत, विवेकशील आस्था एक दृढ़ विश्वास है जो व्यक्ति के अपने विचार या भावना के अनुभव में निहित होता है। विवेकशील आस्था मुख्यतः किसी चीज़ में विश्वास नहीं है, बल्कि हमारे दृढ़ विश्वासों में निहित निश्चितता और दृढ़ता का गुण है। आस्था एक विशिष्ट आस्था नहीं, बल्कि एक चरित्र गुण है जो पूरे व्यक्तित्व में व्याप्त होता है।

तर्कसंगत आस्था उत्पादक बौद्धिक और भावनात्मक गतिविधि में निहित है। तर्कसंगत चिंतन में, जहाँ आस्था का कोई स्थान नहीं माना जाता, तर्कसंगत आस्था एक महत्वपूर्ण घटक है। उदाहरण के लिए, एक वैज्ञानिक किसी नई खोज पर कैसे पहुँचता है? क्या वह प्रयोग पर प्रयोग करके, तथ्य पर तथ्य एकत्रित करके, बिना यह सोचे कि उसे क्या मिलने वाला है, शुरुआत करता है? किसी भी क्षेत्र में वास्तव में महत्वपूर्ण खोज शायद ही इस तरह से की गई हो। न ही लोग किसी महत्वपूर्ण निष्कर्ष पर तब पहुँचे हैं जब वे केवल एक कल्पना का पीछा कर रहे थे। मानव प्रयास के किसी भी क्षेत्र में रचनात्मक चिंतन की प्रक्रिया अक्सर उस चीज़ से शुरू होती है जिसे

Machine Translated by Google

"तर्कसंगत दृष्टि", जो स्वयं गहन पूर्व अध्ययन, चिंतनशील चिंतन और अवलोकन का परिणाम है। जब कोई वैज्ञानिक अपनी मूल दृष्टि को अत्यधिक विश्वसनीय बनाने के लिए पर्याप्त आँकड़े एकत्र करने, या गणितीय सूत्रीकरण तैयार करने में सफल हो जाता है, तो कहा जा सकता है कि वह एक अस्थायी परिकल्पना पर पहुँच गया है। परिकल्पना के निहितार्थों को समझने के लिए उसका सावधानीपूर्वक विश्लेषण, और उसका समर्थन करने वाले आँकड़े एकत्र करने से एक अधिक उपयुक्त परिकल्पना का निर्माण होता है और अंततः संभवतः उसे एक व्यापक सिद्धांत में शामिल किया जा सकता है।

विज्ञान का इतिहास तर्क और सत्य के दर्शन में विश्वास के उदाहरणों से भरा पड़ा है। कोपरनिकस, केप्लर, गैलीलियो और न्यूटन, सभी तर्क में अटूट विश्वास से ओतप्रोत थे। इसके लिए ब्रूनो को सूली पर जला दिया गया और स्पिनोज़ा को समाज से बहिष्कृत कर दिया गया। एक तर्कसंगत दृष्टि की कल्पना से लेकर एक सिद्धांत के निर्माण तक, हर कदम पर विश्वास आवश्यक है: एक तर्कसंगत रूप से मान्य लक्ष्य के रूप में दृष्टि में विश्वास, एक संभावित और प्रशंसनीय प्रस्ताव के रूप में परिकल्पना में विश्वास, और अंतिम सिद्धांत में विश्वास, कम से कम तब तक जब तक इसकी वैधता के बारे में आम सहमति नहीं बन जाती। यह विश्वास व्यक्ति के अपने अनुभव में, अपनी विचार, अवलोकन और निर्णय शक्ति में विश्वास में निहित होता है। जहाँ एक ओर अतार्किक विश्वास किसी चीज़ को केवल इसलिए सत्य मान लेना है क्योंकि कोई अधिकारी या बहुमत ऐसा कहता है, वहीं तर्कसंगत विश्वास बहुमत की राय के बावजूद , अपने स्वयं के उत्पादक अवलोकन और चिंतन पर आधारित एक स्वतंत्र विश्वास में निहित होता है ।

विचार और निर्णय ही अनुभव का एकमात्र क्षेत्र नहीं हैं जहाँ तर्कसंगत विश्वास प्रकट होता है। मानवीय संबंधों के क्षेत्र में, विश्वास किसी भी महत्वपूर्ण मित्रता या प्रेम का एक अनिवार्य गुण है। किसी अन्य व्यक्ति में "विश्वास" रखने का अर्थ है उसके मूल दृष्टिकोणों, उसके व्यक्तित्व के मूल, उसके प्रेम की विश्वसनीयता और अपरिवर्तनीयता के बारे में आश्वस्त होना। इससे मेरा तात्पर्य यह नहीं है कि कोई व्यक्ति अपने विचार नहीं बदल सकता, बल्कि यह है कि उसकी मूल प्रेरणाएँ वही रहती हैं; उदाहरण के लिए, जीवन और मानवीय गरिमा के प्रति उसका सम्मान उसका अपना हिस्सा है, परिवर्तन के अधीन नहीं।

इसी अर्थ में, हमें स्वयं पर विश्वास है। हम एक आत्मा के अस्तित्व के प्रति, अपने व्यक्तित्व में एक ऐसे मूल तत्व के प्रति सचेत हैं जो अपरिवर्तनीय है और जो बदलती परिस्थितियों और विचारों व भावनाओं में कुछ बदलावों के बावजूद, जीवन भर बना रहता है। यही मूल तत्व "मैं" शब्द के पीछे की वास्तविकता है और जिस पर हमारा स्वयं पर विश्वास टिका है।

Machine Translated by Google

पहचान आधारित है। जब तक हमें अपने स्वयं के स्थायित्व पर विश्वास नहीं होता, हमारी पहचान की भावना खतरे में पड़ जाती है और हम दूसरे लोगों पर निर्भर हो जाते हैं, जिनकी स्वीकृति तब हमारी पहचान की भावना का आधार बन जाती है। केवल वही व्यक्ति जो स्वयं पर विश्वास रखता है, दूसरों के प्रति वफ़ादार हो पाता है, क्योंकि केवल वही निश्चिंत हो सकता है कि भविष्य में वह वैसा ही रहेगा जैसा वह आज है और इसलिए, वह वैसा ही महसूस करेगा और वैसा ही कार्य करेगा जैसा वह अभी अपेक्षा करता है। स्वयं पर विश्वास हमारी वादा करने की क्षमता की एक शर्त है, और चूँकि, जैसा कि नीत्शे ने कहा था, मनुष्य को वादा करने की उसकी क्षमता से परिभाषित किया जा सकता है, इसलिए विश्वास मानव अस्तित्व की शर्तों में से एक है। प्रेम के संबंध में जो मायने रखता है, वह है अपने प्रेम में विश्वास; दूसरों में प्रेम उत्पन्न करने की उसकी क्षमता में, और उसकी विश्वसनीयता में।

किसी व्यक्ति में विश्वास रखने का एक और अर्थ दूसरों की क्षमताओं में हमारे विश्वास से जुड़ा है। इस विश्वास का सबसे प्रारंभिक रूप वह विश्वास है जो एक माँ को अपने नवजात शिशु के प्रति होता है: कि वह जीवित रहेगा, बढ़ेगा, चलेगा और बोलेगा। हालाँकि, इस संबंध में बच्चे का विकास इतनी नियमितता से होता है कि इसकी अपेक्षा करने के लिए विश्वास की आवश्यकता नहीं लगती। यह उन क्षमताओं के साथ अलग है जो विकसित नहीं हो पातीं: बच्चे की प्रेम करने, खुश रहने, अपने तर्क का उपयोग करने की क्षमताएँ, और कलात्मक प्रतिभा जैसी अधिक विशिष्ट क्षमताएँ। ये वे बीज हैं जो विकसित होते हैं और प्रकट होते हैं यदि उनके विकास के लिए उचित परिस्थितियाँ दी जाएँ, और यदि ये परिस्थितियाँ न हों तो उन्हें दबाया जा सकता है।

इनमें से सबसे महत्वपूर्ण शर्त यह है कि बच्चे के जीवन में महत्वपूर्ण व्यक्ति को उसकी इन क्षमताओं पर विश्वास हो। इस विश्वास की उपस्थिति ही शिक्षा और हेरफेर के बीच अंतर पैदा करती है। शिक्षा, बच्चे को उसकी क्षमताओं को पहचानने में मदद करने के समान है।[3] शिक्षा का विपरीत हेरफेर है, जो क्षमताओं के विकास में विश्वास के अभाव और इस विश्वास पर आधारित है कि बच्चा तभी सही होगा जब वयस्क उसमें वह डालें जो वांछनीय है और जो अवांछनीय लगता है उसे दबा दें।

[3] शिक्षा शब्द का मूल शब्द ई-ड्यूसेरे है, जिसका शाब्दिक अर्थ है आगे ले जाना, या किसी ऐसी चीज को सामने लाना जो सम्भवतः मौजूद हो।

रोबोट पर विश्वास करने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि उसमें भी कोई जीवन नहीं है।

दूसरों पर विश्वास की परिणति मानव जाति पर विश्वास में होती है।

Machine Translated by Google

पश्चिमी दुनिया में यह विश्वास धार्मिक रूप में यहूदी-ईसाई धर्म में व्यक्त किया गया था, और धर्मनिरपेक्ष भाषा में इसने पिछले डेढ़ सौ वर्षों के मानवतावादी राजनीतिक और सामाजिक विचारों में अपनी प्रबल अभिव्यक्ति पाई है। बच्चे में विश्वास की तरह, यह इस विचार पर आधारित है कि मनुष्य की क्षमताएँ ऐसी हैं कि उचित परिस्थितियाँ मिलने पर वह समानता, न्याय और प्रेम के सिद्धांतों पर आधारित एक सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करने में सक्षम होगा। मनुष्य अभी तक ऐसी व्यवस्था का निर्माण करने में सक्षम नहीं हुआ है, और इसलिए यह विश्वास कि वह ऐसा कर सकता है, विश्वास की आवश्यकता है। लेकिन सभी तर्कसंगत विश्वासों की तरह यह भी एक इच्छाधारी सोच नहीं है, बल्कि मानव जाति की पिछली उपलब्धियों के प्रमाण और प्रत्येक व्यक्ति के आंतरिक अनुभव, तर्क और प्रेम के उसके अपने अनुभव पर आधारित है।

जबकि अतार्किक विश्वास एक ऐसी शक्ति के प्रति समर्पण में निहित होता है जिसे अत्यधिक मजबूत, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान माना जाता है, और अपनी स्वयं की शक्ति और ताकत के त्याग में, तर्कसंगत विश्वास विपरीत अनुभव पर आधारित होता है।

किसी विचार में हमारा यह विश्वास इसलिए होता है क्योंकि वह हमारे अपने अवलोकन और चिंतन का परिणाम होता है। हमें दूसरों की, स्वयं की और मानवजाति की क्षमताओं में विश्वास होता है क्योंकि, और केवल उसी सीमा तक, जिस सीमा तक हमने अपनी क्षमताओं के विकास, स्वयं में विकास की वास्तविकता, अपनी तर्कशक्ति और प्रेम की प्रबलता का अनुभव किया है। तर्कसंगत विश्वास का आधार उत्पादकता है; अपने विश्वास के अनुसार जीने का अर्थ है उत्पादक जीवन जीना। इसका अर्थ है शक्ति (प्रभुत्व के अर्थ में) और शक्ति के प्रयोग में विश्वास।

विश्वास के विपरीत हैं। विद्यमान शक्ति में विश्वास करना उन क्षमताओं के विकास में अविश्वास के समान है जो अभी तक साकार नहीं हुई हैं। यह केवल प्रकट वर्तमान पर आधारित भविष्य की भविष्यवाणी है; लेकिन यह एक गंभीर गलत अनुमान साबित होता है, जो मानवीय क्षमताओं और मानवीय विकास की अनदेखी में अत्यंत तर्कहीन है। शक्ति में कोई तर्कसंगत विश्वास नहीं है।

इसके प्रति समर्पण है, या जिनके पास यह है, वे इसे बनाए रखने की इच्छा रखते हैं। हालाँकि कई लोगों को शक्ति सभी चीजों में सबसे वास्तविक लगती है, लेकिन मानव इतिहास ने इसे सभी मानवीय उपलब्धियों में सबसे अस्थिर साबित किया है।

इस तथ्य के कारण कि आस्था और शक्ति परस्पर अनन्य हैं, सभी धर्म और राजनीतिक प्रणालियाँ जो मूलतः तर्कसंगत आस्था पर आधारित हैं,

Machine Translated by Google

यदि वे सत्ता पर निर्भर रहते हैं या उसके साथ गठबंधन करते हैं, तो वे भ्रष्ट हो जाते हैं और अंततः अपनी सारी ताकत खो देते हैं।

विश्वास रखने के लिए साहस, जोखिम उठाने की क्षमता, और दर्द और निराशा को स्वीकार करने की तत्परता ज़रूरी है। जो कोई भी जीवन की प्राथमिक शर्तों के रूप में सुरक्षा और संरक्षा पर ज़ोर देता है, वह विश्वास नहीं रख सकता; जो कोई भी खुद को एक ऐसी सुरक्षा व्यवस्था में बंद कर लेता है, जहाँ दूरी और कब्ज़ा ही उसकी सुरक्षा के साधन हैं, वह खुद को कैदी बना लेता है। प्यार पाने के लिए, और प्यार करने के लिए, साहस चाहिए, कुछ मूल्यों को सर्वोच्च प्राथमिकता मानकर उनका मूल्यांकन करने का साहस चाहिए—और उन मूल्यों पर छलांग लगाकर अपना सब कुछ दांव पर लगाने का साहस चाहिए।

यह साहस उस साहस से बहुत भिन्न है, जिसके बारे में प्रसिद्ध शेखी बघारने वाले मुसोलिनी ने नारा दिया था, "खतरनाक तरीके से जीना।"
उनका साहस शून्यवाद का साहस है। यह जीवन के प्रति विनाशकारी दृष्टिकोण में निहित है, जीवन को त्याग देने की इच्छा में, क्योंकि व्यक्ति उससे प्रेम करने में असमर्थ है। निराशा का साहस प्रेम के साहस के विपरीत है, ठीक वैसे ही जैसे शक्ति में विश्वास जीवन में विश्वास के विपरीत है।

क्या विश्वास और साहस का अभ्यास करना ज़रूरी है? वास्तव में, विश्वास का अभ्यास हर पल किया जा सकता है। बच्चे के पालन-पोषण के लिए विश्वास की आवश्यकता होती है; नींद आने के लिए विश्वास की आवश्यकता होती है; किसी भी कार्य को आरंभ करने के लिए विश्वास की आवश्यकता होती है। लेकिन हम सभी इस प्रकार के विश्वास के आदी हैं। जिस व्यक्ति में यह विश्वास नहीं होता, वह अपने बच्चे को लेकर अत्यधिक चिंता, अनिद्रा, या किसी भी प्रकार का उत्पादक कार्य करने में असमर्थता से ग्रस्त होता है; या वह शंकालु होता है, किसी के करीब जाने से कतराता है, या मानसिक रूप से बीमार होता है, या कोई दीर्घकालिक योजना बनाने में असमर्थ होता है। किसी व्यक्ति के बारे में अपने निर्णय पर अडिग रहना, भले ही जनमत या कुछ अप्रत्याशित तथ्य उसे अमान्य करते प्रतीत हों, अपने विश्वासों पर अडिग रहना, भले ही वे अलोकप्रिय हों—इन सबके लिए विश्वास और साहस की आवश्यकता होती है। जीवन की कठिनाइयों, असफलताओं और दुखों को एक ऐसी चुनौती के रूप में लेना, जिससे पार पाना हमें और मजबूत बनाता है, न कि एक अन्यायपूर्ण दंड के रूप में, जो हमें नहीं मिलना चाहिए, इसके लिए विश्वास और साहस की आवश्यकता होती है।

विश्वास और साहस का अभ्यास दैनिक जीवन की छोटी-छोटी बातों से शुरू होता है। पहला कदम यह देखना है कि व्यक्ति कहाँ और कब विश्वास खो देता है, इस विश्वास की कमी को छिपाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले तर्कों को समझना, यह पहचानना कि वह कहाँ कायरतापूर्ण व्यवहार करता है, और फिर उसे कैसे तर्कसंगत बनाता है। यह समझना कि कैसे विश्वास का हर विश्वासघात व्यक्ति को कमज़ोर करता है, और कैसे बढ़ती हुई कमज़ोरी नए विश्वासघात की ओर ले जाती है, और इसी तरह, एक दुष्चक्र में।

Machine Translated by Google

तब व्यक्ति यह भी समझ जाएगा कि जहाँ एक ओर उसे सचेतन रूप से प्रेम न मिलने का भय होता है, वहीं वास्तविक, यद्यपि प्रायः अचेतन भय प्रेम करने का होता है। प्रेम करने का अर्थ है बिना किसी गारंटी के स्वयं को समर्पित करना, इस आशा में स्वयं को पूर्णतः समर्पित कर देना कि हमारा प्रेम उस व्यक्ति में प्रेम उत्पन्न करेगा। प्रेम विश्वास का एक कार्य है, और जो अल्प विश्वासी है, वह अल्प प्रेम वाला भी है। क्या इस अभ्यास के बारे में और कुछ कहा जा सकता है?

आस्था का? कोई और शायद करे; अगर मैं कवि या उपदेशक होता, तो कोशिश करता। लेकिन चूँकि मैं इनमें से कोई नहीं हूँ, इसलिए मैं आस्था के अभ्यास के बारे में ज़्यादा कुछ कहने की कोशिश भी नहीं कर सकता, लेकिन मुझे यकीन है कि जो कोई भी सचमुच चिंतित है, वह आस्था रखना सीख सकता है जैसे एक बच्चा चलना सीखता है।

प्रेम की कला के अभ्यास के लिए एक अनिवार्य प्रवृत्ति, जिसका अब तक केवल अप्रत्यक्ष रूप से ही उल्लेख किया गया है, पर स्पष्ट रूप से चर्चा की जानी चाहिए क्योंकि यह प्रेम के अभ्यास का आधार है: क्रियाशीलता। मैंने पहले कहा है कि क्रियाशीलता का अर्थ "कुछ करना" नहीं है, बल्कि एक आंतरिक क्रियाशीलता है, अपनी शक्तियों का उत्पादक उपयोग। प्रेम एक क्रियाशीलता है; यदि मैं प्रेम करता हूँ, तो मैं उस प्रिय व्यक्ति के साथ निरंतर सक्रिय रूप से जुड़ा रहता हूँ, न कि केवल उसके साथ। क्योंकि यदि मैं आलसी हूँ, यदि मैं निरंतर जागरूकता, सतर्कता और क्रियाशीलता की अवस्था में नहीं हूँ, तो मैं उस प्रिय व्यक्ति के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने में असमर्थ हो जाऊँगा। निष्क्रियता के लिए निद्रा ही एकमात्र उपयुक्त स्थिति है; जागृति वह अवस्था है जिसमें आलस्य का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। आज अधिकांश लोगों के साथ विरोधाभासी स्थिति यह है कि वे जागते समय आधे सोए हुए होते हैं, और सोते समय आधे जागे हुए होते हैं, या जब वे सोना चाहते हैं। पूर्णतः जागृत होना ही वह अवस्था है

ऊब न होना, या उबाऊ न होना—और वास्तव में, ऊब न होना या उबाऊ न होना प्रेम करने की मुख्य शर्तों में से एक है। दिन भर विचारों, भावनाओं, आँखों और कानों से सक्रिय रहना, आंतरिक आलस्य से बचना, चाहे वह ग्रहणशीलता के रूप में हो, संचय के रूप में हो, या अपना समय बर्बाद करने के रूप में हो, प्रेम करने की कला के अभ्यास के लिए एक अनिवार्य शर्त है।

यह मानना एक भ्रम है कि कोई जीवन को इस तरह से अलग कर सकता है कि वह प्रेम के क्षेत्र में उत्पादक हो सके।

और अन्य सभी क्षेत्रों में अनुत्पादक। उत्पादकता इस तरह के श्रम विभाजन की अनुमति नहीं देती। प्रेम करने की क्षमता तीव्रता, जागरूकता और बढ़ी हुई जीवन शक्ति की स्थिति की मांग करती है, जो केवल

Machine Translated by Google

जीवन के कई अन्य क्षेत्रों में उत्पादक और सक्रिय अभिविन्यास। यदि कोई अन्य क्षेत्रों में उत्पादक नहीं है, तो वह प्रेम में भी उत्पादक नहीं है।

प्रेम करने की कला की चर्चा केवल प्रेम प्राप्त करने और उसे विकसित करने के व्यक्तिगत दायरे तक सीमित नहीं रह सकती।

इस अध्याय में जिन विशेषताओं और दृष्टिकोणों का वर्णन किया गया है।
यह सामाजिक दायरे से अविभाज्य रूप से जुड़ा हुआ है। यदि प्रेम का अर्थ सभी के प्रति प्रेमपूर्ण दृष्टिकोण रखना है, यदि प्रेम एक चरित्र गुण है, तो यह न केवल अपने परिवार और मित्रों के साथ, बल्कि अपने कार्य, व्यवसाय, पेशे के माध्यम से संपर्क में आने वाले लोगों के प्रति भी, व्यक्ति के संबंधों में अनिवार्य रूप से विद्यमान होना चाहिए। अपनों के प्रति प्रेम और परायों के प्रति प्रेम के बीच कोई "श्रम विभाजन" नहीं है। इसके विपरीत, अपनों के प्रति प्रेम के अस्तित्व की शर्त पर परायों का अस्तित्व है। इस अंतर्दृष्टि को गंभीरता से लेने का अर्थ वास्तव में अपने सामाजिक संबंधों में प्रचलित सामाजिक संबंधों से एक बड़ा परिवर्तन लाना है। हालाँकि पड़ोसी के प्रति प्रेम के धार्मिक आदर्श की बहुत अधिक प्रशंसा की जाती है, लेकिन वास्तव में हमारे संबंध, सर्वोत्तम रूप से, निष्पक्षता के सिद्धांत द्वारा निर्धारित होते हैं।

निष्पक्षता का अर्थ है वस्तुओं और सेवाओं के आदान-प्रदान में, और भावनाओं के आदान-प्रदान में, धोखाधड़ी और छल-कपट का प्रयोग न करना। "मैं तुम्हें उतना ही देता हूँ जितना तुम मुझे देते हो," भौतिक वस्तुओं के साथ-साथ प्रेम में भी, पूंजीवादी समाज का प्रचलित नैतिक सिद्धांत है। यह भी कहा जा सकता है कि निष्पक्षता की नैतिकता का विकास पूंजीवादी समाज का एक विशेष नैतिक योगदान है।

इस तथ्य के कारण पूंजीवादी समाज की प्रकृति में ही निहित हैं। पूंजीवाद-पूर्व समाजों में, वस्तुओं का आदान-प्रदान या तो प्रत्यक्ष बल द्वारा, परंपरा द्वारा, या व्यक्तिगत रूप से निर्धारित होता था।

प्रेम या मित्रता के बंधन। पूंजीवाद में, सर्वनिर्धारक कारक बाजार में विनिमय है। चाहे हम वस्तु बाजार में हों, श्रम बाजार में हों, या सेवाओं के बाजार में, प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छानुसार जो कुछ भी बेचना चाहता है, उसे बाजार की परिस्थितियों में, बिना किसी बल या धोखाधड़ी के, प्राप्त करता है।

निष्पक्षता की नैतिकता, स्वर्णिम नियम की नैतिकता के साथ भ्रमित होती है। "दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करो जैसा तुम चाहते हो कि वे तुम्हारे साथ करें" इस कहावत का अर्थ "दूसरों के साथ अपने व्यवहार में निष्पक्ष रहो" के रूप में समझा जा सकता है।

Machine Translated by Google

दूसरों से प्रेम करो।" लेकिन वास्तव में, इसे मूल रूप से बाइबिल के "अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो" के एक अधिक लोकप्रिय संस्करण के रूप में तैयार किया गया था। वास्तव में, भाईचारे के प्रेम का यहूदी-ईसाई मानदंड निष्पक्षता की नैतिकता से पूरी तरह अलग है। इसका अर्थ है अपने पड़ोसी से प्रेम करना, अर्थात उसके प्रति ज़िम्मेदार और उसके साथ एक होने का एहसास करना, जबकि निष्पक्षता की नैतिकता का अर्थ ज़िम्मेदार और एक होने का एहसास नहीं , बल्कि दूर और अलग होना है; इसका अर्थ है अपने पड़ोसी के अधिकारों का सम्मान करना, लेकिन उससे प्रेम नहीं करना। यह कोई संयोग नहीं है कि स्वर्णिम नियम आज सबसे लोकप्रिय धार्मिक सिद्धांत बन गया है; क्योंकि इसकी व्याख्या निष्पक्षता की नैतिकता के संदर्भ में की जा सकती है, यह एक ऐसा धार्मिक सिद्धांत है जिसे हर कोई समझता है और पालन करने को तैयार है। लेकिन प्रेम का अभ्यास निष्पक्षता और प्रेम के बीच के अंतर को पहचानने से शुरू होना चाहिए।

हालाँकि, यहाँ एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है। यदि हमारा संपूर्ण सामाजिक और आर्थिक संगठन प्रत्येक व्यक्ति के अपने-अपने लाभ की खोज पर आधारित है, यदि यह केवल निष्पक्षता के नैतिक सिद्धांत द्वारा नियंत्रित अहंकार के सिद्धांत द्वारा संचालित है, तो कोई व्यक्ति व्यापार कैसे कर सकता है, मौजूदा समाज के ढांचे के भीतर कैसे कार्य कर सकता है और साथ ही प्रेम का अभ्यास कैसे कर सकता है? क्या प्रेम का अर्थ अपने सभी सांसारिक सरोकारों को त्यागकर सबसे गरीब व्यक्ति के जीवन में भागीदारी करना नहीं है? यह प्रश्न ईसाई भिक्षुओं और टॉल्स्टॉय, अल्बर्ट श्वित्ज़र और सिमोन वील जैसे व्यक्तियों द्वारा क्रांतिकारी तरीके से उठाया और उत्तर दिया गया है। ऐसे अन्य लोग भी हैं जो हमारे समाज में प्रेम और सामान्य धर्मनिरपेक्ष जीवन के बीच बुनियादी असंगति के विचार से सहमत हैं।

वे इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आज प्रेम की बात करना सामान्य धोखाधड़ी में भागीदार होना मात्र है; उनका दावा है कि आज की दुनिया में केवल एक शहीद या एक पागल व्यक्ति ही प्रेम कर सकता है, इसलिए प्रेम की सारी चर्चाएँ उपदेश के अलावा कुछ नहीं हैं। यह अत्यंत सम्मानजनक दृष्टिकोण निंदकवाद को तर्कसंगत बनाने के लिए सहज ही उपयुक्त है। वास्तव में, यह उस औसत व्यक्ति द्वारा भी अप्रत्यक्ष रूप से साझा किया जाता है जो महसूस करता है, "मैं एक अच्छा ईसाई बनना चाहता हूँ—लेकिन अगर मैं गंभीरता से ऐसा करना चाहता हूँ तो मुझे भूखा रहना पड़ेगा।" यह "कट्टरपंथ" नैतिक शून्यवाद में परिणत होता है। "कट्टरपंथी विचारक" और औसत व्यक्ति, दोनों ही प्रेमहीन मशीन हैं और उनके बीच एकमात्र अंतर यह है कि बाद वाले को इसका एहसास नहीं होता, जबकि पहले वाले को यह पता होता है और वह इस तथ्य की "ऐतिहासिक आवश्यकता" को पहचानता है।

[4] हर्बर्ट मार्क्युज़ के लेख "मनोविश्लेषणात्मक संशोधनवाद के सामाजिक निहितार्थ", , □ डिसेंट, न्यूयॉर्क, ग्रीष्म, 1955.

Machine Translated by Google

मेरा मानना है कि प्रेम और "सामान्य" जीवन की पूर्ण असंगति का उत्तर केवल अमूर्त अर्थ में ही सही है। पूँजीवादी समाज का मूल सिद्धांत और प्रेम का सिद्धांत असंगत हैं।

लेकिन ठोस रूप से देखा जाए तो आधुनिक समाज एक जटिल परिघटना है। उदाहरण के लिए, किसी बेकार वस्तु का विक्रेता झूठ बोले बिना आर्थिक रूप से काम नहीं कर सकता; एक कुशल कर्मचारी, एक रसायनज्ञ, या एक चिकित्सक झूठ बोल सकता है। इसी प्रकार, एक किसान, एक श्रमिक, एक शिक्षक,

और कई प्रकार के व्यवसायी आर्थिक रूप से काम करना बंद किए बिना प्रेम का अभ्यास करने का प्रयास कर सकते हैं। भले ही कोई पूंजीवाद के सिद्धांत को प्रेम के सिद्धांत के साथ असंगत मानता हो, उसे यह स्वीकार करना होगा कि "पूंजीवाद" अपने आप में एक जटिल और निरंतर बदलती संरचना है जो अभी भी काफी हद तक गैर-अनुरूपता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की अनुमति देती है।

हालाँकि, ऐसा कहने में, मेरा यह तात्पर्य नहीं है कि हम वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के अनिश्चित काल तक जारी रहने की उम्मीद कर सकते हैं, और साथ ही अपने भाई के प्रति प्रेम के आदर्श की प्राप्ति की आशा भी कर सकते हैं। वर्तमान व्यवस्था के अंतर्गत, प्रेम करने में सक्षम लोग अनिवार्य रूप से अपवाद हैं; वर्तमान पश्चिमी समाज में प्रेम अनिवार्य रूप से एक सीमांत घटना है। इसलिए नहीं कि कई व्यवसाय प्रेमपूर्ण दृष्टिकोण की अनुमति नहीं देते, बल्कि इसलिए कि उत्पादन-केंद्रित, वस्तु-लोलुप समाज की भावना ऐसी है कि केवल गैर-अनुरूपतावादी ही इससे सफलतापूर्वक अपना बचाव कर सकता है। जो लोग मानव अस्तित्व की समस्या के एकमात्र तर्कसंगत उत्तर के रूप में प्रेम को गंभीरता से लेते हैं, उन्हें इस निष्कर्ष पर पहुँचना चाहिए कि यदि प्रेम को एक सामाजिक घटना बनना है, न कि एक अत्यधिक व्यक्तिवादी, सीमांत घटना, तो हमारी सामाजिक संरचना में महत्वपूर्ण और आमूल-चूल परिवर्तन आवश्यक हैं।

इस पुस्तक के दायरे में ऐसे परिवर्तनों की दिशा का केवल संकेत ही दिया जा सकता है।5

[5] द सेन सोसाइटी, राइनहार्ट एंड कंपनी, न्यूयॉर्क, 1955 में मैंने इस समस्या से विस्तार से निपटने की कोशिश की है।

हमारा समाज प्रबंधकीय नौकरशाही और पेशेवर राजनेताओं द्वारा संचालित होता है; लोग जन-सुझाव से प्रेरित होते हैं, उनका लक्ष्य अधिक उत्पादन और अधिक उपभोग करना होता है, जो अपने आप में एक उद्देश्य है। सभी गतिविधियाँ

Machine Translated by Google

आर्थिक लक्ष्यों के अधीन होकर, साधन साध्य बन गए हैं; मनुष्य एक मशीन है—भोजन से भरपूर, वस्त्र से युक्त, परन्तु अपने विशिष्ट मानवीय गुण और कार्य के प्रति किसी भी अंतिम चिंता से रहित। यदि मनुष्य को प्रेम करना है, तो उसे सर्वोच्च स्थान पर रखा जाना चाहिए। आर्थिक मशीन को उसकी सेवा करनी चाहिए, न कि स्वयं उसकी सेवा करनी चाहिए। उसे अनुभव बाँटने, काम बाँटने में सक्षम होना चाहिए, न कि अधिक से अधिक लाभ में हिस्सा लेने में। समाज को इस प्रकार संगठित किया जाना चाहिए कि मनुष्य का सामाजिक, प्रेमपूर्ण स्वभाव उसके सामाजिक अस्तित्व से अलग न हो, बल्कि उसके साथ एकाकार हो जाए। यदि यह सत्य है, जैसा कि मैंने दिखाने का प्रयास किया है, कि प्रेम ही मानव अस्तित्व की समस्या का एकमात्र विवेकपूर्ण और संतोषजनक उत्तर है, तो कोई भी समाज जो प्रेम के विकास को सापेक्ष रूप से बहिष्कृत करता है, अंततः मानव स्वभाव की मूलभूत आवश्यकताओं के साथ अपने ही अंतर्विरोध के कारण नष्ट हो जाएगा। वास्तव में, प्रेम की बात करना "उपदेश" नहीं है, क्योंकि इसका अर्थ प्रत्येक मनुष्य की परम और वास्तविक आवश्यकता की बात करना है। इस आवश्यकता के अस्पष्ट हो जाने का अर्थ यह नहीं है कि इसका अस्तित्व ही नहीं है। प्रेम की प्रकृति का विश्लेषण करना आज उसके व्यापक अभाव को खोजना और उन सामाजिक परिस्थितियों की आलोचना करना है जो इस अभाव के लिए ज़िम्मेदार हैं। प्रेम की संभावना को एक सामाजिक और न केवल असाधारण-व्यक्तिगत घटना के रूप में मानना, मनुष्य के स्वभाव की अंतर्दृष्टि पर आधारित एक तर्कसंगत विश्वास है।

Machine Translated by Google

विषयसूची

विश्व परिप्रेक्ष्य प्रस्तावना I. क्या
प्रेम एक कला है?

II. प्रेम का सिद्धांत III. समकालीन
पश्चिमी समाज में प्रेम और उसका विघटन IV. प्रेम का अभ्यास .

Machine Translated by Google यह फ़ाइल Z-लाइब्रेरी परियोजना से डाउनलोड की गई थी

ज्ञान और संस्कृति तक पहुँचने का आपका प्रवेश द्वार। सभी के लिए सुलभ।

z-लाइब्रेरी.sk z-lib.gs z-lib.fm go-to-library.sk

आधिकारिक टेलीग्राम चैनल

जेड-एक्सेस

https://wikipedia.org/wiki/Z-लाइब्रेरी